75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

केंद्रीय विद्यालय संगठन

प्रेरणा

Purposive Pedagogical Practices

प्रेरणा

PURPOSIVE PEDAGOGICAL PRACTICES

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रेरणा

PEDAGOGICAL REINFORCEMENT BY READING NOBLE ANECDOTES

शिक्षकपर्व-2022 के उपलक्ष्य में प्रकाशित

ई-पुस्तक

संरक्षक:	निधि पाण्डे, आयुक्त, के.वि.सं.
मुख्य संपादक:	ना.रा. मुरली, संयुक्त आयुक्त (शै.)
सह संपादक:	बि.के. बेहेरा, उपायुक्त (शै.)
संपादकीय प्रभारी:	सचिन राठौर, सहायक संपादक
संपादकीय विमर्श:	मनीष कुमार त्रिपाठी, सहायक शिक्षा अधिकारी
रेखांकन:	पी.एस. मिश्र, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं 1 गुरूग्राम संध्या जायसवाल, टीजीटी (कला), के.वि. मानेसर श्रीप्रकाश श्रीवास्तव, टीजीटी (कला), के.वि. रोहतक शाहिद अली, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं. 2 फरीदाबाद निशा अग्रवाल, टीजीटी (कला), के.वि. सैनिक विहार बृजेश महतो, टीजीटी (कला), के.वि. जेएनयू प्रशांत यादव, टीजीटी (कला), के.वि. सलोह महनाज़, टीजीटी (कला), के.वि. तुग़लकाबाद सत प्रकाश, टीजीटी (कला), के.वि. संधोल विकाश कुमार, टीजीटी (कला), के.वि. बकलोह छावनी
पृष्ठ सज्जा:	3पी आउटलाइन्स

अजीता लोंग्जम, संयुक्त आयुक्त (प्रशा. 1) द्वारा केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए प्रकाशित

प्राक्कथन

शिक्षक क्या है? शब्दकोश में शिक्षक को एक 'शिक्षाविद्' के रूप में परिभाषित किया गया है, तो क्या शिक्षक को केवल निर्धारित पाठ तक ही सीमित रहना चाहिए अथवा सदैव विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन के लिए तत्पर रहना चाहिए? डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार "सच्चा शिक्षक वह होता है जो हमें स्वयं के लिए सोचना सिखाए"। इस विचार से यह सिद्ध होता है कि एक शिक्षक अपने आचरण और शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के जीवन को एक दिशा प्रदान करता है। शिक्षक विद्यार्थियों को पढ़ाते है, उन्हें अनुशासन सिखाते हैं, उन्हें प्रेरित करते हैं और उनका मार्गदर्शन करते हैं, जिससे विद्यार्थी अपने आस-पास की दुनिया को जानने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। अगर एक बार सीखने की ललक लग जाए तो वह सदैव विद्यार्थी को उन्नति के पथ पर आगे बढ़ने के लिए उसकी योग्यताओं और कौशल को अग्रसारित एवं विकसित करती है और ऐसा होने पर शिक्षा सदैव के लिए जीवन की आनंदमय गतिविधि बन जाती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में शिक्षा-क्षेत्र में उद्देश्यपूर्ण परिवर्तन लाने हेतु शिक्षकों की भूमिका पहचानते हुए उन्हें केंद्र में रखा गया है। इस सुधार प्रक्रिया में विद्यार्थी केंद्र बिंदु हैं, जो शिक्षक को कक्षा में अपनी शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित करते हैं। यह बच्चे के आरम्भिक वर्षों में उसमें सामाजिक-भावनात्मक सीख के साथ उनके समग्र विकास के लिए प्रेरित करती है। केंद्रीय विद्यालयों को अपनी पांच दशकों से अधिक की यात्रा में छात्रों को समग्र गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए जाना जाता है। केन्द्रीय विद्यालयों में शिक्षक कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में सुधार के लिए अनुशंसित शिक्षण विधियों के द्वारा शिक्षण प्रक्रिया करने के लिए अग्रसरित हैं। मेरे इस विश्वास को और अधिक बल तब मिला जब हाल ही में केंद्रीय विद्यालय, हिसार में छात्रों के साथ बातचीत के दौरान कक्षा 2 के एक छात्र ने मासूमियत से कहा कि उसे ऑफलाइन कक्षाओं में बहुत आनंद आता है क्योंकि उनके शिक्षक कक्षा में चीजों को अलग-अलग तरीके से समझाकर अध्यापन करवाते हैं।

यह संकलन विद्यालयों में पर्यवेक्षण के दौरान पर्यवेक्षण टीम द्वारा निरीक्षण या कक्षाओं के अनुवीक्षण के समय जो रोचक व अभिनव शैक्षणिक प्रथाएं देखी हैं, उन सबकों आप सभी के समक्ष एक दस्तावेज के रूप में लाने का प्रयास है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इस संकलन के द्वारा कक्षा को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया एवं उनके और छात्रों के मध्य नवाचार के साथ-साथ कक्षा में नवीनतम तरीकों का प्रयोग करके रुचिपूर्ण बनाने हेतु स्वतंत्रता प्रदान की गई है। इन प्रेक्षणों से केंद्रीय विद्यालय शिक्षकों का एक विस्तृत चित्रण उभर कर आया कि हमारे शिक्षक नवीनतम तरीकों के माध्यम से छात्रों के साथ जुड़ने में और नवीन चुनौतियों के अनुकूल अपने आप को ढालने में सक्षम हैं।

मैं उन सभी अधिकारियों को धन्यवाद देती हूँ जिन्होनें अपने अवलोकनों को प्रस्तुत किया है। मैं उन सभी कला शिक्षकों का भी आभार प्रकट करती हूँ जिन्होनें अपने कलात्मक रंगों से इस संकलन को रचनात्मक रूप प्रदान किया है। मुझे आशा है कि शैक्षणिक वर्ष 21-22 का यह प्रारम्भिक प्रयास अन्यों के लिए एक प्रेरणा के रूप मे कार्य करते हुए संगठन के लिए अच्छे कार्यों का एक संग्रह रहेगा।

निधि पाण्डे
आयुक्त

अनुक्रमणिका

अध्याय/शीर्षक/लेखक		पृष्ठ संख्या
01	के.वि.सं. के गुरुओं को नमन ना.रा. मुरली, संयुक्त आयुक्त (शै.)	10
02	अनुकरणीय शिक्षक जयदीप दास, संयुक्त आयुक्त (प्रशा. 2)	14
03	एक प्रेरणादायी शिक्षिका सुनीता दिवाकर, प्राचार्य, के.वि. ईएमई बड़ौदा	19
04	कला-एक बहुविषयक उपकरण जितेन्द्र कुमार दडोच, प्राचार्य, के.वि. विवि नगर	22
05	आप भविष्य बना रहे परवेज़ हुसैन, प्राचार्य, के.वि. सीआरपीएफ येलाहंका	26
06	एक अतुल्य शिक्षक डॉ. ऋतु पल्लवी, प्राचार्य, के.वि. क्रं. 3 भोपाल	31
07	एक समर्पित शिक्षक ए.के. पांडा, प्राचार्य, के.वि. विदिशा	35
08	एक तकनीक-प्रेमी शिक्षक लक्ष्मण सिंह, प्राचार्य, के.वि. रतलाम	39
09	सबको प्रेरणा देती शिक्षिका चित्रा मुकुंदन, प्राचार्य के.वि. मिनमबक्कम	42

अध्याय/शीर्षक/लेखक	पृष्ठ संख्या

10 **एक उत्कृष्ट और उत्साहित शिक्षक** 46
डॉली दास, प्राचार्य, के.वि. आईओसी नूनमाटी, गुवाहाटी

11 **जब शिक्षण ही जीवन शैली हो** 50
कंजा लोचन पाठक, के.वि. बारपेटा, गुवाहाटी

12 **शिक्षक की अनंतता** 54
कुसुमांजलि देवी, मुख्याध्यापिका, के.वि. वा.से.स्थल, बोरझार

13 **एक प्रेरक विज्ञान शिक्षक** 58
डॉ. वी. गौरी, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. हैदराबाद संभाग

14 **एक उत्कृष्ट शिक्षक** 62
शाहिदा परवीन, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. जबलपुर संभाग

15 **एक उत्साही संगीत शिक्षक** 66
एस.के. सोनी, प्राचार्य, के.वि. गढ़ा जबलपुर

16 **प्रतिभाशाली शिक्षक** 69
चित्रा बिदलान, प्राचार्य, के.वि. लालगढ़ जाटान

17 **एक बहुमुखी शिक्षक** 73
उम्मेद सिंह, प्राचार्य, के.वि. क्रं. 2 बीकानेर

18 **आनंदमयी शिक्षा** 76
प्रीति सक्सेना, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. लखनऊ संभाग

19 **भाषा शिक्षक की श्रेष्ठतम रचनात्मक शैली** 79
आर.एन. वडालकर, प्राचार्य, के.वि. आईआईटी कानपुर

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

अध्याय/शीर्षक/लेखक		पृष्ठ संख्या
20	एक कर्मठ शिक्षक की गाथा विनोद कुमार, उपायुक्त, के.वि.सं. रायपुर संभाग	84
21	जिनके लिए शिक्षा एक मिशन है अशोक कुमार मिश्रा, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. रायपुर संभाग	87
22	ममतामयी संत को नमन बिरजा मिश्रा, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. रायपुर संभाग	91
23	रचनात्मक प्रतिभा को नमन विकास गुप्ता, प्राचार्य, के.वि. जगदलपुर	95
24	उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्धता सुभाष चंदर, प्राचार्य, के.वि. से. 31 चंडीगढ़	99
25	पुस्तकों से बाइट्स तक बड़ी छलांग टी. रुक्मणी, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. चंडीगढ़ संभाग	103
26	एक विशिष्ट शिक्षक मीनाक्षी जैन, उपायुक्त, के.वि.सं. देहरादून संभाग	108
27	रसोई में रसायन शास्त्र शालिनी दीक्षित, प्राचार्य, के.वि. एएफएस मनौरी, प्रयागराज	110
28	मेरी संस्था के रत्न प्रेम कुमार, प्राचार्य, के.वि. बलिया	114
29	हेलो! बायोलॉजी सर बैरिस्टर पाण्डे, प्राचार्य, के.वि. 39 जीटीसी वाराणसी	118

अध्याय/शीर्षक/लेखक	पृष्ठ संख्या

30 **अतुलनीय अध्यापक** 122
विशाल खरे, प्राचार्य-प्रभारी, के.वि. आज़मगढ़

31 **शिक्षण के उद्दात्त रंग** 126
प्रदीप कुमार मिश्र, उप-प्राचार्य, के.वि. एएफएस, मनौरी

32 **सीखने सिखाने की भाषा में शिक्षण** 130
मनीष कुमार यादव, उप-प्राचार्य, के.वि. दी.द.उ. नगर

33 **बाल मन के संवेदनशील शिल्पकार** 134
ममता सिंह, प्राचार्य, के.वि. क्रं. 2, कृभको, सूरत

34 **नवाचार द्वारा रूपांतरण** 137
एस. वी. जोगलेकर, सहायक आयुक्त, के.वि.सं. तिनसुकिया संभाग

35 **अतुलनीय गुरूजनों के प्रति एक शिष्य के शब्द** 140
बि.के. बेहेरा, उपायुक्त (शै.), के.वि.सं. मुख्यालय

1

के.वि.सं. के गुरुओं को नमन

रेखांकन: पी.एस. मिश्र, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं 1 गुरूग्राम

लगभग 03 दशक पूर्व जब मैं एक शिक्षक बना तब मेरी सर्वप्रथम जिज्ञासा विद्यालय के सबसे प्रसिद्ध शिक्षकऔर उनकी प्रसिद्धि के क्या कारण थे, जानना था। इस संदर्भ में मुझे एक संस्मरण याद है कि जब एक बार मेरे एक सहयोगी से मेरी बातचीत हुई जिनका बेटा प्राथमिक कक्षा में पढ़ रहा था। बातचीत के दौरान मैंने उनसे एक प्रश्न पूछा कि “आपके बेटे के पसंदीदा शिक्षक कौन

हैं"? मैं श्रेष्ठ शिक्षकों की सूक्ष्म सूची में से किसी एक नाम की उम्मीद कर रहा था, जिसका मैंने अनुमान लगाया था। लेकिन मेरे लिए अत्यंत आश्चर्य की बात थी कि जब उन्होंने कहा कि उनके बेटे की पसंदीदा शिक्षिका श्रीमती एल थी। उन्होंने आगे कहा कि वह शायद स्कूल में सबसे अच्छी कहानीकार है और इसलिए वह उनके बेटे की ही नहीं, बल्कि पूरी कक्षा की पसंदीदा शिक्षिका हैं। उन्होंने आगे यह भी बताया कि वह पूर्व छात्रों की भी पसंदीदा शिक्षिका थी। आगे विस्तार से उन्होने यह भी बताया कि उन कहानियों का उनके पुत्र तथा अन्यों पर क्या प्रभाव पड़ा। तथापि मुझे यह बाद में पता चला कि विश्व में सबसे प्राचीन प्रारंभिक शिक्षण-शास्त्र संभवत: पंचतंत्र की कहानियां ही हैं। हमारे वेद और उपनिषद् भी बहुत सी कहानियों के द्वारा जटिल विचारों को आसानी से व्यक्त करने हेतु बोधगम्य हैं। (जैसे के.वि.सं. की प्रार्थना का प्रारंभिक भाग तैत्रीय उपनिषद् से लिया गया है, तथा इस उपनिषद् के नाम से जुड़ी एक रोचक कहानी भी हैं)।

दो दशकों से भी अधिक पूर्व घटित हुआ ऐसा ही एक और अन्य संस्मरण है जो इसी प्रकार की एक अन्य घटना को संदर्भित करता है। बात क्षेत्रीय कार्यालय में मेरे शुरुआती दिनों की है। पैनल निरीक्षण की समाप्ति के बाद, घर वापस जाने के लिए हम एक लोकल ट्रेन की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक बहुत वरिष्ठ प्राचार्य भी इस टीम के सदस्य थे। मुझे निरीक्षण बैठक के बाद उनकी एक कक्षा की याद आई जिसमे उनके द्वारा एक शिक्षक की सराहना की गई थी।

तब मैंने उनसे यह बताने के लिए कहा कि उस कक्षा में ऐसा क्या खास था। यह उन दिनो की बात है जब प्राथमिक शिक्षकों को 'गतिविधि आधारित शिक्षण- अधिगम' के अनुकूलित करने हेतु प्रशिक्षित किया जा रहा था। फिर उन्होने यह कहकर शुरूआत की कि पूर्वसर्गों को सिखाने के लिए ऐसी गतिविधि उन्होने पहले कभी नहीं देखी थी। अत्याधिक उत्साह के साथ उन्होंने अपना अनुभव वर्णित किया। भले ही आज उस बातचीत के बाद दो दशकों से अधिक बीत गए है,तथापि बहुत कुछ मुझे आज भी याद है। आइए उनके ही शब्दों में इसका वर्णन करने का प्रयास करते है:

"जैसे ही मैंने कक्षा में प्रवेश किया, तो कुछ को छोड़कर सभी फर्नीचर को दीवारों के किनारे लगाकर बीच में एक बड़ा घेराकार गोला खींचा हुआ था। उस घेरे के अंदर कुछ फ़र्नीचर ज़िग ज़ैग की तरह रखे गए थे। जब मैंने शिक्षक से अपनी कक्षा शुरू करने के लिए कहा, तो उसने कहा,

"बच्चों आज हम एक खेल खेलने जा रहे हैं"। उसने कुछ छात्रों को घेरे के अंदर जाने को कहा। आगे फिर उसने प्रत्येक छात्र को एक जानवर बनने को कहा। तत्पश्चात उसने खेल के नियम बताए जो आसान थे:- 1. छात्र बताए गए जानवरों की भूमिका निभाएंगे; 2. जब खेल आरम्भ करने का सिग्नल शुरू होगा, तब छात्र उन्हें दिए गए जानवरों के समान ही गतिविधि करने का प्रयास करेंगे और 3. खेल समाप्त करने का सिग्नल देने पर सभी छात्र आराम करेंगे। इसके बाद जो हुआ वह देखने लायक था।

जैसे ही उन्होंने सिग्नल स्टार्ट किया तो बच्चे संबंधित जानवरों की नकल करने लगे। पूरी क्लास ने इसका भरपूर आनंद लिया। कुछ मिनटों के बाद उन्होंने रुकने का संकेत किया तथा बच्चों से पूछा कि क्या उन्होंने इसका आनंद लिया और फिर यह सवाल पूछा कि अगर कोई देख नहीं सकता, तो उसकी मदद किस प्रकार की जाएगी ? जब छात्र इसका उत्तर नहीं दे सके, तो उन्होंने कहा कि क्या हम यह बता सकते हैं कि घेरे के अंदर क्या हो रहा है। उन्होंने फिर स्टार्ट सिग्नल किया और गतिविधियों का वर्णन करना शुरू किया जैसे कि 'बंदर बेंच पर कूदने की कोशिश कर रहा है, 'हाथी मेज के ऊपर चढ़ने में असमर्थ है' आदि-आदि। फिर कुछ मिनटों के बाद उन्होंने बच्चो को रुकने का संकेत दिया। इस बार उन्होंने छात्रों को बदल कर खेलने को कहा और कुछ समय तक खेलने दिया। ब्रेक के दौरान उन्होंने कथनों को याद किया और उन्हें ब्लैकबोर्ड पर लिखा। फिर उन्होंने पूर्वसर्गों की पहचान करते हुए रेखांकित किया और पूर्वसर्गों की अवधारणा की एक सरल व्याख्या वर्णित भी की।

लेकिन जब अगले कुछ राउंड खेले गए, तब जो छात्र स्वयंसेवक बने हुए थे,उन्हें वर्णन करने के लिए बुलाया गया, और जब कथन याद किए जा रहे थे तो बोर्ड पर केवल पूर्वसर्गों को लिख रही थी। इसके बाद जब खेल समाप्त हुआ तो छात्रों को अपनी-अपनी नोटबुक पर वर्णनात्मक कथन को याद करके उनमें से पाँच वाक्य लिखने को कहा। जब छात्र कथन लिख रहे थे, उन्होंने एक बार फिर समझाया कि पूर्वसर्ग क्या है तथा छात्रों से उनके द्वारा लिखे गए कथनों मे पूर्वसर्गों को रेखांकित करने के लिए कहा। ये सभी प्रक्रिया अवधि के पीरियड के 35 मिनट के भीतर ही की गई थी।"

कितने सुखद आश्चर्य की बात है कि जब प्राचार्य ने बताया कि जब उन्होंने कुछ कॉपियों की जाँच की तो उनमें से किसी भी कॉपी में एक गलती नहीं थी। तब निष्कर्ष यह निकला कि कक्षा कितनी कारगर थी! मुझे आज भी इस बात का अफ़सोस है कि मुझे उस कक्षा को देखने का अवसर नहीं मिला और ना ही मुझे

उस शिक्षक का नाम याद है (यह मेरी गलती है)।

स्मृतियों के इसी संस्मरण में एक दशक से भी अधिक समय पूर्व की बात है, जब मैं गुवाहाटी के एक के.वि. के पैनल निरीक्षण के लिए जा रहा था। इस बार पुन: निरीक्षण के उपरांत होने वाली बैठक में एक प्राचार्य (पैनल के सदस्य) ने एक प्राथमिक शिक्षक की बहुत प्रफुल्लित होते प्रशंसा की। बैठक समाप्ति के बाद मैंने प्राचार्य से पूछा कि उस कक्षा में ऐसा क्या खास था जिसका वर्णन वे अपने भाषण में कर रहे थे। तब प्राचार्य ने कहा कि वह शिक्षिका जो शर्मीली और अंतर्मुखी सी दिख रही थी, वास्तव में एक जादुई व्यक्तित्व की निकली। जब उन्होने कक्षा-2 में कार्य शिक्षण आरंभ की, तो वास्तव में वे कक्षा में छात्रों को कविता गाना सिखा रही थी।

इस बार मैंने न केवल उस कक्षा को देखने का अपितु एक कला शिक्षक की मदद से जो वास्तव में सीखने के लिए समान रूप से उत्सुक था पाठ को रिकॉर्ड करने का फैसला लिया और वाकई क्या नजारा था। वास्तव में शर्मीली सी अंतर्मुखी दिखने वाली शिक्षिका गायन आरंभ करने के बाद जादुई कलाकार के रूप में बदल गई थी। उनकी रिकॉर्डिंग इस लिंक पर उपलब्ध है :
https://www.youtube.com/watch?v=qgc325GoJBg&t=87s

इस वीडियो में जो उल्लेखनीय है, वह कविता को स्थानीयकृत करने में शिक्षिका का नवाचार था। पश्चिमी संगीत वाद्ययंत्रों के साथ उनके द्वारा उत्पन्न ध्वनि को तुकबंदी रूप में संदर्भित किया गया था, लेकिन शिक्षिका द्वारा इसे परिष्कृत कर भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों में अनुकूलित किया गया हैं जिनसे कक्षा-2 के छात्र परिचित हैं। ये मेरे अपने कुछ उदाहरण हैं, जिनको मैंने अपने व्यक्तिगत अनुभवों से प्रस्तुत किया है। लेकिन के.वि.सं. का यह सौभाग्य है कि उसके पास ऐसे शिक्षकों का अद्भुत संग्रह है जिन्होंने अपनी क्षमता और प्रतिबद्धता के साथ राष्ट्र निर्माण के इस उद्देश्य के लिए अपने आप को समर्पित किया है। मैं आशा करता हूं कि ऐसी कहानियां हर किसी को प्रेरित करते हुए उद्देश्यपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास के साथ हमें आत्मविश्वास देंगी ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में सूचीबद्ध विचारों/सिफारिशों/सुझावों को सफलतापूर्वक लागू कर सकें।

ना.रा. मुरली

संयुक्त आयुक्त (शै.)

अनुकरणीय शिक्षक

2

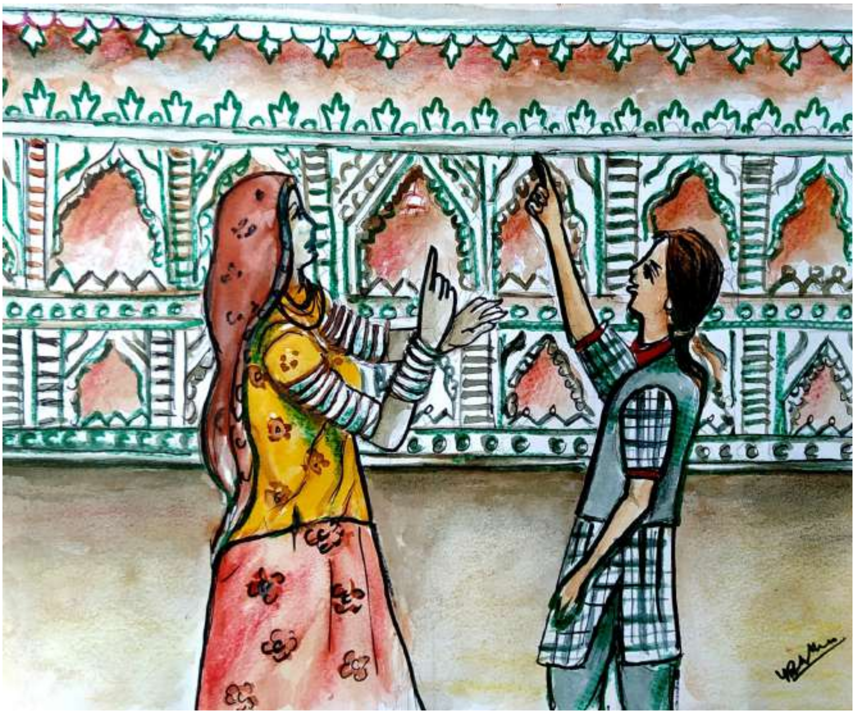

रेखांकन: पी.एस. मिश्र, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं 1 गुरूग्राम

मैंने लगभग 12 वर्षों तक स्कूलों में विज्ञान पढ़ाया है। हमारे सामाजिक परिवेश में विषयों का एक पदानुक्रम है जो बड़े पैमाने पर बाजार संचालित है। वाणिज्य और मानविकी संकायों के साथ विज्ञान शीर्ष पर है। कला, संगीत, खेल जैसे विषयों का उल्लेख कम ही मिलता है। श्रेष्ठता की यह झूठी धारणा हमारे समाज में बहुत आम है और मेरे मस्तिष्क से भी इस धारणा को समाप्त

होने में कुछ समय लगा। समय बीतने के साथ मैंने यह अनुभव किया कि प्रत्येक विषय में किसी बच्चे या बच्चों के समूह के लिए सर्वश्रेष्ठ होने की क्षमता है। एक प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों में विषय के प्रति प्रेम पैदा कर सकता है। बाद के जीवन में मेरी पेशेवर प्रतिबद्धताओं के कारण मुझे कई विद्यालयों का दौरा करने और सैकड़ों शिक्षकों और विद्यार्थियों के साथ बातचीत करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान मैं कई अनुकरणीय और समर्पित शिक्षकों से मिला। तथापि इस लेख की निर्धारित सीमा और प्रारूप के कारण मैं दो उत्कृष्ट शिक्षकों के बारे में अपने विचार साझा कर रहा हूं जिन्होंने मुझे विद्यार्थियों से जुड़ने और उन्हें प्रेरित करने की अपनी क्षमता से चकित कर दिया।

अपने वर्ष 2015 से 2018 के कार्यकाल के दौरान मैं जयपुर में एक कला शिक्षक से मिला। वह बहुत ही शर्मीले परंतु बहुत मेहनती है। मेरा उनसे प्रथम परिचय और बातचीत के.वि. क्र.-1, जयपुर के सेमिनार हॉल में हुई जहां उन्होंने अपने विद्यार्थियों के साथ ड्राइंग और पेंटिंग का प्रदर्शन किया। जल्द ही मुझे एहसास हुआ कि विद्यार्थियों के बीच उनकी बहुत अच्छी प्रतिष्ठा है। सामान्यत: एक कला शिक्षक का दायित्व कक्षा VIII तक के विद्यार्थियों को पढ़ाना माना जाता है। लेकिन मैंने पाया कि 11वीं एवं 12वीं कक्षा के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में उनकी कक्षा में आते हैं और उनसे कलाकृति सीखते रहते हैं। उनकी कक्षा का अवलोकन करते समय यह देखा गया है कि वे विद्यार्थियों को चित्रकला के माध्यम के साथ-साथ उससे जुड़ी तकनीक और विधियों को चुनने की बहुत अधिक स्वतंत्रता प्रदान करते हैं। रचनात्मक इनपुट के लिए चुनने की यह स्वतंत्रता बहुत महत्वपूर्ण है जो उन्हें आसानी से नहीं मिलती है।

उनके शिक्षाशास्त्र को तीन शब्दों में संक्षेपित किया जा सकता है- 'कल्पना, सोच और प्रोत्साहन'। अपनी बात को विस्तार देने के लिए मैं चाहूंगा कि आप कक्षा VI के एक विद्यार्थी द्वारा रचित सूखे पेड़ के चित्र पर एक नज़र डालें। विद्यार्थी ने कागज के एक टुकड़े पर स्याही की एक या दो बूंदों की मदद से और धीरे से धैर्य के साथ से उड़ाते हुए और कैनवास को थोड़ा झुकाकर कला का एक सुंदर नमूना बनाया जो बहुत आकर्षक है। यह कल्पना और सोचने की शक्ति के अलावा और कुछ नहीं है जो उस कौशल से जुड़ा है जिसे विद्यार्थी अपने शिक्षक से अभ्यास और गंभीरता के साथ धीरे-धीरे सीखते हैं।

कला शिक्षा के प्रति उनके बहुविध तरीकों ने मुझे आकर्षित किया। स्थानीय परिवेश से जुड़ने और कला कार्यों के क्षेत्रों की पहचान करने की उनकी क्षमता प्रशंसनीय है। केन्द्रीय विद्यालय, जैसलमेर में कार्य करते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को जैसलमेर की भील कला पर परियोजनाओं को शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया। विद्यार्थियों ने इसे राष्ट्रीय कला उत्सव - 2016 में प्रस्तुत किया, जिसे व्यापक रूप से बहुत सराहा गया।

विद्यार्थी बड़ी दिलचस्पी के साथ सुलेख तकनीक सीखने में गहरी रुचि लेते हैं। वे विद्यार्थियों को मास्क निर्माण और प्राकृतिक जैविक रंगों से पेंटिंग बनाना सीखाते हैं। वे अक्सर विद्यार्थियों `की कलाकृति को प्रदर्शित करने के लिए कला प्रदर्शनी का आयोजन करते रहते हैं जो राजस्थान में बहुत लोकप्रिय हैं। एक शिक्षक की सबसे बड़ी उपलब्धि विद्यार्थियों के; दिल और मस्तिष्क में विषय के प्रति प्रेम पैदा करना होता है। एक बार मैंने उनसे उनकी उपलब्धियों के बारे में पूछा - उन्होंने तुरंत कहा कि 11 वीं और 12 वीं कक्षा के विद्यार्थी बड़ी संख्या में मेरे पास कला कार्य में अपना अभ्यास जारी रखने के लिए आते हैं जो मेरे लिए बहुत संतोषजनक है; विशेषत: तब जबकि कला उनके लिए अनिवार्य विषय नहीं है और न ही उनकी परीक्षा का हिस्सा है। उनके बहुत से विद्यार्थियों ने ललित कला को अपने कैरियर के रूप में अपनाया है। उन्होंने कई मेधावी विद्यार्थियों का भी नाम लिया जो इंजीनियरिंग और ऐसे अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का विकल्प चुन सकते थे किन्तु उन्होंने ललित कला में पांच साल का एकीकृत पाठ्यक्रम किया। उन्होंने अपने कई विद्यार्थियों के कार्यों को साझा किया जो कि वर्तमान में इंजीनियर और प्रबंधन सलाहकार या डॉक्टर हैं और बहुत प्रतिष्ठित संगठनों में कार्यरत हैं किन्तु वे अभी भी शौकिया तौर पर पेंटिंग करते हैं और इतने वर्षों के बाद भी व्हाट्सएप और सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें अपनी कला कृतियाँ प्रेषित करते रहते हैं।

वह स्वयं उत्कृष्ट कलाकार हैं और उन्होंने अपनी कलाकृति को प्रदर्शित करने के लिए कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया है। उनके चारकोल चित्र अद्भुत हैं।

जल रंग में उनकी लैंडस्केप पेंटिंग विभिन्न प्रदर्शनियों में मुख्य आकर्षण रही है। वह संगठन के लिए एक संपत्ति है। यदि कभी आपका के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, जयपुर जाना हो तो आप क्षेत्रीय

कार्यालय की दीवारों पर उनके कुछ बेहतरीन चित्रों और पेंटिंग को देख सकते हैं। उनकी सेवा के अभी काफी वर्ष शेष हैं और मुझे आशा है कि वे अपनी अदम्य भावना के साथ भविष्य में भी छात्रों का इसी उत्साह और समर्पण के साथ मार्गदर्शन करते रहेंगे।

अब मैं एक उल्लेखनीय प्राथमिक शिक्षक के बारे में बताना चाहता हूँ जिसकी छात्र स्तर तक पहुँचने की क्षमता काबिले तारीफ है।

वह एक अनुभवी प्राथमिक शिक्षिका हैं, जिन्होंने विभिन्न स्कूल प्रणालियों में लगभग 28 वर्षों की सेवा की है। मैंने विद्यालय के पर्यवेक्षण के उद्देश्य से कुछ प्राचार्यों के साथ नवंबर, 2019 में उनके विद्यालय का दौरा किया। मैं एक अच्छी कक्षा देखने के लिए बहुत उत्सुक था। सामान्यत: यदि आप प्राथमिक कक्षाओं के गलियारों में जाते हैं, तो सबसे अधिक बार लिखा जाने वाला शब्द है – चुप रहो... शान्त ... बातें मत करो...आदि। शिक्षक सचमुच कक्षा को नियंत्रित करने के लिए संघर्ष करते हैं और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि वे इसमें असफल रहते हैं और यदि विद्यार्थी चुप हो भी जाते हैं तो यह अधिगम के लिए अनुकूल नहीं है और कम से कम यह हर्षित और बाल केंद्रित नहीं है जो एक अच्छी प्राथमिक कक्षा के लिए एक पूर्वापेक्षा है।

मैंने एक कक्षा में प्रवेश किया जहाँ बाहर से कुछ शोर सुना जा सकता था किन्तु विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच बहुत व्यवस्थित बातचीत हो रही थी। यह कक्षा 5 थी और वह अंग्रेजी पाठ्यपुस्तक 'फ्लाइंग टुगेदर' से एक कहानी सुना रही थी। यह पंचतंत्र से ली गई एक कहानी है। यह कहानी जंगली हंस के झुंड के बारे में है जो घने जंगल के अंदर बहुत ऊंचे और मजबूत पेड़ में रहता था। कहानी में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है कि विलंब और आलस्य के कारण पक्षी वृद्ध बुद्धिमान पक्षी की सलाह पर कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। बाद में इन पक्षियों को शिकारी ने जाल में फँसा लिया लेकिन आखिर में उन्होंने वृद्ध बुद्धिमान पक्षी की सलाह पर ध्यान देकर समस्या को दूर कर दिया। इस प्रकार वे अपनी जान बचा सके। सबसे दिलचस्प हिस्सा चर्चा की वह अवधि रही जो वह विद्यार्थियों के साथ कर सकी। छात्र बहुत मुखर थे और अपने विचारों को खुलकर व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने छात्रों से यह पूछकर काफी दिलचस्प किस्से पर चर्चा की कि हम मरने का नाटक कैसे कर सकते हैं क्योंकि कहानी में इसका एक संदर्भ था। पूरी कक्षा एक पल के लिए बेदम

और खामोश हो गई और फिर ढेर सारे हल्ला-गुल्ला के साथ ऊर्जा का संचार हुआ। वह भूमिका निभाने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करने के अवसर का उपयोग करने के लिए बहुत निपुण थी और विद्यार्थियों को अपने स्वयं के संवाद तैयार करने के लिए प्रेरित करती थी। उन्होने इसे जीवंत बनाने के लिए अपनी कक्षा में टंग ट्विस्टर्स और पहेलियों का भी इस्तेमाल किया। कहा जाता है कि शिक्षा का नौवां-दसवां हिस्सा प्रोत्साहन है। वह एक उत्कृष्ट प्रेरक है और विभिन्न गतिविधियों में दस में से नौ को कैसे शामिल किया जाता है वे भली भांति जानती है।

प्राय: हम संचारी अंग्रेजी में सुधार करने के लिए इस उद्देश्य हेतु एक समर्पित शिक्षकके साथ अलग अवधि आवंटित करने पर जोर देते हैं - लेकिन यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जहां भी कक्षा में समूह वार्तालाप होती है और विद्यार्थियों को वास्तव में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है तो यह संचार कौशल में सुधार करने में मदद करता है। यह प्राकृतिक तरीका है। वह कहती हैं कि "मैंने हमेशा विद्यार्थियों की सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित किया है क्योंकि यह उन छात्रों को मंच प्रदान करता है जो गतिविधियों में भाग लेने में शर्माते हैं और बहुत अंतर्मुखी होते हैं।" आनंद के लिए पढ़ना और विद्यार्थियों के साथ जोर से पढ़ना एक नियमित गतिविधि रही है जिसे उन्होंने छात्रों के साथ किया है और इसके परिणामस्वरूप उन्हें सफलता भी मिली है, क्योंकि अधिकांश विद्यार्थी बहुत अच्छे पाठक हैं और उनकी समझ का स्तर भी काफी संतोषजनक है। वह पूरक पठन के लिए कक्षा पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग करती है। वह प्राथमिक शाखा की भी प्रभारी हैं और प्राथमिक विंग को और मजबूत करने के लिए कार्यशाला आयोजित करती रहती हैं।

उनके प्राचार्य कहते हैं - "उनका उत्साह और समर्पण हम सभी को प्रेरित करता है।" ऐसे शिक्षक आदर्श और अनुकरणीय होते हैं।

जयदीप दास

संयुक्त आयुक्त (प्रशा. 2)

एक प्रेरणादायी शिक्षिका

3

रेखांकन: पी.एस. मिश्र, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं 1 गुरूग्राम

मुझे अपने विद्यालय के एक उत्साही, सक्षम और जीवंत शिक्षक के बारे में अपने विचार लिखने में बहुत खुशी हो रही है। अपने छात्रों के समग्र विकास में योगदान करने के लिए 'अपने शिक्षार्थी को जानें' उनकी कुंजी है। वह एक सक्रिय श्रोता हैं, बोलने से पहले सोचती हैं, एक उत्साही पाठिका और आत्मविश्वासी लेखिका हैं जो शिक्षार्थियों के समूह में प्रभावी ढंग से ज्ञान प्रदान करती हैं।

वह सीखने के परिणामों के साथ अपनी पाठ योजना बनाती है और उन्हें क्रियान्वित करती है जो न केवल शिक्षार्थियों को परीक्षाओं में अच्छा स्कोर करने जैसे अल्पकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है, बल्कि अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए दीर्घकालिक प्रक्रिया के पालन कार्य के लिए उत्साहित करती है उनका चुंबकीय व्यक्तित्व पाठ्यक्रम उनका चुंबकीय व्यक्तित्व पाठ्यक्रम के पाठों को जीवन के पाठों से जोड़ता है। प्रश्न करना वास्तव में शिक्षण का एक हिस्सा है, लेकिन मैंने उन्हें शिक्षार्थियों को प्रश्न करने के लिए प्रेरित करते हुए और उन्हें उच्च कोटि की सोच की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए सक्षम करते हुए देखा है, जिसके परिणामस्वरूप उनमें संज्ञानात्मक, आलोचनात्मक और रचनात्मक कौशल का विकास होता है। एक सूत्रधार के रूप में, वह टीम वर्क और पीयर लर्निंग को प्रोत्साहित करने वाली समूह गतिविधियों को प्रदान करती है। उनके समृद्ध पारस्परिक शिक्षण सत्र उन्हें प्रेरित करते हैं। अपने अंतःविषय दृष्टिकोण के साथ, वह शिक्षार्थियों को पाठ्यपुस्तक से परे ले जाती है जो वे जानते हैं कि अज्ञात क्या है, अन्य विषयों को सहयोग करते हुए और अपने पाठों के साथ एकीकृत करते हैं। उनकी कोई भी कक्षा ऐसी नहीं है जिसमें वह अपने छात्रों का आकलन नहीं करती है।

वह आभासी माध्यम मीट में शिक्षार्थियों से अपनी कक्षा के लिए तत्काल चैट बॉक्स विशेषण के लिए वास्तविक कक्षाओं में मौखिक इनपुट के माध्यम से सार्थक प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करती है। सहकर्मियों और छात्रों की हर राय, विचार, सुझाव और आलोचना उनके लिए मूल्यवान है। अपने माता-पिता के साथ लगातार संपर्क में रहना और शिक्षार्थियों की प्रगति के बारे में चिंतित होना उन्हें एक उज्ज्वल भविष्य के लिए ढाल रहा है, जो मैंने उनमें देखा है। वह एक निष्पक्ष परामर्शदाता और एक स्नेही मार्गदर्शक है और इस विशेषता के कारण, वे उस पर विश्वास करते हैं। वह अपने अंग्रेजी पाठों में व्यावसायिक मार्गदर्शन को भी शामिल करती है ताकि उन्हें करियर विकल्पों की आकाशगंगा से अवगत कराया जा सके। वह विभिन्न वेबिनार के माध्यम से अपडेट रहती है और फ़्लिप्ड क्लासरूम और मिश्रित शिक्षण को आकर्षक बनाने के लिए अपने शिक्षण में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को एकीकृत करने के लिए उत्कृष्ट तरीकों का उपयोग करती है। वह अपनी शिक्षण पद्धतियों के साथ प्रयोग करती है और अब महामारी के बाद; वह अपने शिक्षार्थियों की सीखने की भावना को बनाए रखने और उन्हें सर्वोत्तम सीखने का अनुभव देने के लिए क्विज़ के अलावा हर उपलब्ध ऑनलाइन टूल जैसे गेमिफिकेशन और पज़ल्स बनाने में ध्यान रखती है।

वह एक ऐसी व्यक्ति है जो कहानी सुनाने, वास्तविक जीवन के अनुभवों को बताने, पॉडकास्ट करने और शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में खुद को प्रदर्शित करने के माध्यम से व्यक्तिगत सामाजिक गुणों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती है। शिक्षार्थियों को ऐसे प्रश्नों से प्रेरित किया जाता है जो उन्हें अपने अनुभवों को देखने, तलाशने और यहां तक कि शोध करने के लिए प्रेरित करते हैं जिसके परिणामस्वरूप अनुभवात्मक अधिगम होता है। यह शिक्षार्थियों को मौखिक या लिखित रूप में निडर होकर अपने अनुभव साझा करने के लिए प्रोत्साहित करने के माध्यम से भी किया जाता है। प्रत्येक शिक्षार्थी में स्वयं में विश्वास पैदा होता है क्योंकि प्रत्येक बच्चा अद्वितीय होता है और उसमें प्रतिभा होती है। वह हास्य और बुद्धि की अच्छी समझ रखती है और अपने छात्रों के साथ हंसती है जो कि महामारी जैसी तनावपूर्ण परिस्थितियों के बीच छात्रों की भावना को ऊपर उठाने के लिए समय की आवश्यकता है। वह शिक्षार्थियों को पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती है जिससे हर स्तर पर मदद और मार्गदर्शन का आश्वासन मिलता है जिसके परिणामस्वरूप उनके जीवन कौशल का विकास होता है। वह एक अनुकरणीय शिक्षिका हैं जो अपने रास्ते में आने वाले हर कार्यक्रम और अवसर में भाग लेती हैं।

वह अपने शिक्षार्थियों के लिए शिक्षण सीखने की प्रक्रिया को सुखद बनाती है जो बदले में उसके अंतहीन प्रयासों के लिए उससे प्यार और सम्मान करते हैं। छात्रों के साथ उनकी भागीदारी को देखकर मुझे एक शार्पनर की याद आती है जो धैर्य और समय के साथ प्रत्येक पेंसिल (छात्र) को सावधानी पूर्वक तेज करने का प्रयास करता है। भाग्यशाली वे हैं जिनके पास उन्हें तराशने के लिए ऐसा शिक्षकहै और के.वि.स. भविष्य के नागरिकों को जीवन के लिए तैयार करने के लिए उनका ऋणी है। इस शिक्षक दिवस पर, मैं उन्हें शिक्षक दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। ईश्वर उन्हें इस नेक पेशे में अपनी यात्रा जारी रखने के लिए अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करें और अपने भविष्य के सभी प्रयासों में सफलता प्रदान करें!

सुनीता दिवाकर
प्राचार्य,
के.वि. ईएमई बड़ौदा

4

कला-एक बहुविषयक उपकरण

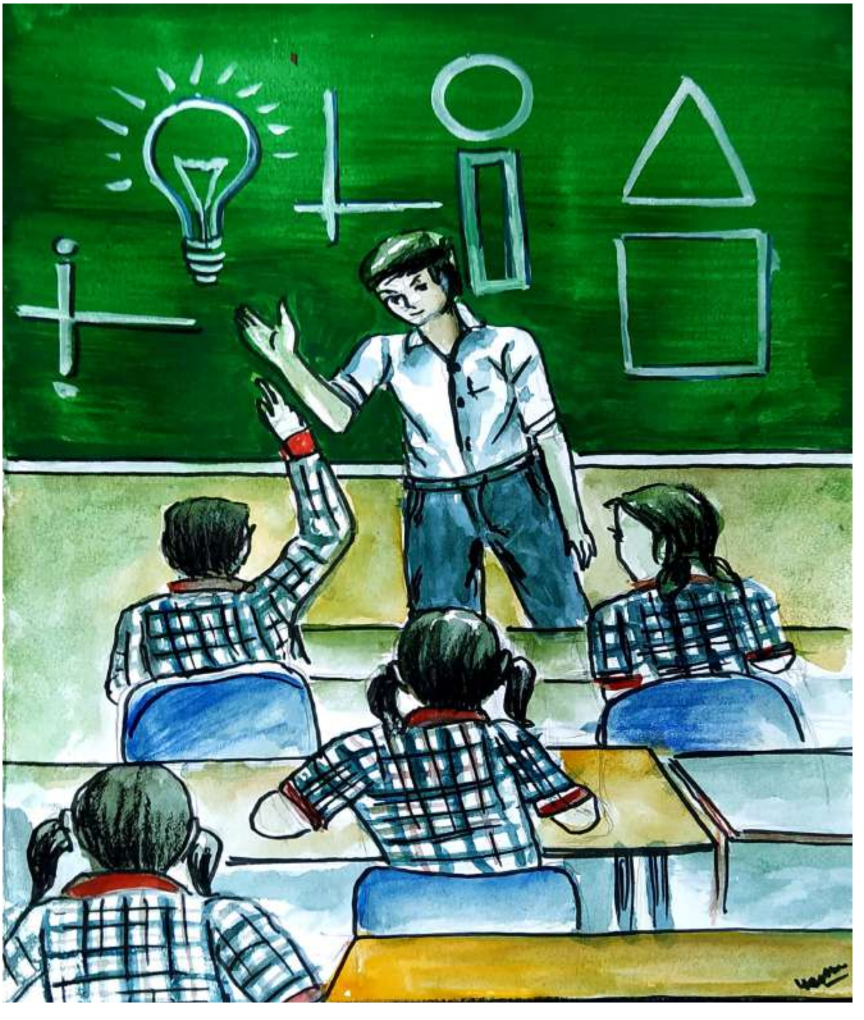

रेखांकन: पी.एस. मिश्र, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं 1 गुरूग्राम

मैं आपको एक ऐसे शिक्षक के बारे में बताता हूँ जो कला और ड्राइंग के लिए विद्यार्थियों के बीच एक चिरस्थायी सौंदर्य बोध और सकारात्मक दृष्टिकोण पैदा करने में बहुत ही कुशल है। विद्यार्थियों को कला और ड्राइंग के कौशल सीखने और कला और ड्राइंग कक्षाओं के दौरान उन्हें लागू करने, अन्य विषयों के लिए प्रोजेक्ट और असाइनमेंट तैयार करने और कई अन्य अवसरों जैसे विद्यालय को सजाने के लिए और जब कोई समारोह, सांस्कृतिक गतिविधियां आदि होती हैं, तो उन्हें खुशी होती है।

उन्होंने विद्यार्थियों के बीच कला के प्रति लगाव पैदा करने की चुनौती को स्वीकार किया है और विद्यार्थियों की एक पीढ़ी को विभिन्न प्रकार की कला और ड्राइंग जैसे पेंसिल ड्राइंग, चाक में रचनात्मक अभिव्यक्ति का उपहार देने के लिए खुद को इसमें समाहित कर दिया है। वह हमेशा मोटर कौशल, पेंट ब्रश में महारत हासिल करने या क्रेयॉन और पेंसिल का उपयोग करने जैसी सरल चीजों में सुधार करने की कोशिश करता है।

उनकें विद्यार्थी अपनी कक्षाओं, विद्यालय भवन और परिसर को सजाने में गहरी रुचि लेते हैं। उनके विद्यार्थियों की कलाकारियों से दर्शक मोहित हो जाते हैं। सजावट एक जगह से दूसरी जगह के लिए पूरी तरह से अलग है, सजावट की जगह यानी कक्षाओं, इमारत की दीवारों के लिए उपयुक्त है। उनकी कलाकृतियों को स्कूल के चारों ओर प्रमुखता से प्रदर्शित किया जाता है जो कला के महत्व को बताती है। उनकी हर ड्राइंग इतनी सजीव हैं कि वह छात्रों के मन पर प्रभाव छोड़ जाती है। यहां तक कि माता-पिता और आगंतुक भी विद्यालय परिसर में प्रदर्शित उनकी कलाकृति के संदेश को पढ़ते और समझते हैं। उनकी कक्षाओं के दौरान, विद्यार्थी विभिन्न विषयों के साथ आते हैं और अपनी कल्पना और रचनात्मकता का उपयोग करके कला के रूप में अपने विषयों को प्रतिबिंबित करते हैं। वह छात्रों की कलाकृतियों के विषय, कल्पना और रचनात्मकता के पीछे हमेशा मार्गदर्शक बनकर खड़े रहते हैं।

वह हमेशा विद्यार्थियों को कला सीखने में सक्रिय भागीदार बनाने में लगे रहते हैं। उनकी कक्षाओं के दौरान, विद्यार्थियों को सदैव इस तरह से प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाता है ताकि विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति वैश्विक और प्रेरक बनें, जो विशिष्ट संदेशों को लेकर विभिन्न विषयों पर आधारित

हो और युवा दिमाग रचनात्मकता और कल्पना के लिए खुला रहे है।

छात्र उनकी कला का आनंद लेते हैं और उनसे सीखना पसंद करते हैं। वह अपने कलात्मक प्रयासों को बढ़ाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते हैं, कला सीखने के लिए उपयोगी आदतें और दृष्टिकोण का विकास करते हैं। छात्र उनकी कला के समृद्ध संदर्भों से प्रेरणा पाते हैं। उन्होंने ड्राइंग और पेंटिंग के क्षेत्र में छात्रों के बीच रचनात्मकता और नवीनता पैदा की है और अपने शिक्षण को बच्चों के लिए एक सुखद अनुभव बनाया है। उनकी कला छात्रों को उनके कार्यों में अर्थ तलाशने के लिए प्रोत्साहित करती है। उन्होंने अपनी कक्षाओं को एक कला स्टूडियो में बदल दिया है, जिसमें छात्रों की कला परियोजनाओं को गहराई से प्रदर्शित किया गया है। वह अनगिनत घंटे छात्रों के काम को प्रदर्शित करने में लगाते हैं। उन्होंने कक्षा में जो संभव माना जाता है उसका विस्तार किया है और छात्रों को विभिन्न दृष्टिकोणों तक पहुंच प्रदान की है, सामग्री और तकनीक की तुलना में कला को अधिक समझने पर ध्यान केंद्रित किया है। वह हमेशा चाहते हैं कि उनके छात्र कला कक्ष में मनोरंजक पाठों के साथ तल्लीन हो। उनकी कक्षाओं में छात्रों के बीच "कर सकते हैं" का एक दृष्टिकोण विकसित किया जाता है। वे किसी भी कला परियोजना को एक चुनौती के रूप में लेते हैं और इसे करते समय अपने दिल और आत्मा में बसा देते हैं।

उनकी निर्देशित कलात्मक अंतर्दृष्टि की मदद से छात्रों ने गणित और विज्ञान के साथ-साथ साहित्यिक क्षेत्र में अकादमिक प्रदर्शन में सुधार किया है। विज्ञान और गणित में एक साधारण पेंसिल से गतिविधियों की कल्पना पाठ्यपुस्तकों की तुलना में कहीं अधिक विशद, स्पष्ट और आकर्षक लगती है। ऐसा करने से ऐसा लगता है, जैसे उन्होंने बेहतर ढंग से सीखा और समझा है जो उनकी अपेक्षा के अनुरूप है।

अंग्रेजी, हिंदी और संस्कृत जैसी भाषाओं में छात्रों द्वारा तैयार किए गए प्रोजेक्ट और असाइनमेंट कला और रेखाचित्रों के साथ मिश्रित पाए गए हैं, जो अच्छी तरह से बताता है कि भाषा की वस्तुओं को वे गहराई से समझते हैं। विद्यालय के छात्र मुख्य विषयों में कला आधारित परियोजनाओं में बहुत सफल रहे हैं। पाठ्यपुस्तक का चित्रांकन, कला और संवादों की मदद से छात्रों द्वारा पाठों ने उन्हें पाठों के पीछे के विषय, संदेश और विचारों को समझने में मदद की है।

छात्र कई अवसरों पर अपनी कला और ड्राइंग कौशल को प्रदर्शित करने में बहुत उत्सुक और उत्साही पाए जाते हैं, क्योंकि हर साल कई छात्रों को विभिन्न स्तरों पर आयोजित ड्राइंग और पेंटिंग प्रतियोगिताओं में पुरस्कार मिलते हैं। उन्होंने स्वयं अपने क्षेत्र में कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त किए।

संक्षेप में, वे विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्रों की सफलता के पीछे एक मार्गदर्शक शक्ति साबित हुए हैं। जिस तरह से छात्र अपनी विज्ञान और गणित की गतिविधियों को लेते हैं, जिस तरह से वे अपनी भाषाओं और अन्य परियोजनाओं को लेते हैं, ऐसा लगता है जैसे वह मुख्य विषय के शिक्षकों को शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोण की अवधारणा को अनुकूलित करने में मदद करता है। विभिन्न विद्यालय समारोहों के दौरान उनका योगदान सराहनीय रहा है। वह एक मूक कार्यकर्ता और जमीन से जुड़े व्यक्तित्व हैं। वह छात्रों, माता-पिता और अपने सहयोगियों के बीच उच्च सम्मान रखते हैं। यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि वह केन्द्रीय विद्यालय संगठन, एक प्रतिष्ठित संगठन के लिए एक अमूल्य धरोहर हैं।

जितेन्द्र कुमार दडोच
प्राचार्य,
के.वि. विवि नगर

5

आप भविष्य बना रहे

रेखांकन: संध्या जायसवाल, टीजीटी (कला), के.वि. मानेसरसंध्या जायसवाल, टीजीटी (कला), के.वि. मानेसर

एक शिक्षक अंधेरे में एक प्रकाश स्तंभ और एक आशा है जो छात्रों को साहस और जीवन जीने की शक्ति देता है। सभी प्रकार के अज्ञान को दूर कर ज्ञान के प्रकाश से उनके हृदय को जगाने वाले अपने शिक्षकों के बहुमूल्य योगदान को विद्यार्थी कभी भी चुका नहीं सकते हैं। शिक्षक छात्रों के लिए प्रेरणा के स्रोत होते हैं जो उन्हें आगे बढ़ने और सफल होने में मदद करते हैं।

शिक्षक किसी भी शैक्षणिक संस्थान की रीढ़ की हड्डी होते हैं और हमेशा छात्रों के जीवन और करियर को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

जैसा कि हमने COVID-19 महामारी के दौरान शिक्षण के ऑनलाइन तरीके को अपनाया, हमारे शिक्षकों ने अपने छात्रों के साथ जुड़ने के लिए कई नए तरीकों का प्रयास किया।

हालांकि के.वि. सी.आर.पी.एफ येलहंका की शिक्षण बिरादरी अनुकरणीय है, मैं अपनी कुछ टिप्पणियों को यहाँ दर्ज करना चाहूँगा।

मैं प्राथमिक वर्ग से शुरू करता हूँ। ऑनलाइन क्लास के दौरान छात्रों को व्यस्त रखना खासकर प्राइमरी सेक्शन में एक बड़ी चुनौती है। एक प्राथमिक शिक्षक ने इस मुद्दे को हल करने का प्रयास किया। उन्होंने रंगीन पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन का इस्तेमाल किया। उनके पी.पी.टी के फॉन्ट हमेशा बड़े और बोल्ड होते हैं। वे अधिक आकर्षक सामग्री बनाती थीं जो बच्चे का ध्यान आकर्षित करती थी। उनके पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन में एनिमेशन का उपयोग बच्चों को व्यस्त रखता है और यह दिलचस्प बातचीत को भी सुविधाजनक बनाता है। मैंने यह भी देखा है कि वे कक्षा में कुछ अनुभवात्मक अधिगम का संचालन कैसे करती हैं। चूंकि बच्चे घर पर हैं, इसलिए उनके पास कई प्रकार की सामग्री उपलब्ध होती है। वे उसी का फायदा उठाती हैं और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए उन्हें परफॉर्म करती हैं। माता-पिता ने भी इस तरह के अनुभवात्मक अधिगम के बारे में बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने संदेश दिया है कि बच्चे ऐसी गतिविधियों का आनंद लेते हैं और अवधारणाओं को बेहतर ढंग से बनाए रखने में सक्षम होते हैं। इनके अलावा, वे वेबसाइटों से लाइव वर्कशीट जैसे टूल का भी उपयोग करती हैं। उन्होंने Testmoz.com और QuIzlet.com के जरिए कक्षा में एक नया आयाम जोड़ा है। बच्चे पेंसिल-और-कागज पद्धति के अलावा अन्य विधियों के माध्यम से अपने कौशल का परीक्षण करने में सक्षम होते हैं जो आमतौर पर कक्षाओं में नियोजित होते हैं। वे माता-पिता और बच्चों को उनकी सुविधा के अनुसार एक्सेस करने के लिए संपादन योग्य वर्कशीट और असाइनमेंट अपलोड करती हैं।

इसके बाद, मैं माध्यमिक कक्षाओं में आता हूँ तो गणित के उन शिक्षकों में से एक शिक्षक जिनकी

कक्षा को देखने में मुझे आनंद आता है, एक उत्कृष्ट शिक्षक हैं, जो ऑनलाइन क्लास रूम के दौरान 'मल्टीमीडिया के उपयोग' में हैदराबाद, चेन्नई, एर्नाकुलम, कोलकाता और बेंगलुरु क्षेत्रों के शिक्षकों को प्रशिक्षण देने के लिए एक संसाधक व्यक्ति भी रहे हैं।

वे 'एक्टिव-इंस्पायर और जैम बोर्ड' जैसे राइटिंग बोर्ड सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हैं जो गणितीय समस्याओं को हल करने में बहुत उपयोगी है। वे इस तरह के सॉफ्टवेयर के साथ ऑनलाइन कक्षाओं में भी लाइव क्लासरूम का अनुभव करवाते हैं। वे पी.डी.एफ प्रारूप में दस्तावेजों/नोटों को प्रस्तुत करने के लिए 'माइक्रोसॉफ्ट एज' का भी उपयोग करते हैं और पेन, ईरेज़र, हाइलाइटर इत्यादि जैसे उपलब्ध सभी टूल्स का उपयोग करके छात्रों को समझाते हैं।

उन्होंने बीजगणित सिखाने के लिए 'ग्रासेबल मैथ ऐप' और ज्यामिति के लिए जियोजेब्रा का उपयोग करने में महारत हासिल कर ली है। वे ज्यामितीय निर्माणों को समझाने में मैथटूल और रोबोकोम्पस का उपयोग करते हैं।

YouTube पर वीडियो के लिए उनका अपना चैनल भी है और छात्र अक्सर उनके वीडियो देखते हैं। वे स्क्रीनकास्टो-मैटिक और ओबीएस स्टूडियो का उपयोग करके अपने स्वयं के वीडियो बनाते हैं।

अब वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाओं की ओर बढ़ते हुए, मैं आप सभी को हमारे एक अंग्रेजी शिक्षक से मिलवाता हूँ। उसकी कक्षाओं का अवलोकन करते हुए मैंने पाया कि वे अपने पाठों को विद्यार्थियों से जोड़ने में सक्षम हैं। वे प्रासंगिक उपाख्यान देने में सक्षम हैं जो पाठ की उचित समझ को सक्षम बनाता है। वे छात्रों को पढ़ाए जा रहे पाठ से संबंधित अपने स्वयं के अनुभव बताने के लिए भी प्रेरित करते हैं और इस तरह वे खुद को पाठ से जोड़ने में सक्षम होते हैं। वे हमेशा पाठ को इंटरैक्टिव बनाते हैं।

वे एक नीरस आवाज नहीं रखते हैं, बल्कि अपनी आवाज के स्वर के साथ खेलते हैं जो श्रोताओं को अधिक चौकस बनाता है।

उनकी शिक्षण सीखाने की प्रक्रिया में छात्रों के भाषण भी शामिल हैं। वे समूह चर्चा में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। इस तरह के सत्र हमेशा सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित करते हैं और इससे उन्हें सीखने के स्पष्ट उद्देश्य निर्धारित करने और सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में मदद मिलती है। यह उन्हें इस तरह की गतिविधियों में उनकी भागीदारी के आधार पर अपनी कक्षा के प्रत्येक छात्र का आकलन करने में भी मदद करता है। वे कक्षा में ऑनलाइन अंतःविषय वाद-विवाद का आयोजन करते हैं और छात्र बहुत उत्साह से वाद-विवाद में भाग लेते हैं। विज्ञान वर्ग के छात्रों ने जिन बहसों में भाग लिया उनमें से एक 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' पर थी। इसके फायदे और नुकसान के बारे में कक्षा में तीखी बहस हुई। वे लगभग हर अध्याय को पूरा करने के बाद अपनी ऑनलाइन कक्षाओं में प्रश्नोत्तरी आयोजित करके अपनी कक्षाओं को और अधिक रोचक बनाते हैं जिससे पाठ की उपयुक्त समझ की गारंटी मिलती है।

अब मुझे अगली उच्च स्तरीय प्रतिभा का उल्लेख करना चाहिए, एक और शिक्षक जिन्होंने उपलब्ध सामग्रियों की खोज की है और छात्रों को अपनी ऑनलाइन कक्षाओं में व्यस्त और उत्साहित रखने के लिए खुद को सुसज्जित किया है। उन्होंने उन्नत मीडिया, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करके अवधारणाएँ विकसित की हैं और छात्रों को केवल दर्शकों के दृष्टिकोण के बजाय वैज्ञानिक अवधारणाओं का अनुभव करने के लिए एक सार्थक सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल की है।

उन्होंने मुझे यह अनुभव प्रदान किया है एनीमेशन और एनीमेशन वीडियो के साथ भौतिकी की अवधारणाओं को बेहतर तरीके से बताया जा सकता है। वे अर्थपूर्ण सीखने का अनुभव प्रदान करने के लिए गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करने के लिए अक्सर PhET सिमुलेशन का उपयोग करती हैं। वे कक्षा अनुभव के लिए एक साथ चर्चा के साथ Google क्रोम एनिमेटेड वीडियो और सिद्धांत भागों के DIGI बोर्ड और स्प्लिट स्क्रीन विकल्प का उपयोग करती हैं। वे बिना किसी खर्च के विषय को सीखने का अनुभव देने के लिए ऑनलाइन उपलब्ध वर्चुअल साइंस लैब का भी उपयोग करती हैं। अल्पकालिक प्रगति जाँच के लिए, वे पिछले विषयों पर प्रश्नोत्तरी आयोजित करके पाठों के बीच निरंतरता बनाना सुनिश्चित करती हैं जो छात्रों को

दिलचस्प लगती है और उन्हें सीखने के लिए प्रेरित करती है।

हमारे शिक्षकों ने सर्वश्रेष्ठ लाने के लिए जो भी प्रयास और कड़ी मेहनत की है, उसे केवल शब्दों में चुकाया नहीं जा सकता है।

परवेज़ हुसैन

प्राचार्य,

के.वि. सीआरपीएफ येलाहंका

6

एक अतुल्य शिक्षक

रेखांकन: संध्या जायसवाल, टीजीटी (कला), के.वि. मानेसरसंध्या

एक कहावत है- ' अच्छी शुरुआत आधी सफलता ' कहने का तात्पर्य है - हमारी कार्य संस्कृति की एक झलक हमारे सम्पूर्ण कार्य की गुणवत्ता का परिचय दे देती है। यहाँ मैं आपके समक्ष एक ऐसी ही कर्तव्यनिष्ठ शिक्षिका की कहानी प्रस्तुत कर रही हूँ।

एक स्नातकोत्तर शिक्षिका जिसने अपनी निरंतर कड़ी मेहनत, समर्पण और अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से अपने छात्रों के विकास में योगदान दिया है। उसने अपने विद्यार्थियों के बीच लेखन, वाद- विवाद , नारा और भाषण लेखन जैसी पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से बोलने और लिखने में अंग्रेजी में संचार कौशल का विकास किया है। मस्तिष्क उत्तेजना, विचारों के संवर्धन और खूबसूरत प्रस्तुतीकरण के लिए आयोजित यह गतिविधियाँ विद्यार्थियों में अंग्रेजी के संचार कौशल को सशक्त बनाती हैं। ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरीकों से सीखने में ही जीवन का वास्तविक आनंद निहित है। महामारी के इस दौर ने हमें विशेष प्रविधियों से अंग्रेजी पढ़ने और सीखने के लिए प्रोत्साहित किया है। जिसमें शैक्षणिक कुशलता को ऑनलाइन मोड की आवश्यकतानुरूप बनाया गया है। पाठ योजनाओं को आकर्षक बनाने के लिए पावर पॉइंट प्रस्तुतियों के माध्यम से प्राद्योगिकी उन्मुख बनाया गया है। पाठ की विषयवस्तु से संबंधित वीडियो प्रदर्शित किए जाते हैं जिससे विद्यार्थी पाठ के सारांश से परिचित हो सके। छात्रों की सक्रियता को ध्यान में रखते हुए स्व -निर्मित प्रश्नोत्तरी आयोजित की जाती है। जहाँ छात्र चैट बॉक्स के माध्यम से वर्णित दृश्यों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देते हैं और सही उत्तर के लिए अंक प्राप्त करते हैं। अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र को आभासी माध्यम से उत्कृष्टता प्रमाण पत्र प्रदान किया जाता है।

छात्र नवाचार और रचनात्मक संकायों का पता लगाने के लिए और सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए खुद को प्रशिक्षित करते हैं और कभी -कभी ऑनलाइन समूह कार्य - एक मिनट का भाषण, सामूहिक परिचर्चा जैसी पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से आत्मनिर्भरता की ओर एक कदम बढ़ाते हैं। सामूहिक प्रस्तुतियों में छात्रों के द्वारा स्वनिर्मित वीडियो और पावर पॉइंट प्रस्तुतियाँ मुख्यत: शामिल होती हैं जिन्हें छात्र दिए गए या स्वयं चयनित विषयों पर तैयार और प्रस्तुत करते हैं। जिससे विद्यार्थियों में पाठ्य सामग्री,लेखन कौशल, सुनने और बोलने के कौशल का विकास होता है। आभासी कक्षा-कक्ष अनुसंधान आधारित होते हैं जिसमें सभी स्तरों पर छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित रहती है और सभी साथ- साथ सीखते हैं। विश्लेषण, रचनात्मक व्याख्या और शोध आधारित कक्षा- कार्य और गृह कार्य दिए जाते हैं। जिन्हें छात्र गूगल कक्षाओं के माध्यम से प्रस्तुत (submit) करते हैं। तत्संबंध में छात्रों को शिक्षिका द्वारा ग्रेड और पृष्ठ- पोषण प्रदान कर उत्साहवर्धन किया जाता है।

प्रतिदिन विद्यार्थी अपने पूर्वज्ञान को शामिल करते हुए अधिगम से प्राप्त अनुभव के आधार पर पाठ से जुड़ जाते हैं। यह फिल्मों के मीम्स और हास्यास्पद संदर्भों के रूप में होते हैं जिन्हें छात्र तनावमुक्ति के रूप में पाते हैं। कक्षागत परिस्थितियों में छात्रों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए उपस्थित छात्रों के मध्य कक्षा में जीवंत परिचर्चा कराई जाती है। शिक्षण-अधिगम के उचित क्रियान्वयन में 'किशोर शिक्षा कार्यक्रम' की गतिविधियों को सक्रिय रूप से आगे बढ़ाने से किशोरों की चिंताओं और अपेक्षाओं का एकीकरण करते हुए 'AEP मैन्युअल' में तैयार की गई गतिविधियों को पाठ्य सामग्री में शामिल किया गया है। प्रशिक्षित छात्रों ने 'राष्ट्रीय युवा दिवस' जैसे कई अवसरों पर वेबीनार के माध्यम से जुड़कर अपने वक्तृत्व कौशल का प्रदर्शन किया है।

सबसे अधिक सुखद परिणाम यह रहा कि कैसे अंग्रेजी के शिक्षण और सीखने को पाठ्य सहगामी गतिविधियों और विद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के साथ योजनाबद्ध और चरणबद्ध तरीके से जोड़ा जाए। छात्र-छात्राओं को कठिन समय के दौरान रचनात्मक अभिव्यक्तियों, कला और शिल्प गतिविधियों, जैसे- ड्राइंग, पेंटिंग रंगोली, एवं मुखौटा बनाने के साथ-साथ नाटक, गायन एवं नृत्य प्रदर्शन हेतु प्रेरित किया गया। जिसमें उन्होंने अनूठी कृतियों का निर्माण करने के लिए अपनी कलात्मक और रचनात्मक क्षमताओं का उपयोग किया है।

छात्र छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान भी पाठ्य सहगामी गतिविधियों के माध्यम से रखा जा रहा है जो उनकी जिज्ञासाओं एवं इंद्रियों को रचनात्मकता एवं नवाचार से जोड़ती हैं। छात्रों के साहित्यिक लगाव को कविताओं, लघु कथाओं,लेखों और लेखन की विविध विधाओं के माध्यम से परखा जाता है एवं उन्हें आभासी माध्यम से प्रकाशित किया जाता है।

जब कभी अपेक्षित परिणामों का आकलन ऑनलाइन मूल्यांकन टूल तक सीमित होता है तो गूगल फॉर्म, ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी और अन्य मूल्यांकन विधियों को नियोजित करते हुए छात्रों से प्रतिक्रियाएँ ली जाती हैं। भले ही उनका शैक्षणिक प्रदर्शन अपेक्षित परिणामों की पूर्णतः प्राप्ति न करते हों। छात्र अधिगम के मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए छात्रों को वित्तीय सहायता,परामर्श व भावनात्मक समर्थन इस शिक्षिका द्वारा प्रदान किया जाता है जिससे उनकी सीखने की निरंतरता बनी रहे। मेरा मानना है कि जब एक शिक्षक अपने छात्रों में यह विश्वास

पैदा करता है कि वे खुद पर विश्वास करना सीख जाएँ, तब सच्चे अर्थों में वह 'केंद्रीय विद्यालय की कक्षाओं में भारत के भाग्य का निर्माण कर रहा होता है'। यही कारण है कि मैं इस शिक्षिका को अपने शिक्षण के साथ उत्कृष्टता के नए मानक स्थापित करती हुई पाती हूँ।

डॉ. ऋतु पल्लवी

प्राचार्य,

के.वि. क्रं. 3 भोपाल

एक समर्पित शिक्षक

7

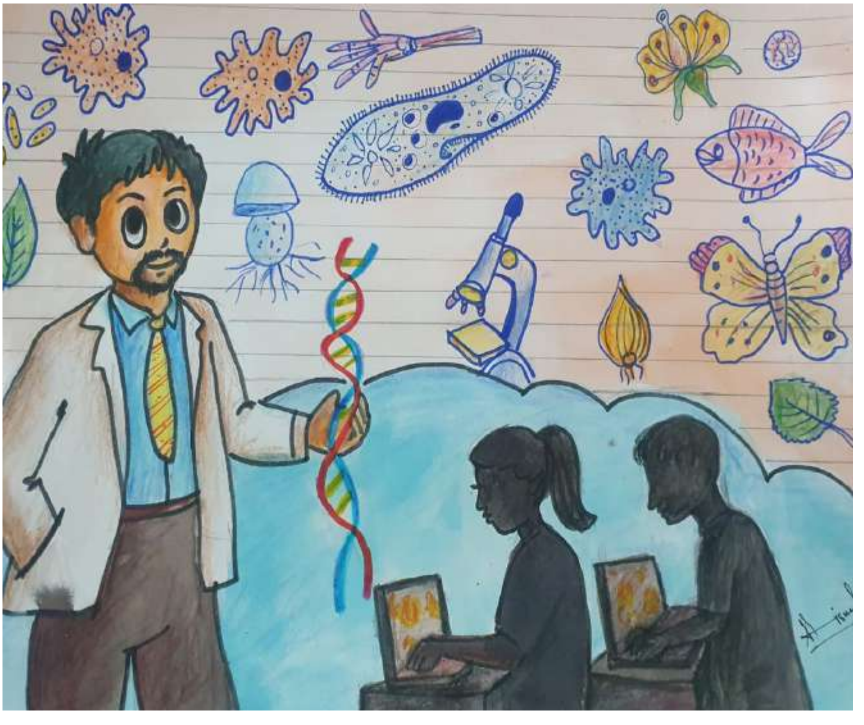

रेखांकन: संध्या जायसवाल, टीजीटी (कला), के.वि. मानेसरसंध्या

मुझे अपने विद्यालय के एक शिक्षक के विषय में बात करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है जो विद्यार्थियों की विचार प्रक्रिया को उद्वेलित करते हुए उन्हें आत्म निर्देशित बनाते हैं। यह बात मैं स्वयं के विगत पाँच वर्ष व सात माह के अनुभव व अवलोकन के आधार पर कह रहा हूँ। किसी शिक्षक को किस प्रकार बदलते हुए शैक्षणिक परिदृश्य में स्वयं को नई पद्धतियों में किस प्रकार

अनुकूलित किया जाता है इसके लिए उनका उदाहरण दिया जा सकता है। जब उन्होंने महसूस किया पारंपरिक शिक्षा पद्धति द्वारा प्रतिवर्ष गुणवत्तापूर्ण परिणाम देना सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। विद्यार्थी को भी स्वयं की शिक्षा के प्रति जवाबदेह होना ही होगा, तब से (वर्ष 2019) मैंने उनके अंदर आमूलचूल परिवर्तन महसूस किया।

वर्ष 2018 के पूर्व उनके द्वारा बारहवीं कक्षा में गुणवत्तापूर्ण परिणाम दिया जाता रहा (PI 70 से 75 के मध्य) किन्तु वर्ष 2018 के बाहरवीं के जीव विज्ञान विषय में उनका PI 50.5 स्तर पर आ गया। विद्यालय में चलने वाली दक्षता निर्माण श्रृंखला द्वारा उन्हें विश्वास हो गया कि प्रतिवर्ष प्रत्येक परिस्थिति में उत्तम परिणाम देना है तो उन्हें अपनी पारंपरिक शिक्षा पद्धति में बदलाव लाना ही होगा, यह उनके लिए स्वयं के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु रहा। उन्होंने सकारात्मक दृष्टिकोण व निष्पक्ष रूप से स्वयं के द्वारा दिए गए निम्न स्तरीय वार्षिक परिणाम का विश्लेषण किया।

उन्हें यह बात समझ में आ गई कि वर्तमान परिदृश्य में ख़राब परिणाम का दोषारोपण छात्रों, अभिभावकों या अन्य कारकों पर करके वांछित परिणाम प्राप्त नहीं किया जा सकता है किन्तु सकारात्मक दृष्टिकोण का यह प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कई नई पद्धतियाँ आत्मसात् की जिसके द्वारा विद्यार्थियों की योग्यता को निखारते हुए वांछित परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

वे यह समझ चुके थे कि अनियोजित अध्ययन उत्तम परिणाम नहीं दे सकता है तथा कुछ विद्यार्थी अपने स्तर पर स्वयं के अध्ययन का उचित प्रबंधन नहीं कर सकते हैं, यह कार्य केवल स्वयं शिक्षक द्वारा विभिन्न आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष रूप से निर्मित योजना द्वारा ही संभव है। उन्होंने अपने विद्यार्थियों के विभिन्न आयामों के परीक्षण के लिए वास्तविकता निरीक्षण: अपने विद्यार्थी को जाने नामक एक शैक्षणिक टूल बनाया तथा इसकी मदद से क्रियात्मक अनुसंधान प्रारंभ किया। रियलिटी चेक एक ऐसा शैक्षणिक टूल हैं जिसमें विद्यार्थी विषय के विभिन्न उपविषयों प्रतिदिन होने वाली प्रगति पर आत्ममंथन कर सकता है। उन्होंने स्टूडेंट स्कैनर नाम से एक शैक्षणिक टूल का भी विकास किया जिसके द्वारा विद्यार्थी के समय प्रबंधन, रुचि, व्यवहार, मूल शक्ति का पता लगाया जा सकता है। उनके द्वारा विद्यार्थियों को इस

बात के लिए भी प्रशिक्षित किया गया कि कैसे रियलिटी चेक का उपयोग करके वे अपनी शक्ति व कमज़ोरी की पहचान कर सकते हैं यह उनके अधिगम की प्रक्रिया को आसान बनाएगी। उन्होंने इस बात की "कक्षा में पढ़ाने से ज़्यादा महत्वपूर्ण विद्यार्थी को समझना होता है" गॉंठ बाँधकर अपना शिक्षण कार्य किया। जब उन्होंने किसी विद्यार्थी के अकादमिक स्तर व दृष्टिकोण को जान लिया तब उस विद्यार्थी के लिए विशेष रूप से योजना बनाकर उसे आत्मनिर्देशित विद्यार्थी बनाना उनके लिए आसान हो गया।

वह विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का सांख्यिकीय व आलेखी रूप में विश्लेषण करते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी का विश्लेषण करने के पश्चात उसकी ज़रूरत के हिसाब से लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु समय प्रबंधन व अधिगम स्तर को ध्यान रखते हुए विशेष रणनीति बनाते हैं। वे हमेशा विद्यार्थियों व अभिभावकों के लिए उपलब्ध रहते हुए उनका मार्गदर्शन करने में विश्वास रखते हैं। कोविड -19 के दौरान स्वयं को परिवर्तित करते हुए उन्होंने अपने सभी शैक्षणिक टूल्स का डिजिटलाइजेशन कर दिया तथा स्वयं द्वारा बनाए गए वीडियो व्याख्यान व ई सामग्री का संकलन सार्वजनिक रूप से उपलब्ध करवा दिया जिससे कि एक लिंक के द्वारा विद्यार्थी त्वरित गति से अध्ययन सामग्री तक पहुँच बना सकता है। वे अपनी कक्षा में फ़्लिप टीचिंग मॉडल का उपयोग करते हैं जो विद्यार्थी को आत्म निर्देशित बनाने के उद्देश्य को प्राप्त करने में मदद करता है। उनकी कक्षाओं के निरीक्षण के समय देखा गया कि विद्यार्थी स्वेच्छा से कुछ विषयों पर स्वयं अनुसंधान कर सेमिनार या वेबिनार के द्वारा प्रस्तुत करते हैं।

वे विद्यार्थी के सामान्य शिक्षण व प्रयोगशाला कार्य करवाने तथा विद्यार्थियों के अधिगम का आकलन करने के लिए विभिन्न सॉफ़्टवेयर का उपयोग करते हैं। प्रत्येक पाठ के लिए जब वे स्वयं द्वारा तैयार किए गए वर्गीकृत प्रश्नों का उपयोग विभिन्न डायग्नोस्टिक टूल्स जैसे MRAP, Reality check, DCP (DaIly class performance) के साथ करते हैं तब चमत्कारिक परिणाम प्राप्त होता है। वे इस तथ्य को अच्छी तरह संभाल लेते हैं कि प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता व सीखने की गति के साथ से वर्गीकृत प्रश्न उपलब्ध करवाए जाएँ जिससे कि वे गुणवत्तापूर्ण वांछित परिणाम प्राप्त कर सकें। कक्षा निरीक्षण के दौरान विद्यार्थियों में आपस में सहयोगात्मक व्यवहार भी पाया गया।

उन्होंने यह सिद्ध कर दिया है कि कम शिक्षण कार्य कर तथा विद्यार्थी के अकादमी स्तर व दृष्टिकोण पर अधिक ध्यान देकर हम विद्यार्थी को आत्मनिर्देशित् बना सकते हैं। उनके द्वारा विद्यार्थियों को प्रश्न कैसे बनाए जा सकते हैं इसके लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इसके लिए विद्यार्थी समूह में या व्यक्तिगत रूप से लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्य करते हैं।

वे व्यक्तिगत रूप से छात्रों की समस्या को हल करने के लिए समय देते हैं। वे अपनी कक्षा में शैक्षणिक नियोजन, अध्ययन सामग्री के प्रबंधन, विभिन्न प्रकार के परीक्षण व विश्लेषण में सक्रिय रूप से लगे रहते हैं। विद्यार्थी उन पर विश्वास करते हैं। यह उनके समर्पण का ही परिणाम है जिसके कारण विद्यार्थी जीव विज्ञान विषय की प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार सफलता प्राप्त कर रहे हैं तथा बारहवीं कक्षा के जीव विज्ञान विषय में उच्च प्रदर्शन सूचकांक (PI) (हमेशा 90 से उच्च) प्रदान कर रहे हैं। उनके द्वारा किए गए प्रयास सीखने की प्रक्रिया को अद्वितीय सार्थक मनोरंजक बनाने के साथ ही विद्यार्थी को आजीवन विद्यार्थी का दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

मैं उनके भविष्य के लिए उन्हें शुभकामनाएँ देता हूँ।

ए.के. पांडा
प्राचार्य,
के.वि. विदिशा

एक तकनीक-प्रेमी शिक्षिका

8

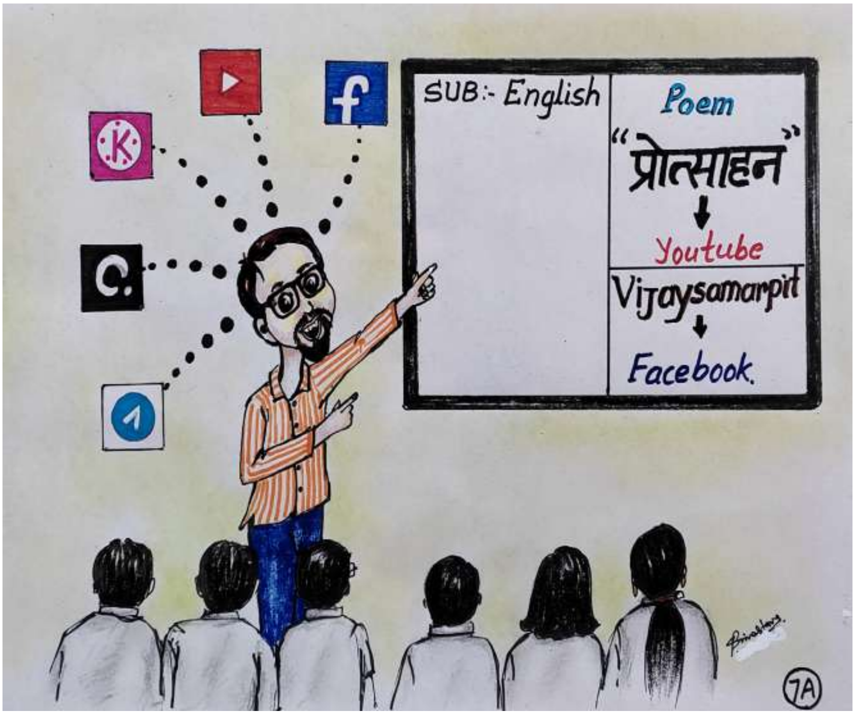

रेखांकन: श्रीप्रकाश श्रीवास्तव, टीजीटी (कला), के.वि. रोहतक

यह एक तकनीक-प्रेमी शिक्षक के ऊपर मेरे निरीक्षण पर आधारित है, जिन्होंने शिक्षण प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित करते हुए सीखने की प्रक्रिया को अद्वितीय, सार्थक और मनोरंजक बनाने के लिए कदम उठाए हैं।

सत्र 2020-21 की शुरुआत से ही शिक्षक ने प्रभावी ऑनलाइन अध्यापन के लिए शिक्षण ऐप के उपयोग को सीखने की पहल की और अपने सहयोगियों के साथ विचार भी साझा किए। छात्रों और अभिभावकों को प्रेरित करने और परामर्श देने पर पहला वीडियो लॉकडाउन अवधि के दौरान शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण के साथ प्रभावी, सुखद सीखने पर केंद्रित था, शिक्षक द्वारा प्रभावी ढंग से बनाया गया था और सभी छात्रों के साथ साझा किया गया था। शिक्षकने 'प्रोत्साहन' नामक एक कविता की रचना की, उसी पर एक वीडियो बनाया और संदेश को फैलाने और महामारी की नकारात्मक भावनाओं को सीखने और बढ़ने के अवसर में बदलने के लिए इसे YouTube चैनल के माध्यम से सभी छात्रों के साथ साझा किया। एक आशावादी वातावरण का निर्माण किया। शिक्षक ने निर्देशित कार्य के अनुसार 'डिजिटल असमानता और सीखने की जानकारी' पर एक वीडियो भी विकसित किया है और उम्मीदों पर खरा उतरा है।

इनके अलावा, शिक्षक ने विभिन्न शिक्षण ऐप्स का प्रभावी ढंग से उपयोग करके अध्यापन को रोचक और शिक्षार्थी उन्मुख बनाने के लिए YouTube पर 80 से अधिक पाठ तैयार किए हैं। इस तरह के वीडियो महामारी के दौरान आशावादी दृष्टिकोण बनाए रखते हुए शिक्षार्थियों को रुचि के साथ अपनी गति से सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। छात्र इन वीडियो का उपयोग अपनी सुविधानुसार पुनरावृत्ति करने, सीखने में रुचि विकसित करने और सीखने के परिणामों को काफी हद तक प्राप्त करने के लिए करते हैं। शिक्षक ने मूल्यांकन प्लेटफॉर्म का उपयोग किया है। Quizizz.com, Google फॉर्म, टेलीग्राम चैनल, Google क्लासरूम आदि के माध्यम से सामग्री भेजना व मुल्यांकन करना। छात्रों की प्रगति की निगरानी करना, छात्रों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सहायक प्रतिक्रिया और आवश्यक सहायता प्रदान करना। टेलीग्राम चैनल देर से जुड़ने वालों को भी अधिगम के अवसर प्रदान करता है कि विद्यार्थी पहले भेजी गई सामग्री तक पहुंचें। शिक्षक ने अंग्रेजी विषय और प्रोत्साहन पर एक फेसबुक पेज बनाया है। किए गए प्रयास स्पष्ट रूप से सीखने की प्रक्रिया को सुलभ बनाने के लिए शिक्षक की प्रतिबद्धता को इंगित करते हैं। शिक्षक द्वारा विभिन्न आयोजनों पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता एवं निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। ऑनलाइन कक्षाओं में उपस्थिति काफी हद तक बढ़ी। शिक्षक उपयोगी ऐप्स का उपयोग करने के लिए विचार साझा करते हैं। Kinemaster, X Recorder, आसान शिक्षण, साथी शिक्षकों के साथ तकनीकी

जानकारी साझा, प्रभावी वीडियो तैयारी और रोचक ऑनलाइन शिक्षण का कार्य। शिक्षक प्रभावी अध्यापन के लिए कई 'टूल्स और ऐप्स' का उपयोग करता है और छात्रों को विभिन्न तरीकों से सुविधा प्रदान करता है, जैसे कि छात्रों को कक्षा जरी रहने पर ऑनलाइन कक्षा में प्रवेश की अनुमति देना, छात्रों की गतिविधियों की निगरानी करते हुए यह सुनिश्चित करने के लिए कि ऑनलाइन शिक्षण व्यवधान मुक्त रहे।

मैं एक संपत्ति के रूप में शिक्षक के सराहनीय प्रयासों को स्वीकार करता हूं, उनकी सराहना करता हूं और दूसरों से भी यही उम्मीद करता हूं।

लक्ष्मण सिंह
प्राचार्य,
के.वि. रतलाम

9

सबको प्रेरणा देती शिक्षिका

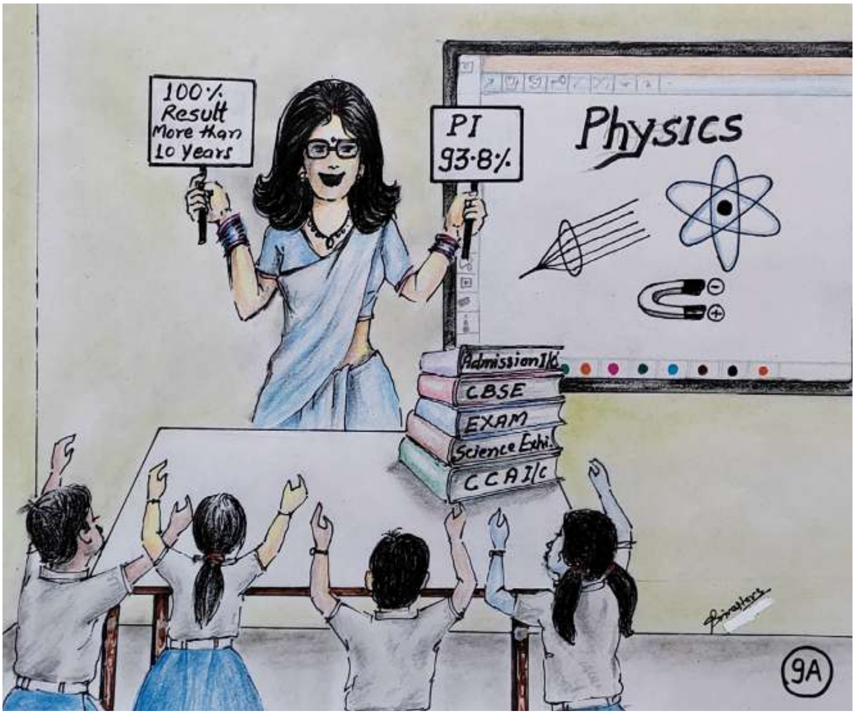

रेखांकनः श्रीप्रकाश श्रीवास्तव, टीजीटी (कला), के.वि. रोहतक

मैं ऐसे शिक्षिका के बारे में बता रही हूँ जो विद्यार्थियों के लिए सामान्य शिक्षा को अनुशासन आधारित आसान और प्रभावी शिक्षण में प्रवर्तित कर देता है। शिक्षक ने भौतिक विज्ञान के शिक्षण को विद्यार्थियों के समझ के स्तर तक पहुँचाने में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों को अपनाया है।

उसके शिक्षण में बहुत सारे मजबूत पहलू है। शिक्षक बहुत सारे प्रभावी उदाहरणों के माध्यम से अवधारणों की समझ को एकत्र करती है जो विद्यार्थियों के सीखने में बहुत सहायक होता है , शिक्षक के शिक्षण में दूसरी मुख्य विशेषता अवधारणाओं को एक दूसरे से जोड़ने की है जो विद्यार्थियों के लिए बेहतर सीखने का काम करती है।

शिक्षक अपने विद्यार्थियों की दृढ़ नींव को विकसित करने के लिए उत्सुक है और उसका विद्यार्थियों के साथ संवाद करने का तरीका और विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने का तरीका स्पष्ट है।

एक शिक्षक के शिक्षण के सत्र के मासिक अवलोकन के दौरान बारवीं कक्षा लिए उन्होने "विद्युत क्षमता" की अवधारणा पेश की जो वास्तविक जीवन से विद्युत सांख्यकीय क्षमता उद्धरण और उदाहरण प्राप्त करने की स्थितियाँ है। बाद में शिक्षकने अवधारणा पर प्रासंगिक विडियो साझा किया। इसके बाद प्रश्नोत्तर हुआ जिसमें छात्रों ने अच्छी तरह से सत्र भौतिक विषय का एक अच्छा अनुभव लेते हुए भाग लिया था।

इसके बाद शिक्षक सफलता पूर्वक गणित और भौतिकी को सहसंबंधित करने पर जोर देता है और वह विद्यार्थियों को विषय पर संख्यातमक प्रश्नों को हल करने के लिए प्रोत्साहित करती है। वह एक साथ बोर्ड परीक्षा के प्रश्नों पर चर्चा करते हुए छात्रों को कार्य पत्रक सौंपती है।

एक अन्य उदाहरण मे शिक्षक ने "ओस्टर्ड के प्रयोग" और "दाहिने हाथ के अंगूठे के नियम" की व्याख्या की है। जिसका उद्देश्य विद्युत और चुम्बकत्व के बीच संबंध स्थापित करना था। शिक्षक ने विधुत प्रवाह को ले जाने वाले तार के पास एक कंपास सूई लगाई और शिक्षार्थियों ने देखा की गतिमान इलेक्ट्रान एक चुंबकीय क्षेत्र बना सकते है।छात्रों को क्या पता होना चाहिए,वे पहले से क्या जानते है और उन्हे प्रयोग में कैसे लागू करना चाहिए, उन्होने इसका एक मार्ग नक्शा बनाया और यह गतिविधि एक तात्कालिक सफलता थी।

एन. ई . पी के सिद्धांत जो व्यावहारिक आधारित शिक्षा पर जोर देते हैं उन्हे इस कक्षा में प्रभावी

ढंग से लाया गया था।

यह स्पष्ट है कि अपने शिक्षार्थियों को उद्देश्य पूर्ण दिलचस्प घटना के साथ शैक्षणिक अभ्यासों के बारे में बताती है। जो भौतिकी के अनुकरणीय कक्षा लेन – देन का एक संकलन जिसे रोजमर्रा के जीवन में देखा जा सकता है। शिक्षक उद्योग और प्रौद्योगिकी में भौतिकी के अनुपयोग पर चर्चा करती है। और इस प्रकार अपने शिक्षार्थियों में उत्सुकता बनाए रखता है जिसके परिणाम स्वरूप उसके शिक्षार्थी विषय को सीखने और जीवन के अन्य विषयों के साथ समझने और संबंधित करने में सक्षम होते है।

वह ज्ञान को साझा करने और करके सीखने को सुदृढ करने में गहरी दिलचस्पी लेती है यह उनके गतिविधि केंद्रित सत्रों (प्रोजेक्टाइलमोशन फैराडे के प्रयोग ,डापलर प्रभाव,जेनर डयोड – वोल्टेज नियामक आदि) में स्पष्ट है। उसके छात्र सार्थक गतिविधियो में लगे हुए हैं जो सिद्धांतों का पालन करने समझाने और व्याख्या करने की उनकी शक्ति को बढावा देते हैं। इस प्रकार उनकी कक्षाएँ विचारों के निर्माण और अवधारणाओं की प्राप्ति के लिए एक आदर्श स्थान बन जाती हैं।

शिक्षक स्वतंत्र सोच को प्रोत्साहित करता है और उसके पास धैर्य का एक बडा भंडार है और समस्याओं का सीधा समाधान देने से बचता है।

शिक्षक का लक्ष्य है कि उसके छात्र अपने परियोजना कार्य के लिए प्रोद्योगिकी का उपयोग एक महत्वपूर्ण और रचनात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करने मे करें। वह विशेष रूप से मूल्यांकन में और शिक्षार्थोयों के लिए शिक्षण–अधिगम अनुभवों को डिजाइन करने में आईसीटी संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करती है। शिक्षण अधिगम सहायता के रूप में दृश्य सहायता कक्षा में चर्चा की जा रही वस्तु के लिए एक अधिक ठोस संदर्भ के रूप में कार्य करती है। जब चर्चा की जा रही वस्तु हाथ में नही होती है , तो सबसे अच्छा संदर्भ इसका एक दृश्य प्रतिनिधित्व हैं।

उनकी देखरेख में प्रायोगिक सत्र छात्रों के लिए एक वरदान है। उदाहरण के लिए छात्रों को शिक्षक द्वारा उपकरणों के हिस्सों (गेल्वनोमीटर) को खंडित का अलग – अलग हिस्सों के बारे मे बताते

हुए देखने को मिलता है , जिससे छात्रों को उपकरण के बारे में पूरी जानकारी मिलती है। छात्रों का कहना है कि इस तरह के सत्र उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में मदद करते है।

उन्होने डिजिटल शिक्षा की दिशा में भी उदाहरणात्मक योगदान दिया है। उनके भौतिकी के चार अध्यायों मे ई- कंटेंट को मंजूरी दी गई है और दीक्षा पोर्टल पर रखा गया है। उनके ई- कंटेंट को फाइव स्टार का दर्जा दिया गया है। उन्होंने संक्षेप मे भौतिकी नामक एक पुस्तिका तैयार की है जो सभी अवधारणाओं को एक त्वरित संदर्भ शैली में देती है।इसे वह अपने छात्रों के लिए उपहार के रूप में मानती हैं और वे इसे एक विश्वकोश के रूप महत्व देते हैं जो उनकी परीक्षा संबंधी तैयारी को पूरा करने के लिए अनुकूलित है।

एक शिक्षक के रूप में उनकी छात्रों के लिए रही है जो उन्हे प्रेरणा के स्रोत के रूप में याद करते है। वह निस्संदेह एक शिक्षक' अलग वर्ग 'है। यह प्रयास का "छोटा डीएक्स" है जो आप हर दिन करते हैं जो अंत में डेल्टा के रूप में दिखाता है। शिक्षक के प्रयास इसका उदाहरण है। ऐसे शिक्षक इस विद्यालय के लिए वैभव समान है।

मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि उन्होने विद्यालय की गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में बहुत योगदान दिया है। उनकी ईमानदारी और विषय ज्ञान ने छात्रों को काफी लाभान्वित किया है। इसके अलावा उनके निष्ठा और कर्तव्य के प्रति समर्पण ने छात्रों के दिलों में उच्चतम नैतिक मूल्यों को स्थापित करने मे मदद की है। वह महान अंतर्दृष्टि और स्पष्टता, वास्तविकता व दूरदर्शिता वाली शिक्षिका है और उनके छात्रों और सहयोगियों द्वारा उनका बहुत सम्मान किया जाता है। शिक्षक एक दशक से बोर्ड परीक्षा में 100% परिणाम दे रहे हैं और २०१९ मे भौतिकी मे ९३.८ का उच्चतम पी.आई प्राप्त कर चुके हैं।

चित्रा मुकुंदन
प्राचार्य,
के.वि. मिनमबक्कम

10

एक उत्कृष्ट और उत्साहित शिक्षक

रेखांकन: शाहिद अली, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं. 2 फरीदाबाद

केन्द्रीय विद्यालय भारतीय तेल निगम नूनमाटी, गुवाहाटी के एक प्राथमिक शिक्षिका ने न केवल केन्द्रीय विद्यालय बल्कि केंद्रीय विद्यालय संगठन में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्हें 2016 के राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वह के.वि.सं की एक समर्पित और प्रतिबद्ध शिक्षिका हैं, जो शिक्षा से बच्चों का जीवन आलोकित करती हैं, अत: सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रबुद्ध करती हैं। उन्हें शिक्षक पर्व 2020 के दौरान के.वि.सं वेबसाइट पर 'भारत के शिक्षक' में उपस्थिति दर्ज़ करने का सम्मान मिला है।

वह केन्द्रीय विद्यालय भारतीय तेल निगम नूनमाटी, गुवाहाटी में एक उत्कृष्ट शिक्षिका हैं एवं शिक्षण उनका जुनून है। वह एक कुशल प्राथमिक शिक्षिका हैं जो अपने छात्रों के सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। वह उच्च मानकों को स्थापित करके, विभिन्न शिक्षण शैलियों की पूर्ति करके और प्रभावी मूल्यांकन रणनीतियों को लागू करके ऐसा करती हैं। छात्र उन्हें अपने शिक्षक के रूप में पाना चाहते हैं और अभिभावक एक अनुकरणीय प्राथमिक शिक्षिका के रूप में उनके योगदान को पहचानते हैं। उनकी असाधारण क्षमता पेशेवर उत्कृष्टता में परिवर्तित हो जाती है, जो कई क्षेत्रों में उनके प्रदर्शन से पता चलता है।

उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वे हैं : 2016 में राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार, 2013 में के.वि.सं राष्ट्रीय प्रोत्साहन पुरस्कार, 2012 में के.वि.सं क्षेत्रीय प्रोत्साहन पुरस्कार, 2012 में विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय भारत सरकार द्वारा सी.वी रमन विज्ञान शिक्षण पुरस्कार, 2012 में संभागीय विज्ञान शिक्षक पुरस्कार, के.वि.सं गुवाहाटी संभाग। उपरोक्त मान्यताएं दर्शाती हैं कि वह के.वि.सं के दुर्लभ शिक्षकों में से एक हैं। उन्होंने कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और कार्यशालाओं में संसाधिका, मुख्य प्रशिक्षकऔर आंतरिक वक्ता के रूप में सफलतापूर्वक कार्य किया है।

कोविड-19 महामारी के दौरान उन्होंने शिक्षा की पुनर्कल्पना और पुनर्जीवन द्वारा महामारी संकट को सीखने के अवसरों में बदलने के लिए असाधारण प्रयास किए हैं। अपने छात्रों के साथ व्यक्तिगत संपर्क बनाकर, अपने छात्रों को प्रेरित करके, ध्यान केन्द्रित करने में छात्रों की मदद करके, चर्चाओं को सार्थक बनाकर, छात्रों की व्यस्तता बढ़ाकर, संघर्षरत छात्रों की पहचान

करके और उनकी सहायता करके ऑनलाइन शिक्षण के संबंध में आने वाली बाधाओं के संभावित समाधान खोजने की कोशिश की है।

ऑनलाइन कक्षाओं के संबंध में, वे सीखने के एक नए तरीके के अनुकूलता में सुधार करने में सफल रहीं। छात्रों के तकनीकी ज्ञान को बेहतर बनाया, छात्रों को ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के उपकरणों और मंचों से लैस कराया, पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण में कई ऑनलाइन प्रयोग और गतिविधियों का संचालन किया, प्रत्येक अध्याय के लिए ऑनलाइन मूल्यांकन किया, धीमी गति से सीखने वालों के लिए विशेष रूप से ऑनलाइन कार्य प्रपत्र तैयार किये, पाठ्यपुस्तकें और सहायक सामग्री ऑनलाइन साझा कीं, उपयोगी संसाधनों के लिंक दिए, फ़ोन कॉल और पाठ संदेश, व्हाट्सएप, ई-कंटेंट के माध्यम से बच्चों तक पहुंचने का प्रयास किया और अपना यू ट्यूब चैनल “YES WE CAN ...... LEARNING: OPPORTUNITYIN CRISIS” बनाया जिसमें व्याख्यात्मक वीडियो पाठ अपलोड किए गए हैं।

सीखने के अंतराल को पाटने के लिए इन्होंने ग्रीष्म अवकाश के दौरान तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा के लिए पर्यावरण अध्ययन में 40 दिनों के लिए ऑनलाइन ग्रीष्म शिविर का आयोजन किया जिसमें कागज को मोड़ कर आकृतियाँ बनाने की कला, मिट्टी से वस्तु बनाने की कला, विभिन्न प्रयोग, कला, पौधे उगाना, पोस्टर बनाना और डिजिटल कौशल विकसित करने के एक एकीकृत दृष्टिकोण को अपनाया गया। उन्हें महिला विकास केंद्र से प्रशंसा पत्र भी मिला है और काठमांडू से ई-मेल के माध्यम से बधाई भी मिली है। उनके पास कमज़ोर और उत्कृष्ट, दोनों तरह के छात्रों को प्रेरित करने की अद्वितीय क्षमता है। वह नियमित रूप से कमजोर छात्रों के माता-पिता के साथ बैठकें आयोजित करती हैं। सीखने के अपेक्षित परिणाम, मूल्यांकन रणनीतियों, संसाधनों के आधार पर गतिविधियों की साप्ताहिक योजना को हितधारकों के साथ साझा किया।

प्रशासनिक कार्यों में उनका योगदान सराहनीय है। वह स्कूल के कार्यक्रम आयोजित करने में सक्रिय हैं और ईमेल आदि के माध्यम से मुद्दों को समय पर संबोधित करने और विभिन्न अवसरों पर रिपोर्ट तैयार करने में कुशल हैं। उन्हें कई क्षेत्रों जैसे संगीत, कला, सजावट और विद्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों में उनके असाधारण योगदान के लिए पहचाना जाता है। उनके

द्वारा तैयार किए गए लोक नृत्य को एक भारत श्रेष्ठ भारत 2019 में के.वि.सं के राष्ट्रीय स्तर के प्रतियोगिता के लिए चुना गया। उन्होंने कई न्यूनतम साझा कार्यक्रम पत्रकों को संकलित, संपादित और रूपांकित किया है।

आकाशवाणी में उनके उल्लेखनीय सेवाओं और योगदान की आकाशवाणी गुवाहाटी द्वारा सराहना की जाती है। आकाशवाणी गुवाहाटी से उनके कई कार्यक्रम प्रसारित किए गए हैं। उन्होंने आकाशवाणी पर प्रसारित प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पहले रेडियो संबोधन 'मन की बात' का सटीक और यथावत् प्रतिलेखन करने में भी अपनी उत्कृष्टता साबित की है। समाचार पत्रों में उनके कई रचनात्मक लेख प्रकाशित किये गए हैं। वह एक ऐसी शिक्षिका के रूप में उभरी हैं, जो उत्कृष्टता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में कभी डगमगाई नहीं। गुणवत्ता के प्रति उनकी पेशेवर प्रतिबद्धता उनके द्वारा की जाने वाली हर चीज में स्पष्ट है। सावधानीपूर्वक सूक्ष्मता से विस्तार पर ध्यान देना इन्हें इतना खास बनाता है। उनके अतिरिक्त प्रयास, समर्पण, अंतर्दृष्टि, राय और उत्कृष्ट योगदान केंद्रीय विद्यालय संगठन के लिए अत्यंत मूल्यवान हैं।

डॉली दास

प्राचार्य,

के.वि. आईओसी नूनमाटी, गुवाहाटी

11

जब शिक्षण ही जीवन शैली हो

रेखांकन: शाहिद अली, टीजीटी (कला), के.वि. क्रं. 2 फरीदाबाद

यह एक प्राथमिक शिक्षक के बारे में है, जिन्हें 2017 में केंद्रीय विद्यालय संगठन में शिक्षक बनने के लिए चुना गया था। हालांकि, हर चयनित उम्मीदवार की तरह, वह भी उस भयानक चिंता से परेशान थी - हमारा देश इतना विशाल होने के कारण पोस्टिंग का स्थान क्या होगा।

वह असम के केंद्रीय विद्यालय बरपेटा में तैनात हुई। उन्होंने स्कूल की वेबसाइट पर लॉग इन करके स्कूल को देखा। उन्हे पता चला कि स्कूल एकल खंड(sIngle sectIon) है व एक अस्थायी संरचना में चलता है और गुवाहाटी के पश्चिम में सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

इसके बावजूद जब वह अपने भाई के साथ स्कूल पहुंची, तो वह मौलिक सकारात्मक दृष्टिकोण, काम के लिए उत्साह, बच्चों के लिए प्रेम और चमकती हुई मुस्कान से परिपूर्ण थी। अगले तीन वर्षों के भीतर, उन्होंने अपने प्रभावशाली शिक्षण से विद्यालय को मोहित कर लिया था, विशेष रूप से प्राथमिक कक्षाओं को। उनके शिक्षण से बच्चों एवं अभिभावकों में उद्देश्य परिपूर्णता एवं संतुष्टि आयी, जिसके कारण वह बरपेटा जैसे एक छोटे शहर में प्रसिद्ध व्यक्ति से कम नहीं थी।

वह विद्यालय को आवंटित छः शिक्षकों के समूह में से सबसे पहली थीं, जो 2017 के अक्टूबर महीने में विद्यालय में सम्मिलित हुई। उन्होंने शिक्षकों के दूसरे समूह की जगह ली, जिनका पिछले महीने सामूहिक रूप से तबादला हो गया था। उन्हें अपने नए पदस्थापन के स्थान पर पूरी तरह से नए वातावरण - अत्यधिक नमी, शाश्वत बारिश, शांति, लोगों और बच्चों की सादगी, उनकी एक अलग भाषा, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में बातचीत करके की कठिनाइयों के साथ तालमेल बिठाने में ज़रा देर न लगी।

पढ़ाने की सहज क्षमता होने के बावजूद, वह चीजों को हल्के में नहीं लेती है और पूरी तैयारी के साथ हर कक्षा में जाने की कोशिश करती है। हर दिन उनकी हर कक्षा में एक उद्देश्य, तैयारी, ईमानदारी, गर्मजोशी और नियंत्रण होता है।

शिक्षण अधिगम सामग्री, शिक्षण सहायक सामग्री उनकी हर कक्षा को इस तरह से संचालित करते है कि सबसे शांत बच्चे भी उस शानदार और आनंदमय वातावरण में खुद को व्यक्त करने की कोशिश करते है। वह जो भी पाठ पढ़ाती है, बच्चों के विकास के सभी पहलुओं को छू लेती हैं। दृश्य सहायक सामग्री जिसे वह स्वयं श्रमसाध्य रूप से तैयार करती है, बच्चों को ज्ञान और संपूर्ण

समझ की आनंदमय सवारी के लिए ले जाता है।

साथ ही, ऐसा नहीं है कि वह हिंदी और अंग्रेजी दोनों पर अपनी शानदार पकड़ को बेकार जाने दे। उनका व्याख्यात्मक कौशल बच्चों के लिए एक पुरस्कार है। वह सबसे अधिक अंतर्मुखी छात्रों की भी प्रतिक्रियाओं को बाहर लाने में सक्षम है। उनके शैक्षणिक दृष्टिकोण में पहियों के रूप में जो काम करता है, वह है प्रत्येक बच्चे से जुड़ाव और उनके लिए शुद्ध प्रेम। कक्षाएं बड़ी होने के बावजूद (प्रत्येक में करीब 50 छात्र),वह प्रत्येक बच्चे के साथ इतना समय बिताती है कि वह जल्द ही उनकी ताकत, कमजोरियों, व्यवहारिक दृष्टिकोण, प्रत्येक की पारिवारिक पृष्ठभूमि को जान लेती है, जो उन्हें अपनी कक्षा के सीखने के माहौल पर पूरी तरह से नियंत्रण रखने में भरपूर मदद करता है, विशेषकर धीमी गति से सीखने वालें छात्रों के साथ। उनके द्वारा बनाए गए बच्चों के उपाख्यानात्मक अभिलेख(anecdotal records) केस स्टडी की तरह हैं।

स्कूल में अपने साढ़े तीन साल के कार्यकाल के दौरान उन्हें एक बार भी गुस्सा होते या धैर्य खोते नहीं देखा गया है। कक्षा के बेचैन, नटखट, शोर-शराबे वाले बच्चों के साथ उनका व्यवहार उनका अथाह धैर्य और बच्चो के लिए सच्चा प्यार और चिंता दिखाता है और यहीं उनकी विशेषज्ञता का सूचक है। सभी बच्चों के प्रति उनका निष्पक्ष दृष्टिकोण, जो एक सच्चे शिक्षकों की पहचान है, सुगंध की महक है।

वह प्राथमिक अनुभाग में सबसे वरिष्ठ शिक्षिका है और उस क्षमता में, वह स्कूल के अन्य सभी सात प्राथमिक शिक्षकों के लिए एक ममतामयी चिंता दिखाती है, उनके काम में उनकी मदद करती है और जरूरत पड़ने पर उनकी कक्षाएं लेने के लिए भी तैयार रहती है। बैठक के कार्यवृत्त तैयार करना, उनका वितरण करना, अन्य प्राथमिक शिक्षकों के बीच समय-समय पर छोटी-छोटी बैठकें आयोजित करना, शैक्षणिक परिपत्रों की व्याख्या करना आदि उनके द्वारा किए जाने वाले कई कामों में से कुछ काम है।

हालाँकि, कोरोना महामारी की अवधि , शिक्षण के एक अन्य पहलू में अपनी प्रतिभा दिखाने का एक और अवसर बन गई - इस बार ऑनलाइन शिक्षण के रूप में। अप्रैल से जून के महीनों में , पिछले साल लॉकडाउन के प्रारंभिक चरण के दौरान, स्कूल के अन्य सभी शिक्षकों के साथ,

उन्होंने स्कूल के YouTube चैनल के माध्यम से पढ़ाना शुरू किया। न केवल अपनी कक्षाओं के अधिकांश बच्चों को इस दौरान शामिल किया बल्कि देश भर के अन्य स्कूलों में पढ़ने वाले कई अन्य बच्चों को भी इस कठिन समय में शामिल किया। बाद में, जून अंत से, जब Google GSuIte के माध्यम से KVS RO गुवाहाटी द्वारा आधिकारिक तौर पर ऑनलाइन कक्षाएं निर्धारित की गई, तो उन्होंने अपनी ऑनलाइन कक्षाएं लेना शुरू कर दिया जिसे उन्होंने बच्चों के लिए सीखने के अवसरों में बदल दिया और सामूहिक रूप से व्यस्त रखते हुए उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया।

उस कठिन दौर के दौरान उन्होंने महसूस किया कि यह ऑनलाइन कक्षाएँ केवल एक स्कूल के बच्चों तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि अन्य जरूरतमंद बच्चों तक भी पहुँचनी चाहिए। उन्होंने छात्रों की पढ़ाई में मदद करने के लिए अपना खुद का YouTube चैनल - 'EduFIIndIa' खोला।

इस साल 17 जनवरी को उन्होंने मातृत्व अवकाश के लिए आवेदन किया था और अपने गृहनगर चली गई थी। हालाँकि, कहीं ऐसा न हो कि बच्चों की शैक्षणिक रूप से कोई हानि हों इसलिए मातृत्व अवकाश पर होते हुएं भी उन्होंने नई दिल्ली से ही अपनी ऑनलाइन कक्षाएं मार्च के महीने में उसी दिन तक लेना जारी रखा जब वह प्रसव पीड़ा में गई और एक बच्ची को जन्म दिया। उन्होने न सिर्फ़ शैक्षणिक पाठ्यक्रम पूरा कराया बल्कि उत्तर पत्रों का मूल्यांकन भी किया। 6 महीने के बाद, वह स्कूल में अपनी ड्यूटी पर वापस आ गई, उन्होंने कभी भी उन दो महीनों के लिए कोई मुआवजा नहीं मांगा, जो उन्होंने घर से इतनी लगन के साथ काम किया था। असम के बरपेटा शहर में, वह सभी सर्वोच्च गुणों का प्रतीक बन गई है- उच्च स्तर का विषय ज्ञान, ईमानदारी, समर्पण, कड़ी मेहनत, धैर्य, निष्पक्षता, सकारात्मक दृष्टिकोण, समय की पाबंदी, बच्चों और माता-पिता के साथ जुड़ाव और उनके उच्च अधिकारियों के प्रति बहुत अधिक आज्ञाकारिता और कोई आश्चर्य नहीं कि अपने छात्रों के लिए वह एक आदर्श है, जिसका सभी को अनुसरण करना चाहिए।

कंजा लोचन पाठक

के.वि. बारपेटा,

गुवाहाटी

शिक्षक की अनंतता

12

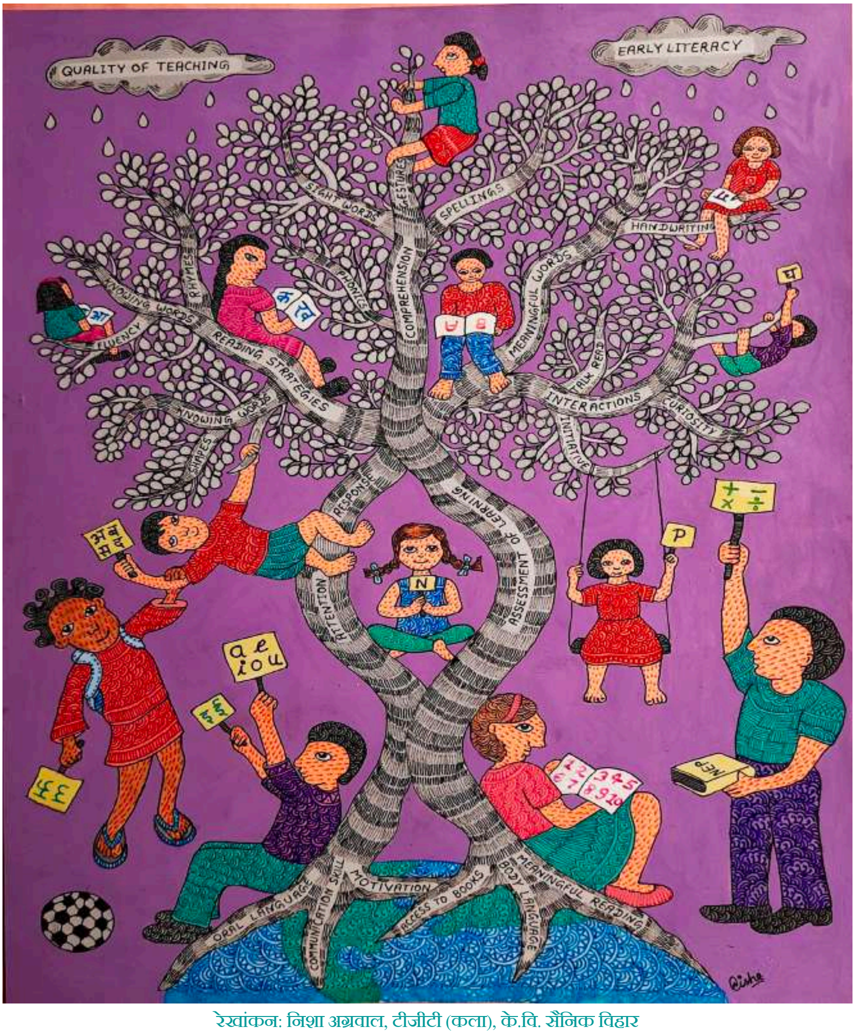

रेखांकन: निशा अग्रवाल, टीजीटी (कला), के.वि. सैनिक विहार

जैसे ही मुझे एक अनुकरणीय शिक्षकके बारे में अपने उच्च अधिकारी द्वारा लिखने के लिए कहा गया ,वैसे ही मेरे अंतर्मन में अपने दायित्व के प्रति पूर्ण समर्पित प्राथमिक शिक्षकका नाम आया ,जबकि मेरे विद्यालय में कई अच्छे और सक्षम शिक्षकहैं लेकिन मैं उनके अलावा किसी और को नहीं चुन सकती थी। मैंने उनके नाम के चयन के लिए निम्नलिखित कारणों पर विचार किया कि आखिर उनका ही नाम मेरे अंतर्मन में क्यों आया?

विद्यालय से उनका जुड़ाव सराहनीय है। वह बहुत ईमानदार,कर्मठ, व्यवस्थित और समय के पाबंद हैं। सौंपे गए दायित्वों के प्रति उनका रवैया हमेशा सकारात्मक होता है। माता-पिता और अन्य लोगों के साथ उनका सम्बन्ध सौहार्दपूर्ण और उत्तरदायी होता है। वह छात्रों, कर्मचारियों और माता-पिता के बीच उच्च सम्मान के अधिकारी हैं। वह बच्चों के लिए एक मिशनरी उत्साह और पिता की तरह देखभाल करने के साथ काम करते हैं। उन्होंने विद्यालय में कब(शिशु) विंग की स्थापना की और उसको सफलतापूर्वक पोषित एवं संचालित किया।

एक प्राथमिक शिक्षक के रूप में उन्हें विभिन्न शैक्षणिक सत्रों के दौरान अलग-अलग विषयों को पढ़ाने के लिए कहा गया था, मैं उन्हें ईवीएस,गणित और अंग्रेजी विषय को एक मास्टर के रूप में पढ़ाते हुए देखकर दंग रह गई थी। उन्हें उन विषयों पर महारत हासिल है, जिन्हें उन्होंने पढ़ाया है। लक्ष्य और उद्देश्य उनकी पाठ योजनाओं और कक्षाओं में बातचीत में परिलक्षित होते हैं। उन्होंने वांछित उत्तर पाने के लिए प्रश्न पूछे। उनका अंग्रेजी उच्चारण, स्वर और प्रवाह छात्रों को विषय को प्रभावी ढंग से सीखने में बहुत मदद करता है।

उनके बारे में मेरे अवलोकन से पता चलता है कि उन्हें छात्रों से बहुत उम्मीदें हैं कि वे सीखते हैं और ज्ञान प्राप्त करते हैं कि नहीं उनकी पाठ योजनाएं और कक्षा गतिविधि का फ़्लोचार्ट इस बात का संकेत है कि उनका विचार है कि छात्र ज्ञान के भूखे न रह जाएँ और शिक्षक को उनकी ज्ञान पिपासा को संतुष्ट करना चाहिए।

छात्रों के साथ बातचीत और संक्षिप्त पुनरावृत्ति के साथ-साथ सीखने के परिणामों के आकलन के अलावा उचित ऑडियो वीडियो और अन्य शिक्षण सहायक सामग्री के साथ दिए गए निर्धारित समय का पूरी तरह से उपयोग करने के लिए उनके द्वारा पाठों की अच्छी तरह से योजना बनाई गई है।

एक कविता-गान, चित्रांकन,नृत्य और नाट्यकरण स्मृति को बढ़ाने में मदद करता है, अवधारण को समझने के साथ-साथ सीखने के परिणाम को बढ़ाता है। वह सबसे ज्यादा खुश तब होते हैं जब बच्चे घर जाते हैं और कविता को जोर से गाते हुए जाते हैं, जो उन्होंने अभी सीखा है।

उनके पास अपनी कक्षा के अध्यापन में सभी छात्रों को शामिल करने की योग्यता और कौशल है, हर छात्र के लिए कुछ है, प्रतिभाशाली,औसत बच्चा या जो हर किसी को सीखने में धीमा है, वह किसी को अछूता नहीं रहने देते, उनका झोला तरह-तरह की चीजों से भरा है, लेकिन वह कभी भी कुछ लोगों को पूरी कक्षा पर हावी नहीं होने देते।

कोरोना महामारी के कारण अचानक हुए लॉक डाउन ने स्कूल व्यवस्था को भारी संकट में डाल दिया है। स्कूल अचानक बंद कर दिए गए। लोगों का सामान्य जीवन अचानक थम गया। शिक्षकों को व्हाट्सएप और गूगल कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाने के लिए कहा गया। समस्या यह थी कि बड़ी संख्या में माता-पिता के पास स्मार्ट फोन नहीं थे, संपर्क नंबर काम नहीं कर रहे थे।

आधुनिक दिनों में आईसीटी के उपयोग के साथ पढ़ाना जरूरी है। वह योजना बनाने और आईसीटी का उपयोग करने में उत्कृष्ट हैं। आईसीटी उपकरणों के उपयोग और संचालन में उनके कौशल को देखने के बाद, उन्हें विद्यालय के प्राथमिक खंड में इन गैजेट्स का प्रभारी बनाया गया था। उनके द्वारा तैयार पीपीटी प्रस्तुतियों में एनिमेशन हैं जो कि उच्च मानकों के अनुरूप अत्यंत प्रभावी हैं।

उन्हें अनुपस्थित छात्रों का पता करने के लिए बहुत जद्दोजहद करनी पड़ी और आखिरकार वह उनका पता लगाने में सक्षम हो गए, उन्हें सिखाया कि गूगल कक्षा में कैसे शामिल हों गूगल कक्षा में असाइनमेंट कैसे अपलोड करें अब उनकी कक्षा में कोई भी ऐसा बच्चा नहीं है जो ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल नहीं है

वह तथ्यों को एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में उपयोग करते हैं न कि एक अंत बिंदु के रूप में वह प्रश्न पूछते हैं , सभी पक्षों को देखते हैं और छात्रों को यह अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं कि आगे क्या होगा। वह यह सुनिश्चित करने के लिए बार-बार प्रश्न पूछते हैं कि वे अनुसरण कर रहे हैं। वह पूरी कक्षा को संलग्न करने की करते हैं और कुछ छात्रों को कक्षा पर हावी नहीं होने

देते और छात्रों को विविध, जीवंत दृष्टिकोणों से प्रेरित करते हैं।

वह अक्सर सम्मेलनों, प्रपत्रों और फोन कॉल के माध्यम से माता-पिता तक पहुंचते हैं। वह स्कूली शिक्षा के संबंध में विभिन्न विकास प्रारूपों से अच्छी तरह वाकिफ है और उन्हें लागू करते हैं।

उनके द्वारा पढ़ाए गए सभी छात्र सफलतापूर्वक उत्तीर्ण हुए।सभी छात्रों को गोल्डन एरो के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया, उनके छात्रों ने अच्छा प्रदर्शन किया और विभिन्न सीसीए गतिविधियों में उचित स्थान प्राप्त किया।

अपने पूरे शैक्षणिक कार्यकाल के दौरान छात्रों को अकादमिक और सह पाठ्यक्रम गतिविधियों में वांछित परिणाम प्राप्त करने में उनका एक उत्कृष्ट योगदान रहा
उनके उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ।

मूल लेख (अंग्रेजी भाषा में)

कुसुमांजलि देवी
मुख्याध्यापिका,
के.वि. वा.से.स्थल, बोरझार

एक प्रेरक विज्ञान शिक्षक

13

रेखांकन: निशा अग्रवाल, टीजीटी (कला), के.वि. सैनिक विहार

केंद्रीय विद्यालय संगठन जैसे प्रतिष्ठित और विशाल शिक्षण संस्थान में जहाँ उन्हें भौतिक विज्ञान शिक्षक के रूप में आगे बढ़ने के कई अदभुत अवसर प्राप्त हुए हैं, ऐसे संस्थान में कार्य करते हुए वे अपने आप को खुशनसीब और गौरवान्वित महसूस करते हैं। के.वि.सं. ने उनके भौतिक विज्ञान शिक्षक बनने के सपने को साकार कर दिया। भौतिक विज्ञान पढ़ाने में उन्हें दिलचस्पी

है, बच्चे पढ़ते समय जब उसमें रूचि लेते हैं तो उन्हें और भी खुशी होती है। उनका मानना है कि उन्हें भौतिक विज्ञान शिक्षक बनने की प्रेरणा जब वे स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहे थे, उनके भौतिक विज्ञान अध्यापक से मिली। वे इस बात को भी स्वीकार करते हैं कि जब उन्होंने भौतिक विज्ञान शिक्षक के रूप में कार्य करना प्रारंभ किया था, तो शुरुआत के कुछ सालों तक कक्षा में विद्यमान परिस्थिति को देखते हुए भौतिक विज्ञान की संकल्पनाओं को सिद्ध करने में उन्हें बड़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। वे विद्यार्थियों द्वारा की गई टिप्पणी कि भौतिक विज्ञान एक बहुत ही कठिन विषय है और उसमें आँकड़े संबंधी प्रश्नों को हल करना और भी कठिन है, तब उन्होंने भौतिक विज्ञान विषय के बारे में बच्चों से उनकी राय जानने के लिए परस्पर विचार-विमर्श करना शुरू किया। कुछ बच्चों ने यहाँ तक कहा कि भौतिक विज्ञान विषय से ही उन्हें डर लगता है।

भौतिक विज्ञान विषय के बारे में बच्चों की मनोस्थिति जानने के लिए उन्होंने विज्ञान, कला और वाणिज्य संकाय के बच्चों के साथ भी विचार-विमर्श किया, जिसमें से कुछ ने तो बताया कि भौतिक विज्ञान शिक्षकों के पढ़ाने का जो तरीका है, उससे हमें यह विषय पढ़ने में कोई रूचि नहीं आती है और आँकड़े संबंधी प्रश्नों को हल करने के लिए उन्हें बताये गए सैद्धान्तिक पहलू, सूत्र और पद्धति समझ में नहीं आती है। उन्होंने बच्चों की प्रतिक्रियाओं को गहराई से समझा और इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि विषय-वस्तु का ज्ञान न हो पाने तथा शिक्षकों के पढ़ाने का तरीका अच्छा न होने के कारण विद्यार्थियों के सीखने और समझने की क्षमता प्रभावित हो रही थी।

बच्चों की इस स्थिति ने उन्हें यह सोचने के लिए मजबूर कर दिया कि विषय के अध्यन-अध्यापन की प्रक्रिया को सरल, सुकर और रूचिकर कैसे बनाया जाये और ऐसा करने के लिए उन्होंने अगले दो सालों तक भौतिक विज्ञान पढ़ाने के लिए एक अलग तरह की युक्ति अपनायी, उन्होंने भौतिक विज्ञान विषय की संकल्पना को सरलता और सहजता से समझाने के लिए हमारे आस-पास पायी जाने वाली चीजें- धागा, स्केल, छोटी धातु की पट्टियाँ, जोड़ने वाले तार, घरों में पाये जाने वाले उपकरणों का प्रयोग किया। उन्होंने कुछ ऐसे प्रयोग भी बनाये जिसे बच्चे स्वयं करके ज्ञान अर्जित कर सकते हैं और विषय की संकल्पना को समझ सकते हैं, दूसरी तरफ उन्होंने विषय के मुख्य कठिन पहलुओं पर भी काफी काम किया।

उन्होंने महसूस किया कि ये मुख्य विषय की संकल्पना हैं जिसे समझाने में उन्हें स्वयं कठिनाई होती थी। इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की जिसके लिए उन्होंने सरल और सहज मॉडल बनाये और धीरे-धीरे वे बच्चों में संबंधित विषय में रूचि पैदा कर सके। उन्हें बच्चों को पढ़ाते समय उनमें बहुत बड़ा बदलाव और उनके चेहरे पर अदभुत खुशी नजर आयी, इसलिए उन्होंने विषय की संकल्पना में स्पष्टता लाने के लिए इस नये प्रयोग और डिजाइन किए गए सरल और सहज मॉडल पर विशेष ध्यान दिया और भौतिक विषय को और अधिक रोचक बनाने का प्रयास किया।

उन्हें याद है कि उनका पहला मॉडल लेंज लॉ पर आधारित था जिसमें उन्होंने लेंज लॉ के सिद्धांत को सिदध करने के लिए चोक कॉइल और प्रकाश फेंकने वाले डाओड्स का प्रयोग किया था। अचानक करेंट जाने पर मैगनेटिक फ्लक्स को निकाल कर या कम करके तथा सरक्यूट ब्रेक होने पर सबके सामने प्रयोग करके करेंट वापस लाने का प्रयोगात्मक प्रदर्शन काफी कठिन था। उनके विद्यार्थी इस प्रयोग को दिखाने के लिए उनसे निवेदन करते थे, जिस पर वे काफी परिश्रम करने के बाद, इस मॉडल को बनाने में सफल हो पाये।

उनकी कक्षाओं को देखने वाले प्राचार्यों / कार्मिकों द्वारा उन्हें काफी प्रोत्साहन मिला, जिन्होंने उन्हें जीट ग्वालियर में 2003 से 2007 तक संसाधक के रूप में कार्य करने का अवसर प्रदान किया। उन्होंने 2008 से 2011 तक के.वि. मॉस्को में भी काम किया।

उनके सीखने - सिखाने की प्रक्रिया में प्रयोग किए गए सरल और सहज मॉडल का बच्चों पर बहुत प्रभाव पड़ता है, उनके पढ़ाने का उद्देश्य भी पूरा होता है। इस प्रयोग से भौतिक विज्ञान की ओर बच्चों में एक अनूठा परिवर्तन देखने को मिला और कई स्लो ब्लूमर्स में सीखने का कौशल भी बढ़ा। मॉस्को में तैनाती के दौरान, शिक्षकों के क्रिया-कलाप का आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत उन्होंने रूस के विद्यालयों के शिक्षकों के लिए कुछ प्रयोगों का प्रदर्शन किया जिसमें उनके सरल और सहज मॉडल को काफी सराहा गया।

कक्षा में पढ़ाते समय सरल और सहज शिक्षण मॉडल का प्रयोग करने पर देखा गया कि न केवल

उनके पी आई में बृद्धि हुई है बल्कि इस विषय में कोई भी बच्चा फेल नहीं हुआ। इस विश्व-व्यापी महामारी में भी, वे इन सरल और सहज मॉडल को तैयार कर रहे हैं और ऑनलाइन माध्यम से पढ़ाई करवाते समय अपने विषय-वस्तु को स्पष्ट करने के लिए वे इनका प्रयोग कर रहे हैं, और बच्चों में ऑफलाइन जैसी प्रतिक्रिया देखने को मिलती है।

उन्हें आयुध निर्माण कारखाना द्वारा उत्कृष्ट विज्ञान शिक्षक का खिताब मिला, वर्ष 2013 में केविसं, हैदराबाद संभाग द्वारा उत्कृष्ट विज्ञान शिक्षक पुरस्कार से नवाजा गया।

ऑनलाइन कक्षायें चलाते समय वे आईपैड का प्रयोग करते हैं, जो एक सर्वोत्तम पद्धति साबित हुआ है। वे आशा करते हैं कि बच्चों के शैक्षणिक क्षेत्र में बेहतर निष्पादन और उनके उज्ज्वल भविष्य निर्मित करने के लिए आगे भी इसी प्रकार इन्हीं भावनाओं और उत्साह से कार्य करते रहेंगे।

डॉ. वी. गौरी
सहायक आयुक्त,
के.वि.सं. हैदराबाद संभाग

एक उत्कृष्ट शिक्षक

14

रेखांकन: निशा अग्रवाल, टीजीटी (कला), के.वि. सैनिक विहार

“घर की तुलना में एक दरवाजा बहुत छोटा होता है, दरवाजे की तुलना में एक ताला बहुत छोटा होता है। चाबी सबसे छोटी होती है लेकिन यह पूरे घर को खोल सकती है .....!!” इस प्रकार एक छोटा विचारशील समाधान बड़ी समस्याओं को हल कर सकता है। यह अतिशयोक्ति नहीं है कि हमारे शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन में वे कुंजी हैं, जो उन्हें असंख्य रहस्यों को उजागर करने में मदद करते हैं, और यहाँ तक की सबसे डरावनी चुनौतियों को सुलझाने के लिए साध्य तरीकों को भी उजागर करते हैं।

केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक-1 जी.सी.एफ., जबलपुर के अपने भौतिक एवं आभाषी दौरों के दौरान, मैंने पाया कि कैसे वहाँ के शिक्षक अपने शिक्षण अधिगम जिम्मेदारियों और पाठ्यक्रम गतिविधियों को पूरा करने के अलावा अपने विद्यार्थियों को बोझमुक्त एवं तनावमुक्त करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे थे। मुझे केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक-1 जी.सी.एफ., जबलपुर के एक शिक्षक द्वारा दिये गए योगदान की प्रशंसा करने का यह एक बहुत ही उपयुक्त अवसर मिला। जब वह अपनी कक्षा में होता है, तो वह एक जादूगर की तरह उल्लेखनीय शैक्षणिक कौशल से अपने विद्यार्थियों को मंत्रमुग्ध कर देता है। एक भाषा शिक्षक के नाते, उनके संचार कौशल छात्रों को उन कौशलों को आत्मसात कर सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। किसी भी सरल से जटिल विषय तक से निपटने की उनका यह रणनीति अद्भुत परिणाम दिया है। वह परिणाम आधारित शिक्षा में विश्वास करते हैं और शिक्षा के मूल में सीखने के परिणामों को रखकर उसका उदाहरण देते हैं, ताकि प्रत्येक सत्र के दौरान उन परिणामों की प्राप्ति सुनिश्चित किया जा सके। कोई भी कक्षा कभी भी सीखने के परिणामों के बिना सफलता की ऊंचाइयों को छूने का सपना नहीं देख सकता है।

अपने विद्यार्थियों से अपेक्षाओं को स्पष्ट करते हुए, वह उन्हें उच्च स्तर की व्यस्तता एवं भागीदारी के साथ क्रियाशील होने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक द्वारा सूचना एवं प्रौद्योगिकी का उपयोग, सीखने की क्रिया को आसान बना देता है। वह अपनी कक्षाओं के दौरान लक्ष्यों को निर्बाध रूप से प्राप्ति हेतु कई मंचों (प्लेटफार्मों) का उपयोग करते हैं। कक्षा में पठन-पाठन के अलावा छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान और देखभाल करने की आवश्यकता पर बल देते हैं। इससे छात्रों को विशिष्ट होने का अहसास होता है, जो लक्ष्यों को साकार करने मेँ अचूक सहायता करता है। उनकी कक्षाओं की यही खास विशेषता, उन्हें दूसरों से अलग करती है। उनके द्वारा बनाए गए

वीडियो-पाठ, अध्याय में अवधारणा को स्पष्ट करने में विशेष रूप से प्रभावी रहे रहें हैं। शिक्षक द्वारा बनाए गए ई-सामग्री छात्रों के लिए काफी लाभदायक हैं। जबलपुर संभाग के शिक्षकों के टीम के हिस्से के रूप में, उन्होंने लॉकडाउन के शुरुआती दिनों में XIIवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए एक शिक्षण सत्र का आयोजन किया।

यह बिल्कुल सच है की ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान छात्रों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना बहुत मुश्किल होता है। उनके द्वारा कक्षाओं के लिए उचित योजना, छात्रों को मोहित एवं व्यस्त रखती है। हालांकि ऑनलाइन कक्षाओं की कुछ सीमाएँ है, फिर भी वे उन शिक्षकों को अवसरों का सागर प्रदान करते है, जो इन परिवर्तनों को आत्मसात करने के लिए तैयार हैं। यह उल्लेख करना काफी सुखद है कि इन विधियों को लागू करने के प्रति उनका दृष्टिकोण आकर्षक एवं परिणामोंन्मुखी है। वह अपने विद्यार्थियों को अपने जीवन में आने वाली समस्याओं को अत्यंत दुर्लभ समझकर नजरंदाज करने के बजाय प्रत्यक्षतः एवं आत्मविश्वास से समाधान के लिए उत्साहित करते हैं।

उनके कक्षाओं में भाग लेना मजेदार होता है क्योंकि वह अपने छात्रों को तनाव एवं गुस्से से मुक्त रखते हैं। वह इस प्रकार से कक्षाएं संचालित करते हैं कि छात्र ऊर्जा एवं सजीवता से ओत-प्रोत रहता है। वह छात्रों को, उनके जीवन कौशल को चमकाने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करते हैं। रचनात्मकता और महत्वपूर्ण सोच कौशल ज़ोर, उनके छात्रों को न केवल ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान संरचित शिक्षण के माध्यम से परिणामी सीख, बल्कि उनका समाजीकरण करते हुए उनके दुख और सुख को साझा करके बहुत आवश्यक मंच प्रदान किया है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन हमेशा से एक अग्रणी संगठन रहा है, जो शिक्षा क्षेत्र में कई नवाचारों एवं प्रयोगों को तैयार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके कारण शिक्षण अधिगम प्रक्रियाएं आकर्षक एवं प्रेरक हो गई है। वह केन्द्रीय विद्यालय के पहिये के अनिवार्य चक्रदंतों में से एक हैं, जिनके परिश्रम ने हमारे छात्रों के जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता को मधुर व सरस बना दिया है।

जे.आर.आर. टोल्कीन के शब्दो में "यदि आप राक्षस के पास रहते हैं, तो उससे निपटने के लिए हमेशा तैयार रहना है।" पौराणिक पक्षी फीनिक्स की तरह, हमलोग भी कोविड-19 के मजबूर संकट, आघात एवं झटके से उबर रहें हैं।

शाहिदा परवीन

सहायक आयुक्त,

के.वि.सं. जबलपुर संभाग

एक उत्साही संगीत शिक्षक

15

रेखांकन: बृजेश महतो, टीजीटी (कला), के.वि. जेएनयू

मार्च 2020 में, कोविड-19 महामारी के कारण देश के सभी विद्यालयों को मजबूरन बंद करना पड़ा, जिसके कारण शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों और परिवारों को निर्देश, नेतृत्व एवं सहायता प्रदान करने के तरीकों में अचानक बदलाव लाना पड़ा।

कोविड-19 संकटकाल के दौरान विद्यालयों के बंद होने और दूरस्थ शिक्षा की ओर अग्रसरता से

शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करने के तरीकों में बदलाव आया है, जो एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है।

कई विद्यालयों में, विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक गतिविधियों के लिए बल्कि समग्र व्यक्तित्व विकास के लिए भी अपने शिक्षकों पर भरोसा करते है। लेकिन जब विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संवाद करने के लिए प्राद्यौगिकी पर निर्भर होना पड़ा, तो उन तरीकों में बदलाव के कारण शिक्षक-गण भी चिंतित हुए।

ध्यान देने योग्य चुनौती एवं चिंता यह थीं कि एक संगीत शिक्षक, जो अपने पूरे शिक्षण-काल में कक्षा शिक्षण के पुराने पारंपरिक तरीकों का उपयोग कर रहीं थीं, वह अपने विद्यार्थियों के साथ ऑनलाइन पाठ संवाद कैसे प्रदान कर सकेंगी, जब वह नवीन ऑनलाइन साधनों / गैजेट्स / सोफ्टवेयर्स के तकनीकी से परिपूर्ण नहीं हैं।

केन्द्रीय विद्यालय, गढ़ा, जबलपुर के एक संगीत शिक्षकद्वारा एक नई पहल कर इस चुनौती का समाधान किया गया।

उन्होंने अपने मोबाइल फोन को हारमोनियम के सामने रखकर कुछ छोटे-छोटे वीडियो बनाने के साथ पहल की शुरुआत की। उन्होंने पाठ्यक्रम की कविताओं से संबन्धित वीडियो बनाया और रेकॉर्ड किया। उन्होंने कक्षा प्रथम से दसवीं की पाठ्य-पुस्तकों के कई हिंदी कविताओं के लिए मधुर संगीत की रचना की। इन वीडियो को विद्यार्थियों के विभिन्न व्हाट्सएप समूहो पर व्यापक रूप से साझा किया।

अपने विद्यार्थियों, उनके माता-पिता एवं साथी शिक्षकों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने के बाद उन्हें विचार आया कि "इन वीडियो से केवल मेरे विद्यालय के विद्यार्थियों को ही क्यों लाभान्वित होना चाहिए ?" इसलिए उन्होंने इस गीतों को रिकॉर्ड कर वीडियो बनाया और उसमें शिल्प, क्रियात्मकता, संगीत, नाटक आदि का समावेश किया। उन्होंने अपना यूट्यूब चैनल "सुर" बनाया और इन वीडियो को ऑनलाइन पोस्ट करना शुरू कर दिया। उन्होंने इन वीडियो के लिंक

फेसबुक, व्हाट्सएप आदि विभिन्न ऑनलाइन मंच (प्लेटफॉर्म) पर भी साझा किया। वर्तमान में इस चैनल पर 89 वीडियो उपलब्ध हैं।

यह पहल बहुत सफल रहा। इन वीडियो से न केवल उनके विद्यालय के विद्यार्थी लाभान्वित हो रहें हैं, बल्कि केंद्रीय विद्यालयों के अलावा अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियो और शिक्षकों को भी मदद मिल रही है। इस क्रियात्मक (इंटेरक्टिव) वीडियो से विद्यार्थियों को अधिक रचनात्मक बनाने में सहायता मिली है। साथी शिक्षक भी इन वीडियो से लाभान्वित हुए हैं और वीडियो का संदर्भ देते हुए कविताओं को मधुर गीतों और क्रियाओ के रूप में पढ़ाने से सीखना सरल हो गया। वास्तव में माता-पिता, साथी शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने इस पद्धति को मददगार पाया, इसे पसंद किया और उत्कृष्ट प्रतिक्रिया दी है।

उन्होंने अपने विद्यार्थियों से संवाद स्थापित करने के लिए और ऑनलाइन कक्षाओं में उनकी भागीदारी एवं रुचि बढ़ाने के लिए कई अन्य रचनात्मक तकनीकों को अपनाया। उन्होंने पाठ्य-पुस्तक के कई कहानियों का नाट्य रूपांतर किया, जिसमे विद्यार्थियों ने कहानियों के पात्रों की भूमिका निभाई। उन्होंने संगीत वाद्ययंत्रों को उन पात्रों में प्रस्तुत किया, जिन्होंने अपना आत्मा परिचय दिया और उनके द्वारा उत्पन्न ध्वनि को प्रस्तुत किया। उन्होंने विद्यार्थियों को या तो उनके शिक्षकों या उनकी किताबों से या उनकी किताबों के विभिन्न चित्रों को शामिल कर, प्राथमिक शिक्षकों के पाठ्यक्रम के अध्यायों के लिए गतिविधि आधारित शिक्षण योजना बनाने में मदद की। प्रत्येक रविवार को, वह अपने विद्यार्थियों को इस कठिन समय में प्रेरित रखने के लिए लघु कथाएँ रेकॉर्ड कर भेजती रहीं।

एस.के. सोनी
प्राचार्य,
के.वि. गढ़ा जबलपुर

16 प्रतिभाशाली शिक्षक

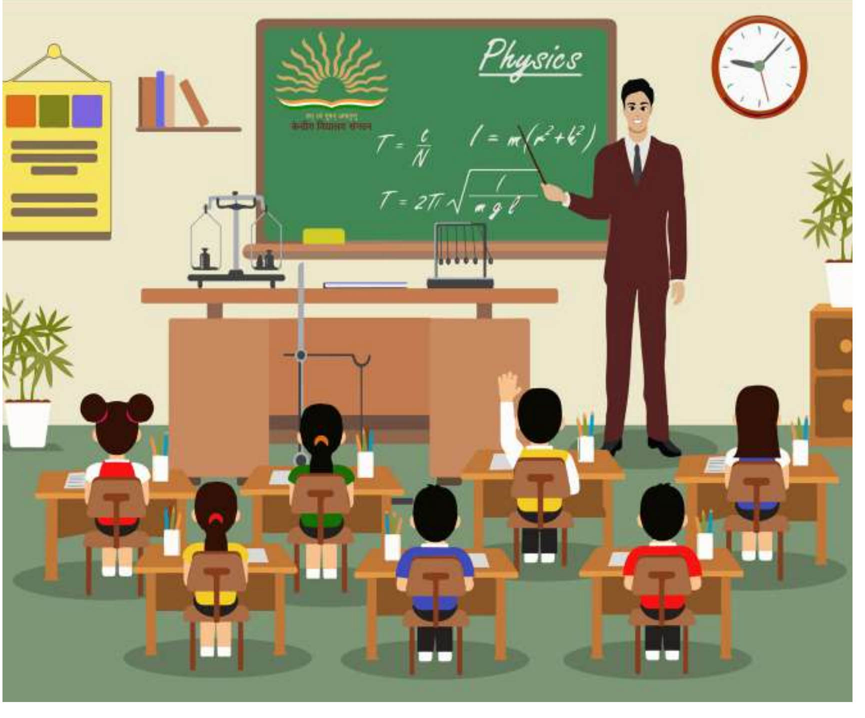

रेखांकन: बृजेश महतो, टीजीटी (कला), के.वि. जेएनयू

शिक्षण का अर्थ केवल अपनी कक्षा को पाठ्यक्रम से जोड़ना, समय पर उसे पूरा करना और विद्यार्थियों के बैच से छुटकारा पाना नहीं है। यह वास्तव में चुनौतीपूर्ण है, और ऐसी चुनौतियाँ जो प्रारम्भ से ही सामने आती है और आगे की राह में बड़ी बाधा बन जाती है। इस बार भी ऐसा ही हुआ जब नोवल कोरोना वायरस जंगल की आग की तरह चारों तरफ फैल गया और पूरी मानवता को

बुरी तरह से अपनी चपेट में ले लिया तथा इसका कोई इलाज भी उपलब्ध नहीं था।

लेकिन जैसा कि हमेशा हर आपदा के समय में एक अवसर होता है और इस अवसर पर मेरे विद्यालय के एक शिक्षक आगे आए,वे हैं विद्यालय के भौतिक विज्ञान के शिक्षक जो अपनी सभी क्षमताओं, व्यवसायिकता, समर्पण व कौशल को साथ लिए और इसके साथ- साथ वास्तविक कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार थे,जो कि तेजी से फैल रहे व राक्षसी रूप ले चुके कोरोना वायरस के कारण सामने आई थी। कोविड-19 वायरस के प्रभाव से पूरा देश थम सा गया था, लेकिन कुछ ही दिनों में मैंने देखा कि मेरा विद्यालय इस खतरे से लड़ने के लिए फिर से नया आकार ले रहा है। यह सब एक ताजा झरने की तरह शुरू हुआ। कुछ ही समय में इन्होनें विद्यालय समाज में एक दल भावना पैदा की और मेरे से टेलीफोन पर पूर्व अनुमति से व विचार विमर्श से उन्होंने प्रत्येक समूह के लिए व्हाट्सएप ग्रुप बनाएं जो कि शिक्षण अधिगम में रीढ़ का कार्य करने वाले थे। विद्यालय में ऑनलाइन मोड में कक्षाओं के सफल संचालन की दिशा में यह पहला छोटा कदम था। सभी शिक्षार्थियों के लिए माइक्रोसॉफ्ट टीम लिंक सॉफ्टवेयर में आईडी तैयार की गई तथा कक्षाओं को पुन: गतिशील बनाया गया।

इनके बारे में मुझे बात करने से एहसास होता है कि कैसे यह भौतिक विज्ञान जैसे कठिन विषय को समझने में आसान बना देते हैं यहां तक कि उस छात्र के लिए भी जो लगातार कम अंक प्राप्त करता आ रहा हो।

इसी क्रम में इन्होंने फ्लिप् क्लासरूम तैयार करने के लिए काफी कुछ सामग्री का निर्माण किया व इसे अपने यूट्यूब चैनल पर अपलोड भी किया जिससे कि विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार सीखने की गति व शैली में इन तक अपनी पहुँच बना सके।

अपनी कक्षाओं के बाद नियमित रूप से वे एप्पल नोटबुक पर सभी छात्रों के साथ तैयार किया एक बहुत ही रंगीन बोर्ड साझा करते हैं, जो उन्हें विषय की सभी जटिलताओं को समझने याद रखने और पुनरावृत्ति करने में मदद करता है। इतना ही नहीं वे छात्रों के साथ उत्कृष्ट नोट्स भी साझा करते हैं, जो उन्हें आसानी से भौतिकी सीखने में मदद करते हैं और उन्हें ऑनलाइन

शिक्षा प्रणाली के दौरान भी प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

छात्रों की उपस्थिति लेने के लिए गूगल फॉर्म का उपयोग करने वाले वे विद्यालय के पहले शिक्षक थे, इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि वे वर्ष 2018 में क्षेत्रीय कार्यालय स्तर के सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार के प्राप्त कर्ता हैं। वे सदा हँसमुख रहते हुए बच्चों के साथ लगातार संपर्क में रहते हैं, इसलिए यह देखा गया है कि उनकी कक्षा में 95% से 100% तक छात्र उपस्थित होते हैं तथा अंतिम समय तक रुकते हैं।

उन्होंने 2016 में रीजनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन अजमेर से 1 साल का मार्गदर्शन एवं परामर्श में नियमित डिप्लोमा पूर्ण किया। यह उन्हें न केवल छात्रों को बल्कि उनके माता-पिता को सलाह देने के लिए एक अच्छा विकल्प प्रदान करता है, खासकर कोविड-19 की महामारी के दौरान। शिक्षण कार्य में परिणामों को लेकर तैयारी करना भी शामिल रहता है।उन्होंने अलग हटकर न केवल आसपास बल्कि दूर-दराज के कई स्कूलों के इस कार्य में स्वयं द्वारा निर्मित विडियो द्वारा मदद की ताकि सीबीएसई के मानदंडों के अनुसार 10वीं व 12वीं की बोर्ड परीक्षा के परिणाम समय पर तैयार किए जा सके।

उनका समर्पण प्रशंसनीय है और फलदायी तरीके से पढ़ाते हुए वे हमेशा सभी कार्यों और चुनौतियों के लिए तैयार रहते हैं। जब भी बिजली की विफलता या इंटरनेट की हानि इनकी निर्धारित कक्षाओं में बाधक होती है तो वे शाम के समय अपने पारिवारिक समय में से समय निकालकर विद्यार्थियों के साथ शिक्षण कार्य से जुड़ते हैं और अपने समर्पण भाव में कोई कमी नहीं रहने देते हैं।

इसके परिणाम स्वरूप इन्हें केंद्रीय विद्यालय संगठन के क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर द्वारा कई जिम्मेदारियां सौंपी गई। सन 2020 में केंद्रीय विद्यालय चूरू में आयोजित टीजीटी विज्ञान के सेवाकालीन प्रशिक्षण तथा सन् 2020 में ही केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 बीकानेर में पीजीटी भौतिकी हेतु आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला में उन्हें संसाधक बनने का अवसर प्रदान किया गया।

मुझे यह उल्लेख करते हुए नहीं भूलना चाहिए कि उन्हें वर्ष 2012 में विज्ञान शिक्षण में सर्वोत्तम अभ्यास के लिए सी.वी. रमन पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। मुझे पूर्ण विश्वास और आशा है कि भविष्य में और भी कई पुरस्कार उनके लिए कतार में होंगे।

चित्रा बिदलान

प्राचार्य,

के.वि. लालगढ़ जाटान

17

एक बहुमुखी शिक्षक

रेखांकन: बृजेश महतो, टीजीटी (कला), के.वि. जेएनयू

इस लेख के माध्यम से मैं विद्यालय के भौतिक विज्ञान के शिक्षक के बारे में वर्णन एवं अपना हार्दिक आभार प्रकट करना चाहता हूँ। इन्होंने केंद्रीय विद्यालयों में अपनी सेवा की शुरुआत सन् 2019 में की। वे शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट और अनुकरणीय कार्य जैसे छात्र प्रबंधन रणनीति, रोज़मर्रा के शिक्षण में तकनीकी का उपयोग, अभिभावकों से संवेदनशील व्यवहार, इन सबसे आगे बढ़कर इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिए शिक्षण सामग्री में विभिन्न शैलियों का समावेश कर स्वयं को एक श्रेष्ठ शिक्षकसिद्ध कर चुके हैं। भौतिक विज्ञान जैसे कठिन विषय को समझने एवं विभिन्न मानसिक स्तर के अन्य लोगों को समझाने में उच्चस्तरीय बौद्धिकता चाहिये, परन्तु वे इस विषय में आनंदानुभूति प्राप्त करते हुए , प्रभावशीलता और अद्वितीय इच्छाशक्ति के साथ हर नवीन समस्या को सुलझाते हैं। गहन विषय ज्ञान के साथ शिक्षण पद्धति की व्यावहार्यता एक व्यक्ति के लिए बहुत विशिष्ट बात है।

छात्रों को कार्यस्थल से जोड़े रखने के लिए इनके द्वारा अपनाई गई विशेष पद्धतियों ने भौतिक विज्ञान को एक सैद्धांतिक से व्यावहारिक विषय के रूप में समझने में छात्रों को सक्षम बनाया है। वे भौतिक विज्ञान के कठिन सैद्धांतिक पहलुओं को एकीकृत प्रयोग तालिकाओं के माध्यम से असाधारण और नवीन विधि निर्माण कर रुचिकर बनाने को प्रयासरत रहते हैं। उन्होंने अटल इनोवेशन मिशन के तहत विद्यालय में अटल टिंकरिंग लैब लाने की पहल की जो इनके लिए साधारण बात है।

यह नवीन पीढ़ी के उन चुनिंदा शिक्षकों में है जो सरल एवं स्मार्ट सामग्री तैयार और वितरण के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हैं। सोशल मीडिया के विभिन्न मंचों का उपयोग करते हुए उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल "फिजिक्स ड्रिफ्ट अकादमी" पर ज्ञान पिपासुओं को आकर्षित किया है। इनके द्वारा आईपैड, मोबाइल फ़ोन, ड्राइंग पैड, नेटबुक जैसे उपकरणों के उपयोग और विशेष संप्रेषण शैली के साथ साथ ऑनलाइन प्लेटफार्म पर भौतिकी के प्रयोग का व्यावहारिक प्रदर्शन इन्हें कई शिक्षकों में अद्वितीय बनाता है। छात्रों को पाठ्यपुस्तकों से बाहर दैनिक जीवन में विज्ञान से अवगत कराना, इनका उद्देश्य और सफलता का मूलमंत्र है। नवाचार, तकनीक और रचनात्मकता के साथ विशिष्ट वैज्ञानिक सिद्धांतों को दैनिक जीवन में जोड़कर प्रदर्शित करना इनकी अनूठी कल्पना है।

छात्र प्रबंधन की रणनीति में ये असाधारण है। कक्षा में छात्रों की रुचि बनाए रखने में इनका विषय ज्ञान एवं विषय को प्रतिपादन शैली बहुत प्रभावी है। वे अपने शिक्षण में प्रत्येक छात्र को जोड़े रखने में दक्ष हैं। वे अपने छात्रों का सटीक मूल्यांकन गूगलशीट और ऐसी ही अन्य विश्लेषणात्मक तकनीकों के साथ माता पिता व छात्रों तक पहुंचाते हैं जो संवेदनशील कक्षा संचालन के साथ साथ विद्यार्थियों के बीच स्वस्थ प्रतियोगी माहौल बनाता है।

यह शिक्षक भले ही उम्र में युवा है, परंतु यह नवीन विचारों का भंडार होने के साथ साथ ही शिक्षण की नवीन समस्याओं का अनूठे समाधान प्रदाता के रूप में साबित हुए हैं। उनका यह रूप विद्यालय में भौतिक एवं ऑनलाइन कक्षा में मिलता है। सफलता के नए सोपान गढ़ने के लिए इनको अपने छात्रों और साथ ही शिक्षकों के लिए प्रेरक बन कर एक लंबी यात्रा तय करनी है।

उम्मेद सिंह
प्राचार्य,
के.वि. क्रं. 2 बीकानेर

आनंदमयी शिक्षा

18

रेखांकन: बृजेश महतो, टीजीटी (कला), के.वि. जेएनयू

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षा के क्षेत्र में एक अग्रणीय संस्था है, जो विश्व स्तरीय शिक्षा प्रदान करने एवं शिक्षक तथा विद्यार्थियों के बीच तालमेल मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। शिक्षण कार्य एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षकके शिक्षाशास्त्र संबंधी ज्ञान, अनुभव और अवधारणाओं का संगम होता है और जिसके सही क्रियान्वयन से शिक्षा के क्षेत्र में कई सर्वोत्तम परम्परायें जन्म लेती हैं। सर्वोत्तम परम्पराओं को साझा करना, किसी भी संस्था के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। वह सभी क्रिया-कलाप, जो कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि जगाते हैं, पठन-पाठन की प्रक्रिया में जुड़ाव उत्पन्न करते हैं एवं शिक्षण अधिगम के लक्ष्यों की प्राप्ति में बेहतर योगदान देते हैं, उन्हें सर्वोत्तम परम्पराओं के रूप में चिन्हित किया जा सकता है।

मैं, केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 जे.एल.ए. बरेली की एक प्राथमिक शिक्षिका द्वारा अपनाये जा रहे कुछ उत्तम क्रियाकलापों को साझा करना चाहती हूँ, जिनके क्रियान्वयन से कक्षा में सकारात्मक वातावरण बना और जिन्होंने विद्यार्थियों की प्रतिबद्धता को उच्चतर दिशा दी।

1. कठपुतलियों के माध्यम से कहानी वाचन :-

कठपुतलियों के माध्यम से कहानी सुनना एक अद्भुत शैक्षणिक तकनीक है। यह कहानियों को जीवंत करती है, सुनाने वाले विद्यार्थी और सुनने वाले समूह, दोनों ही को अत्यधित आनन्दित करती है। मैंने देखा कि बच्चों को पुरानी पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, नोटबुक्स, चूड़ियों या अन्य अनुपयोगी सामग्री से छोटे-छोटे कट-आउट्स बनाना सिखाया गया। इन कट-आउट्स का उंगलियों में प्रयोग कर कठपुतली बनाई और इनके माध्यम से जानी-पहचानी, ज्ञानवर्धक कहानियाँ सुनाई।

इस तकनीक ने बच्चों की रचनात्मकता एवं सृजनशीलता को बढ़ाया। उनके मौखिक संचार कौशल को मजबूत किया और सर्वाधित महत्वपूर्ण बात है कि यह उन्हें व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से विचारों, भावनाओं एवं अवधारणाओं को समझने में मदद कर रहा है।

RUDRANSH PRAJAPATI (Class- 4A)

https://youtu.be/2E2OANxvtYE

NIRVIKAR AZAD (Class- 3A)

https://youtube.com/shorts/5M89Fuk5ML4

https://youtu.be/4KW2-WMWDnY

Other videos can be watched at :

@CREATIVE CORNER RITU KV JLA BAREILLY

2. समन्वित संख्यात्मक खेल :-

इस शब्द खेल अथवा शब्द खेल पहेली में, विद्यार्थी 'स्क्रैबल' गेम की तरह शब्द बनाते हैं और उन्हें अपने शब्दों को बनाने में उपयोग किये गये अक्षरों की संख्या के अनुसार अंक मिलते हैं। छात्र दिये गये अंकों का जोड़ या गुणा भी कर सकते हैं। यह एक बहु विषयक खेल है, जिसे किसी भी संख्या में छात्रों द्वारा एक साथ खेला जा सकता है। इस खेल ने शब्दावली और वर्तनी जैसे- भाषा कौशल व महत्वपूर्ण घटकों को विकसित करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के संख्यात्मक कौशल को भी मजबूत करने में मदद की है।

मैंने पाया कि सरल होते हुए भी, शिक्षिका द्वारा नियोजित इन तकनीकों द्वारा शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों का सक्रिय प्रतिभाग रहा। लचीले शिक्षण दृष्टिकोण एवं क्रियाकलाप आधारित आनन्दपूर्ण निर्देशात्मक अभ्यास, न केवल विषयवस्तु की समझ विकसित करने में सहायक रहे बल्कि, इनसे विद्यार्थियों एवं शिक्षिका के बीच एक गहरा भावनात्मक संबंध भी बना जो कि, शिक्षण अधिगम के लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुआ।

प्रीति सक्सेना

सहायक आयुक्त,

के.वि.सं. लखनऊ संभाग

19

भाषा शिक्षक की श्रेष्ठतम रचनात्मक शैली

रेखांकन: प्रशांत यादव, टीजीटी (कला), के.वि. सलोह

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नैतिक मूल्यों की स्थापना एवं व्यक्तित्व का परिष्कार करना है। एक विद्यार्थी को वास्तविक अर्थ में 'मनुष्य' के रूप में विकसित करने की प्रक्रिया में शिक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण सोपान है। विद्यार्थियों में निहित अनंत संभावनाओं को सकारात्मक एवं सृजनशील ढंग से ऊर्जस्वित करते हुए एक समतामूलक समाज की संकल्पना को साकार करने के गुरुतर दायित्व का निर्वहन एक शिक्षक के द्वारा ही संभव है।

मेरे विद्यालय में ऐसे शिक्षक हैं, जो विविध शैक्षिक, सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं से युक्त छात्र/छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु अत्यंत कुशलतापूर्वक योगदान सुनिश्चित करते हैं। इसी संदर्भ में विद्यालय की अंग्रेज़ी भाषा शिक्षिका का उल्लेख अत्यंत प्रासंगिक है। वह अत्यंत निष्ठावान, स्नेही व उदार है तथा विद्यार्थियों को सार्थक अधिगम के अवसर उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों में स्वेच्छापूर्वक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करती हैं। पाठ्य सहगामी गतिविधियों के आयोजन में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। मैं शिक्षण-अधिगम को सार्थक एवं प्रभावी बनाने हेतु उक्त शिक्षिका द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समाविष्ट सर्वोत्तम प्रथाओं का वर्णन करना चाहता हूँ।

उक्त शिक्षिका की कक्षा प्राय: एक प्रेरणादायक सुविचार के प्रस्तुतीकरण के साथ आरंभ होती है। तत्पश्चात छात्र-परिचर्चा द्वारा उक्त सुविचार का निहितार्थ स्पष्ट किया जाता है। निश्चय ही यह अभ्यास समस्त शिक्षार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।

वह विभिन्न क्षमताओं एवं अधिगम शैली से युक्त विद्यार्थियों के अनुरूप पाठ योजना निर्मित करती है, ताकि वे संबंधित पाठ को भली-भाँति आत्मसात कर सकें तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में अपेक्षित सहभागिता सुनिश्चित कर सकें। यदि कुछ विद्यार्थियों को प्रदत्त कार्य कठिन प्रतीत होता है, तो शिक्षिका उसमें आवश्यकतानुसार संशोधन करती हैं। वह समस्त विद्यार्थियों के लिए संसाधन विशेषज्ञ की भूमिका निभाते हुए ऐसे लिंक्स व साइट्स की जानकारी भी उपलब्ध कराती हैं, जहाँ से वे उत्कृष्ट कोटि की अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। सामान्य कक्षाओं के दौरान अपनी सक्रिय उपस्थिति सुनिश्चित करते हुए वह प्रश्नोत्तर, संकेतात्मक अथवा व्याख्यात्मक गतिविधियों द्वारा छात्र/छात्राओं का मार्गदर्शन करती हैं तथा कार्य पूर्ण करने हेतु प्रोत्साहित करती हैं। तत्पश्चात विद्यार्थियों को स्वलिखित सामग्री कक्षा में पढ़कर सुनाने हेतु निर्देशित किया जाता है। इस प्रकार न केवल विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन होता है, अपितु वे प्रशंसा पाने की इच्छा से कक्षा में पठन-पाठन आरंभ होने से पूर्व ही स्वाध्याय द्वारा पाठ तैयार करने हेतु प्रोत्साहित भी होते हैं।

शब्द-रचना–शिक्षिका विद्यार्थियों को क्लिष्ट शब्दों से परिचित कराते समय इस युक्ति का प्रयोग करती है। किसी नवीन शब्द का ज्ञान कराते समय विद्यार्थियों को शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग, प्रत्यय एवं मूल शब्द, शब्दार्थ, पर्यायवाची, विलोम शब्द व शब्द-रूपांतरण से अवगत कराया जाता है। उक्त समस्त कार्यों में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता रहती है। शब्द आधारित खेल–यह एक रचनात्मक युक्ति है, जो विद्यार्थियों को आनंदित करने के साथ ही प्रतिस्पर्धात्मक अधिगम में भी सहायक होती है। स्पेल

बी, पज़ल, हैंगमैन, बिंगो,स्क्रैबल, ऑड वन आउट आदि इसी प्रकार के खेल हैं। शब्द खोज– विद्यार्थी पाठ पढ़ते समय समानार्थी एवं विलोम शब्द चिन्हित करते हैं। इसके अतिरिक्त प्रात:कालीन सभा में प्रस्तुत "आज का शब्द" को कक्षा के श्यामपट्ट पर उसके अर्थ एवं हिंदी अनुवाद सहित लिखना एक दैनिक गतिविधि है।

प्राय: सभी बच्चे कहानियाँ सुनना पसंद करते हैं। अत: कहानी कथन कक्षा में विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने की सर्वोत्तम विधियों में से एक है। प्रत्येक पाठ के अंत में, कक्षा में समान विषय से संबंधित एक कहानी या उपाख्यान प्रस्तुत करने हेतु विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

प्रत्येक पाठ या कविता पूर्ण होने के पश्चात विद्यार्थियों को उक्त पाठ में निहित नैतिक मूल्यों को चिह्नित करने हेतु प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों द्वारा सही रूप से चिन्हित किए गए नैतिक मूल्यों को श्यामपट्ट पर लिखा जाता है। तत्पश्चात वे पाठ में प्रयुक्त मुहावरों एवं लोकोक्तियों पर विचार करते हैं। यदि विद्यार्थी उन्हें पहचानने में सक्षम नहीं होते, तो बहु विकल्पीय प्रश्नों के रूप में उनका अभ्यास कराया जाता है। उक्त समस्त गतिविधियाँ विद्यार्थियों की भाषा एवं अभिव्यक्ति को समृध्द करती हैं।

जब मूलभूत अनुभव में चिंतन, सहयोग व हस्तांतरण के तत्वों को समाहित कर दिया जाता है, तब अनुभव आधारित, परियोजना आधारित एवं कार्य आधारित अधिगम अनुभवात्मक हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप एक सामान्य गतिविधि भी सीखने के अवसर में परिवर्तित हो जाती है। उक्त शिक्षिका अपनी शिक्षण पद्धति में अत्यंत प्रभावी ढंग से इसका प्रयोग करती है। उदाहरणार्थ – विद्युत विभाग को संबोधित एक शिकायती पत्र श्यामपट्ट या स्क्रीन पर प्रदर्शित किया जाता है। तत्पश्चात उसके प्रारूप एवं विषयवस्तु पर समूह चर्चा आयोजित की जाती है। जब शिक्षिका चर्चा से संतुष्ट हो जाती है, तब विद्यार्थियों को पुस्तक विक्रेता / अमेज़ॉन ऑनलाइन शॉपिंग / नागरिक प्राधिकरण आदि से संबंधित अन्य शिकायती पत्र लिखने का कार्य दिया जाता है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों को विषयवस्तु के निहितार्थ को आत्मसात करते हुए मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति हेतु प्रेरित किया जाता है। विद्यार्थियों की रूचि, सहभागिता एवं कल्पनाशीलता को जागृत करने के उद्देश्य से उन्हें कक्षा में स्वयं के अनुभव या अपने संपर्क में आने वाले अन्य व्यक्तियों के अनुभव साझा करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है।

कोविड-19 संक्रमण काल में उक्त शिक्षिका ने ऑनलाइन शिक्षण की आवश्यकता अनुभव करते हुए शिक्षण कार्य में नवीनतम तकनीक का समुचित समावेश किया। शिक्षिका द्वारा प्रभावी शिक्षण एवं

विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के आकलन हेतु शिक्षण पद्धति में मूल पाठ, ऑडियो, वीडियो, स्थिर छवियों व ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी का अत्यंत संतुलित उपयोग किया जाता है। निश्चय ही यह अभ्यास विद्यार्थियों को सार्थक अधिगम अनुभव प्रदान करता है। प्राय: प्रत्येक पाठ या कविता संबंधी शिक्षण कार्य पूर्ण होने के पश्चात गूगल फॉर्म प्रश्नोत्तरी के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा अर्जित ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है। शिक्षिका KAHOOT व QUIZIZ आदि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का अत्यंत प्रभावी उपयोग करती है।

प्राय: प्रत्येक पाठ में ऐसे कुछ क्षेत्र होते हैं, जो विद्यार्थियों को कठिन प्रतीत होते हैं। ऐसी स्थिति में, सहज एवं सुगम अधिगम हेतु उक्त शिक्षिका अपने सर्वोत्तम संसाधन – विद्यार्थियों को सहकर्मी शिक्षण हेतु आमंत्रित करती है। यह सर्वविदित है कि सर्वोत्तम शिक्षण समान आयु के व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है, क्योंकि उनकी विचार शैली भी समान होती है। अत: कक्षा में विद्यार्थी इस कार्य को अत्यंत कुशलतापूर्वक एवं सफलतापूर्वक संपादित करते हैं। मैंने कक्षा निरीक्षण के दौरान पाया कि यह अभ्यास आश्चर्यजनक परिणाम सुनिश्चित कर सकता है। समस्त विद्यार्थी शिक्षिका द्वारा आयोजित उक्त सत्रों के प्रति अत्यधिक रूचि प्रदर्शित करते हैं। शिक्षिका के शब्दों में –"मेरे कुछ विद्यार्थी मुझसे बेहतर पढ़ाते हैं।"

उनकी कक्षा में प्रत्येक माह में दो बार वाद-विवाद, वार्ता एवं परिचर्चा का आयोजन किया जाता है। चयनित विषय पढ़ाए गए पाठों में निहित भावों एवं विचारों से संबद्ध होते हैं। जो आत्मविश्वासी वक्ता नहीं हैं अथवा प्रतिधारणा संबंधी समस्या से ग्रस्त हैं, उन्हें स्वयं द्वारा लिखित सामग्री को पढ़कर बोलने की अनुमति दी जाती है। कभी-कभी छात्र शिक्षिका द्वारा प्रदत्त निर्देशों के अनुसार 5-बिंदु पैमाने पर प्रदर्शन का आकलन करते हैं।

अधिगम के प्रति एक स्वतंत्र एवं सक्रिय दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य से छात्र/छात्राओं को अधिगम हेतु स्वयं योजनाएँ निर्धारित करने एवं उनके प्रति उत्तरदायी बनने की अनुमति दी जाती है। विषय से संबंधित ऐसे प्रकरण, जिनमें चिंतन हेतु विभिन्न संभावनाएँ निहित होती हैं, वहाँ पूर्वनियोजित पद्धति के आधार पर शिक्षण नहीं किया जाता, अपितु विद्यार्थियों को स्वयं निष्कर्ष पर पहुँचने हेतु पर्याप्त स्वतंत्रता दी जाती है। उन्हें बताया जाता है कि कुछ स्थितियों में एक से अधिक सही उत्तर हो सकते हैं। अत: ऐसे प्रश्नों को शिक्षण प्रक्रिया में सम्मिलित करना, जिनके माध्यम से किसी की कल्पना को असीम विस्तार दिया जाता है तथा प्रत्येक उत्तर की सराहना की जाती है, न केवल शिक्षकके लिए अपितु विद्यार्थियों के लिए भी सदैव लाभदायक सिद्ध होता है।

उक्त शिक्षिका का संप्रेषण कौशल अद्वितीय है। वह मद्धिम किंतु स्पष्ट स्वर में बोलती है। वह अपने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझती है, तदनुरूप शिक्षण एवं आकलन हेतु विविध पद्धतियों का प्रयोग करती है। उनके द्वारा विद्यार्थियों की प्रत्येक उपलब्धि की सराहना की जाती है तथा उन्हें उदारतापूर्वक पुरस्कृत किया जाता है। शिक्षिका द्वारा प्रदत्त कार्य अत्यंत वैविध्यपूर्ण होते हैं, यथा – प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, अनुभवात्मक, स्वतंत्र एवं संवादात्मक। इन कार्यों में समस्त विद्यार्थी अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक प्रतिभाग करते हैं। उनके प्रयासों को यथेष्ट महत्त्व व प्रोत्साहन दिया जाता है तथा उनकी सराहना की जाती है।

शिक्षिका एवं विद्यार्थियों के मध्य उचित सामंजस्य है। उनके पारस्परिक संबंध अत्यंत आत्मीयतापूर्ण हैं। उनकी कक्षा में सदैव सकारात्मक वातावरण रहता है, जो विद्यार्थियों को सीखने हेतु प्रेरित करता है। विद्यार्थी शिक्षिका के अपेक्षित सहयोग हेतु पूर्णत: आश्वस्त रहते हैं। कक्षा में अनुपस्थित छात्र/छात्रा से दूरभाष के माध्यम से व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जाता है। सुरक्षा, देखभाल व चिंता की यह अनुभूति विद्यार्थियों में शिक्षिका के प्रति विश्वास जगाती है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी उनके साथ अपनी पारिवारिक समस्याएँ भी निस्संकोच साझा करते हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि उक्त शिक्षिका उदारमना, संतुलित एवं सजग योजनाकार हैं; विद्यार्थियों के विकास में सकारात्मक परिवर्तन सुनिश्चित करने की दृष्टि से एक उत्कृष्ट प्रेरक हैं।

आर.एन. वडालकर
प्राचार्य,
के.वि. आईआईटी कानपुर

एक कर्मठ शिक्षक की गाथा

20

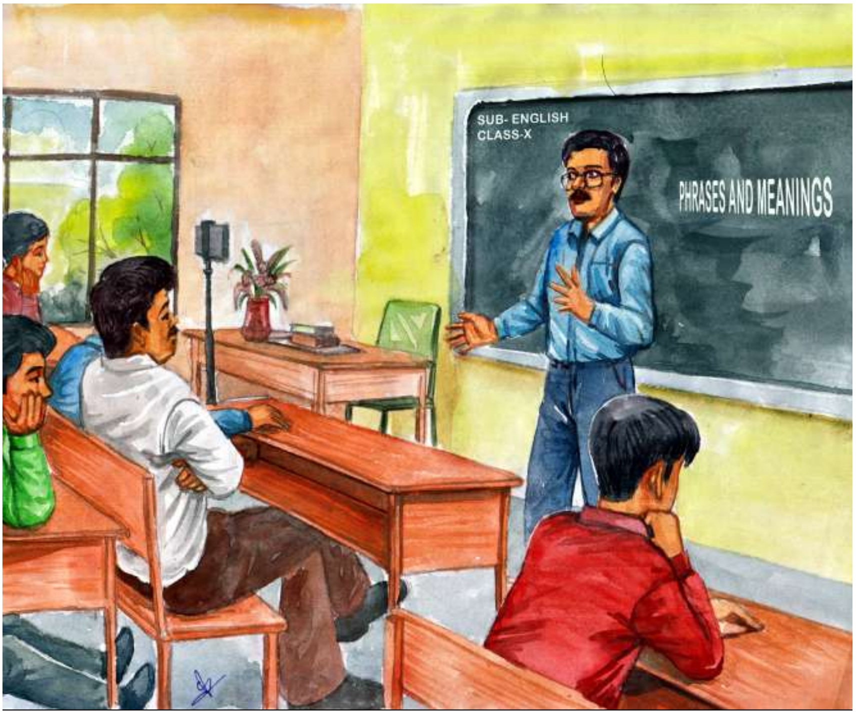

रेखांकन: प्रशांत यादव, टीजीटी (कला), के.वि. सलोह

केंद्रीय विद्यालय में अपने शिक्षक के रूप में सेवा-काल के दौरान मुझे अन्य शिक्षक साथियों से उनके शिक्षण-गतिविधियों/शिक्षण-पद्धति के बारे में जानने अथवा निरीक्षण का बहुत सीमित अवसर ही मिलता था। परन्तु मेरे प्राचार्य के रूप में सेवा करते हुए मुझे कई कर्मठ, सेवा में समर्पित एवं प्रयोगवादी शिक्षकों के शैक्षणिक क्रिया-कलाप एवं उनके द्वारा किये गए शिक्षण कार्य तथा

विद्यार्थियों के साथ सामंजस्य को नजदीक से देखने का अवसर प्राप्त हुआ।

ऐसे ही संस्मरण की याद ताजा हो जाती है, जब मैंने वर्ष 2010 में केंद्रीय विद्यालय, ओ०एन०जी०सी अगरतला में प्राचार्य के रूप में कार्य-भार ग्रहण किया। केंद्रीय विद्यालय, ओ०एन०जी०सी अगरतला एक प्रोजेक्ट स्कूल होने के नाते सभी आधारभूत संरचनाओं एवं सुविधाओं से परिपूर्ण था। अतः विद्यार्थियों, समाज के प्रबुद्ध-जनों के साथ-साथ ओ०एन०जी०सी के अधिकारियों की विद्यालय से काफी अपेक्षाएं थी, जिस पर खरा उतरना सदैव एक चुनौतीपूर्ण एवं प्रेणादायक अनुभव रहा। विद्यालय में उपलब्ध मूलभूत अधिसंरचानाओं, अनुभवी शिक्षकों के उत्कृष्ट योगदान के कारण विद्यालय स्कूली शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में जाना जाता था। शिक्षकसदैव ही विद्यार्थियों के जीवन में एक प्रकाश-पुंज, मर्यादित आचरण एवं विद्यार्थी जीवन में उच्च माप-दण्डों को स्थापित कर उन्हें निर्धारित लक्ष्यों तक पहुँचाने का स्रोत होते हैं।

विद्यालय की विभिन कक्षाओं के निरीक्षण क्रम में मैंने एक दिन अनुभव किया कि विद्यालय की कक्षा-10 "अ" में बिलकुल शांति है। मुझे लगा कि शायद कक्षा में कोई विद्यार्थी नहीं हैं या वे खेल के मैदान में गए होंगे। परन्तु जैसे ही मैंने कक्षा में प्रवेश किया मैंने पाया कि अंग्रेजी विषय के एक शिक्षककक्षा में विद्यार्थियों के साथ शिक्षण कार्य में तल्लीन थे। इससे मेरी उत्सुकता और बढ़ गयी तथा मैंने कक्षा में कुछ और देर तक बैठने का निश्चय किया। हालांकि शिक्षक की आवाज कुछ मध्यम सुर की थी परन्तु विद्यार्थियों को बांधने वाली। शिक्षकद्वारा की जा रही उत्साहवर्धक शिक्षण एवं नाटकीय रूप में विषय-वस्तु के प्रस्तुतीकरण से सभी विद्यार्थी खुद को संयोजित किये हुए थे।

उत्सुकतावश मैंने एक दिन पुनः इसी शिक्षकके किसी अन्य कक्षा में जाने का मन बनाया, यह देखने के लिए कि क्या शिक्षक द्वारा अपनाई जा रही शिक्षण-पद्धति अन्य कक्षाओं में भी कारगार है। कक्षा में थोड़ी देर बैठने के उपरांत अंततः मैं इस कर्मठ एवं निपुण शिक्षकसे अत्यंत प्रभावित हुआ। यह शिक्षक न केवल शिक्षण कार्य में अपितु विद्यालय की अन्य गतिविधियों जैसे- सांस्कृतिक कार्यक्रम, वार्षिक उत्सव, इंटीग्रीटि क्लब आदि में भी महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

ऐसे प्रेरणादायक एवम् कर्मठ शिक्षक के साथ कार्य करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हुई तथा मैं ऐसे शिक्षकों के केंद्रीय विद्यालय संगठन में उनके योगदान हेतु अपना आभार प्रकट करता हूँ।

विनोद कुमार

उपायुक्त,

के.वि.सं. रायपुर संभाग

21

जिनके लिए शिक्षा एक मिशन है

रेखांकन: प्रशांत यादव, टीजीटी (कला), के.वि. सलोह

शिक्षकपूरे देश का पथ- प्रदर्शक होता है। वह एक विद्वान समाज के निर्माण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अपने दर्शकों की आवश्यकता के अनुसार अपने कार्यों में बहुत सारे श्रम से अज्ञानता को दूर करता है। एक अच्छा शिक्षक प्रत्येक छात्र के भीतर छिपे हुए खजाने की खोज करता है। दरअसल, एक शिक्षक की जीवन शैली बहुत ही अलंकृत होती है और उसके

अंदर कोई घमंड या ईर्ष्या नहीं होती।

मैं उन्हें एक भंडार, ज्ञान के एक ट्रांसमीटर, मूल्य प्रणालियों के धारक और सहानुभूति पूर्ण श्रोता और सलाहकार के रूप में जानता हूँ। वह छात्रों के दिमाग को आकार देने में मदद करती है। वह एक शांत और ईमानदार कार्यकर्ता है। एक दूर दृष्टि वाली शिक्षक, वह दूसरों के लिए एक आदर्श है। वह सद्गुणों , पूर्णता,गतिशीलता और निष्ठा की प्रतिमूर्ति है। उसके आस-पास हर कोई कुछ नहीं , बल्कि सर्वश्रेष्ठ के लिए प्रयास कर रहा है।

वर्ष 1992 में केन्द्रीय विद्यालय एम सी एल , डेरा, तालचेर में पी जी टी भौतिक शास्त्र के रूप में अपनी पोस्टिंग के दौरान मुझे उनके बारे में पता चला। वह पड़ोसी विद्यालय में टी जी टी अंग्रेजी के रूप में कार्यरत थी जहाँ मेरी पत्नी भी कार्यरत थी। चूंकि हम एक ही परिसर में रह रहे थे, इसलिए मुझे विभिन्न हितधारकों से शिक्षक के बारे में बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही थी।

एक शिक्षक और मार्गदर्शक के रूप में , उन्होंने समुदाय के लिए निस्वार्थ सेवा की और अपने छात्रों में राष्ट्रीय एकता और श्रम की गरिमा के मूल्यों को बढ़ावा दिया। उच्च सौन्दर्य , सामाजिक,साँस्कृतिक और मानवीय मूल्यों वाली शिक्षक, उन्होनें कक्षा के अंदर और बाहर अपने छात्रों के बीच इसे विकसित किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राचार्य के रूप में अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद, वर्ष 2006 में केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1 कटक में मेरे स्थानांतरण पर, मुझे उन्हें करीब से देखने का अवसर मिला। उनके लिए अध्यापन केवल एक नौकरी या, पेशा नहीं , बल्कि एक आजीवन मिशन था।वह सही मायने में एक लीडर, फैसिलिटेटर, मैनेजर, सुपरवाइजर, केयरटेकर,को-आर्डिनेटर, आर्गनाइजर और काउंसलर थीं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि उन्होंने एक संरक्षक के रूप में कई भूमिकाएँ निभायी।

एक शिक्षिका के रूप में वह अपने विषय में पूरी तरह से निपुण थीं , उन्होंने अपने शिक्षण प्रक्रिया को अद्वितीय, सार्थक और आनंददायक बनाया। अपने सभी प्रयासों, अद्वितीय प्रतिबद्धता,

नैतिकता और समर्पण के साथ उन्होंने सभी वर्गों से सम्मान प्राप्त किया। वह अपने छात्रों और अभिभावकों की पसंदीदा थीं। संख्यात्मक और गुणात्मक परिणामों के लिए क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा उनकी सराहना की गयी।

उनके प्राचार्य के रूप में, मुझे अपना अनुभव याद है , जब मैं अपने दौरों पर था, उन दिनों सतत् और व्यापक मूल्यांकन शुरू किया गया था। जब मैं एक कक्षा से दूसरी कक्षा में आगे बढ़ रहा था तो मैंने देखा कि सभी छात्र चुप थे और अपनी आँखें बंद कर चुके थे। शिक्षिका धीरे से कुछ बता रही थी। मैं रुककर सुनने लगा। वह छात्रों को एक हिल स्टेशन की सुंदरता, बर्फ से ढँके पहाड़ों, सुंदर फूलों की वादियों, रंग-बिरंगे पक्षियों, झरनों आदि के बारे में बता रही थी। मैंने कमरे में प्रवेश किया और देखने के लिए पीछे बैठ गया। पाँच मिनट के बाद यह ख़त्म हो गया। छात्रों ने अपनी आँखें खोली और हिलस्टेशन और उसकी मंत्रमुग्ध कर देने वाली सुंदरता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उत्साहित थे। बाद में , बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि शिक्षकने उन्हें एक डेमो दिया कि कैसे भाषा और शब्दावली के प्रयोग सहित एक रचनात्मक पैसेज लिखना है। एक बच्चे ने पूछा कि वह ऐसी जगह पर नहीं गया तो वह इस तरह के पैसेज कैसे लिख सकता है। शिक्षक ने व्यापक पढ़ने का सुझाव दिया ताकि वह अपनी कल्पना को मिलाकर इसका उपयोग कर सके। उसने छात्रों को फिर से पुस्तकालय का बार-बार उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। परोक्ष रूप से उन्होंने छात्रों को पढ़ने और लिखने के कौशल में प्रशिक्षित किया।

मैं उनके एक छात्र को उद्धृत करना चाहूँगा – " मुझे याद है जब उन्होंने हमें एक अध्याय पढ़ाया था जिसमें बारिश का वर्णन किया गया था .... यह खूबसूरती से व्यवस्थित किया गया था , लेकिन कठिन अभिव्यक्तियों के कारण जब शब्दकोश के माध्यम से समझने की कोशिश की तो सारे आनंद गायब हो गए। लेकिन जब हमारी शिक्षिका ने ऊटी में अपने अनुभवों को हमारे साथ साझा किया तो बहुत आनंद आया।"

एक अन्य छात्रा ने अपना अनुभव साझा किया। उसे अपनी शिक्षकसे बहुत कुछ सीखने को मिला। वह डी एच लारेंस की कविता "स्नेक" थी। उसने ऐसे प्रश्न पूछे जिसमें पाठ की व्याख्या

की आवश्यकता थी। छात्र उत्तर देने के लिए उठा और सतही अर्थ को समझते हुए एक सरल संस्करण में अनुवाद किया। तब शिक्षक ने गहरा अर्थ समझाया लेकिन छात्र इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था। अन्य शिक्षकों के विपरीत उसने छात्र को शांत रहने और बैठने के लिए नहीं कहा, उसने इसे स्पष्ट रूप से समझाया और छात्र उन दो पंक्तियों के अर्थ से अचंभित था।

हालांकि सतही अर्थ सरल था , लेकिन गहरे अर्थ में इसके भयावह शब्दों के जाल में बुने हुए मनुष्यों के लिए एक संदेश था। छात्र उस दिन को याद करता है कि वह पाठ का अर्थ और धैर्य सीख सकता था जो कि उसके जैसे जोरदार और पागल व्यक्ति को संभालने के लिए आवश्यक है और महत्त्वपूर्ण रूप से समर्पण जो शिक्षक के पास अपने छत्रों के लिए था। यह शिक्षक की जिम्मेदारी को प्रदर्शित करता है।

वह एक संरक्षक है, जिनके लिए शिक्षण एक जुनून है जिसने कला को जन्म दिया है अपने छात्रों में लेखन और सीखने के लिए प्यार।

वह एक पूर्ण व्यक्तित्व हैं, जो उनके दयालु व्यवहार, खुले दिमाग, खुशमिजाज और मिलनसार स्वभाव के संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति से सलाम की पात्र हैं।

यह शिक्षिका न केवल एक शिक्षक है, बल्कि एक संरक्षक, दार्शनिक, पथ-प्रदर्शक, एक मित्र और सबसे बढ़कर बच्चों के लिए एक सरोगेट माता-पिता का एक सुंदर समामेलन है। मेरी राय में वह एक इसका एक आदर्श उदाहरण है :

"गुरु ब्रह्मा, गुरु विष्णु, और गुरु देवो महेश्वर"

अशोक कुमार मिश्रा

सहायक आयुक्त, के.वि.सं. रायपुर संभाग

ममतामयी संत को नमन

22

रेखांकन: प्रशांत यादव, टीजीटी (कला), के.वि. सलोह

"शिक्षकअनंत काल को प्रभावित करते हैं। कोई नहीं बता सकता कि
उनका प्रभाव कहाँ रुकता है।" - हेनरी ब्रूक्स एडम्स

जब भी मैं अपने खुद के कैरियर को देखती हूँ तो सोचती हूँ कि कैसे मैं बिना गाइड और मेंटर के सफलता के रास्ते चल पड़ी। मेरे प्रतिबिंब मुझे अपने स्वयं के जीवन के शिक्षकों के साथ-साथ असंख्य अन्य लोगों की याद दिलाते हैं जो भविष्य वक्ता शिक्षकों के मार्गदर्शन में सफलता की सीढ़ी चढ़ते हैं। मैं अपने छात्र जीवन की शुरुआत से ही शिक्षकों के अमूल्य आकार देने वाली शक्ति की ऋणी रही हूँ। यहाँ तक कि मेरे जीवन की वर्तमान भव्यता मेरे शिक्षकों के आशीर्वाद के कारण है।

केन्द्रीय विद्यालय क्र 3 मंचेश्वर रेलवे में एक प्राचार्य के रूप में मेरी सेवा के दौरान मुझे एक शिक्षक के बारे में पता चला, एक प्राथमिक शिक्षक जो निःसंदेह एक शिक्षक का अवतार है। उनकी शिक्षण पद्धति, शिक्षण- अधिगम के प्रति शैक्षणिक दृष्टिकोण मुझे एक पौराणिक ऋषि की याद दिलाता है जो एक महान शिक्षक की तलाश में जगह-जगह भटकता रहता था। ज्ञान के लिए उसकी निरंतर खोज ने उसे अपने चौबीस अलग-अलग शिक्षकों की प्राप्ति के लिए प्रेरित किया, जिसमें एक मकड़ी से लेकर एक पक्षी तक कुछ अन्य जानवर थे जिन्होंने उसे एक अन्य जीवन- पाठ पढ़ाया। उसने परिकल्पना की कि एक जिज्ञासु मन किसी से भी कुछ भी सीख सकता है। यह कहानी शिक्षा शास्त्रीय उक्ति को दर्शाती है कि 'सब कुछ सीखा जा सकता है लेकिन सिखाया नहीं जा सकता।' वह इतनी अद्भुत शिक्षिका है।

वह एक शिक्षिका से बढ़ाकर है। वह कक्षा में एक मित्र, परामर्श दा ता या संरक्षक, एक मार्ग दर्शक शक्ति आदि की सभी भूमिकाएँ निभाती है। वह केवल एक कक्षा की चार दीवारी तक ही सीमित नहीं है। इसके विपरीत वह ज्ञान, अनुभव, दया,अनुशासन और करुणा का कुल योग है। वह अपने छात्रों के साथ नाटकों में से एक भूमिका भी निभाएगी। वह एक पशु चरित्र बन जाएगी। जातक कथाओं या पंचतंत्र की कहानियों के नाटकों में वह रोल भी निभाएगी। वह खेलती भी है। छात्रों के लिए एक सहपाठी की भूमिका अदा करेगी। यह बच्चों को प्रेरित करती है और उनमें स्कूल और समाज के लिए अपनेपन की भावना विकसित करती है। गणित की कक्षाओं के दौरान वह छात्रों को विश्लेषणात्मक समस्याएँ सौंपती थी और समस्याओं को हल करने में उनकी मदद करती थी। वह बाजार का एक दृश्य बनाती थी ताकि छात्र ग्राहक और दुकानदार के रिश्ते को

समझ सकें। छात्रों ने दिन-प्रतिदिन की जीवन स्थितियों के यथार्थवादी चित्रण का आनंद लिया।

वह भविष्य के नेताओं को समाज के लिए सर्वोत्तम तरीके से आकार देने की क्षमता रखती है। फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं में वह छात्रों को प्रसिद्ध हस्तियों की भूमिकाएँ सौंपती है। छात्र पोशाक लेकर स्कूल आते हैं और अपने पसंदीदा नेताओं का रोल अदा करते हैं। यह उनमें सकारात्मकता और प्रेरणा की भावना पैदा करता है। वास्तव में, वह अपनी कक्षा के छात्रों के लिए दुनिया के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है।

वह एक समर्थन प्रणाली के रूप में कार्य करती है जिसका छात्रों के जीवन में कहीं और अभाव है। वह एक रोल माडल हैं और अपने छात्रों के लिए आगे बढ़ने और बड़े सपने देखने की प्रेरणा है। अभिभावक शिक्षक बैठक में वह किसी भी माता-पिता और बच्चे की मदद के लिए हमेशा तैयार रहती है। अभिभावक उसमें अपनी छवि देखते हैं और अपने बच्चों को उसकी देखभाल के लिए छोड़ देते हैं जैसे कि वह बच्चों का सच्चा माता-पिता हो। उनके लिए शिक्षण केवल एक नौकरी नहीं बल्कि यह वह जगह है जहाँ वह अपने छात्रों के जीवन में सबसे अधिक प्रभाव डाल सकते हैं।

उसकी कक्षा में, कुछ छात्रों के लिए शिक्षक-छात्र संबंध अमूल्य हैं। वह हर परिस्थिति में अपने छात्रों के लिए सकारात्मक रहती हैं। एक दिन एक बच्चे ने कक्षा के शीशे की खिड़की तोड़ दी। बच्चे का इरादा खिड़की तोड़ने का नहीं था ,गेंद फेकते हुए गलती से टूट गयी। यह मामला उसके पास लाया गया क्योंकि वह उसकी क्लास टीचर थी। कोई अन्य शिक्षक होता तो बच्चे के माता-पिता से शिकायत करता। लेकिन हैरानी की बात है कि उसने शिकायत न करके बच्चे को प्यार से गले से लगा लिया। बच्चे ने सपने में भी इसकी उम्मीद नहीं की थी।

इंटर हाउस खो-खो प्रतियोगिता के समय जब उनके हाउस के बच्चे पाइंट नहीं बना पा रहे थे तब वह छात्रों के पास जाकर पुछती हैं कि तुम लोग पॉइंट क्यों नहीं बना पा रहे हो। छात्रों ने उत्तर दिया कि उनमें ऊर्जा और जोश की कमी है। वह तुरंत छात्रों के लिए ग्लूकोस लेकर आई और उनका

उत्साहवर्धन करने लगी। इसने चमत्कार किया। मैच जीतने के लिए छात्रों में आत्मविश्वास का संचार हो गया। जब परिणाम घोषित किया गया तो उनकी टीम मैच की विजेता रही। मैंने उनमें एक अद्भुत आत्मविश्वास देखा जो कभी पराजित नहीं होता। वह कभी भी असफलता को स्वीकार नहीं करती और इसलिए उनके छात्रों के सफल होने की संभावना अधिक होती है। जब भी वह छात्रों को उदास पाती हैं तो वह कक्षा में प्रेरक गीत गाती है और छात्र खुशी-खुशी उसके साथ जुड़ जाते हैं। उनके शिक्षण के सबसे महत्तवपूर्ण कार्यों में उनका समर्पण भाव है।

अंत में उनका समर्पण 'चौबीसों घंटे काम करने की आदतों' द्वारा दिखाया गया है। छुट्टी की घंटी बजने पर वह काम बंद नहीं करती। स्कूल के बाद और सप्ताहंत पर वह लगातार बच्चों के ग्रेडिंग करने , लेसन प्लान बनाने और अभिभावकों के साथ संवाद करने में व्यस्त रहती हैं। वह हमेशा स्कूल शुरू होने से पहले अपना दिन निर्धारित करती हैं और संघर्षरत छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करती हैं।

मैं विश्वास के साथ कह सकती हूँ कि शिक्षकहाथ थामता है, दिमाग खोलता है और दिल को छूता है। वह एक ऐसी शिक्षिका है पढ़ाना जिसका शौक है। अनिश्चितताओं , कलह और संकटों से भरी दुनिया में हमें उनके जैसे शिक्षक की जरूरत है जो आशा की किरण हो, जो चुनौतियों के सागर के बीच बच्चों का मार्गदर्शन कर सके।

उन्होंने इस कहावत को खूबसूरती से चरितार्थ किया है कि "शिक्षक एक मोमबत्ती की तरह होता है जो खुद जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है।" मैं अपनी सच्ची श्रद्धा के साथ उनके अच्छे स्वास्थ्य, मानसिक शांति और खुशी की कामना करती हूँ।

बिरजा मिश्रा

सहायक आयुक्त,

23

रचनात्मक प्रतिभा को नमन

रेखांकन: महनाज़, टीजीटी (कला), के.वि. तुग़लकाबाद

एक शिक्षक जो खोजपूर्ण और सहभागी दृष्टिकोण अपनाता है, एक शिक्षक जो शिक्षा में प्रौद्योगिकी को एकीकृत करता है, जो भी कार्य उन्हें सौंपा जाता है, वह उसे उत्साह की भावना एवं उत्कृष्टता के साथ करता है। उनमे अपनेपन की बहुत मजबूत भावना है पेशे के साथ-साथ संस्थान के लिए भी। वह प्रभावी ढंग से शिक्षण सहायक सामग्री, नवीनतम शिक्षण विधियां एवं शिक्षण क्षेत्र की नवीन पद्धतियों का निरंतर शिक्षण कार्य में उपयोग करते हैं।

प्राथमिक शिक्षक से प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक गणित तक की उनकी यात्रा उनकी क्षमता एवं इस महान संगठन में समृद्ध होने और बढ़ने की जिज्ञासा को दर्शाता है। उनके पास सफल होने की जबरदस्त इच्छाशक्ति है तथा वे निरंतरता, दक्षता एवं पूर्णता का प्रतीक है। क्रिएटिविटी और इनोवेशन उनकी पहचान है। उन्होंने अपनी कार्य कुशलता एवं व्यावसायिक उत्कृष्टता से स्कूल की प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है एवं सम्पूर्ण क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। उन्होंने समर्पण के साथ संगठन की सेवा की है और विभिन्न क्षमता समूहों के बच्चों की देखभाल की है, जैसे कि धीमी गति से सीखने वाले, औसत और प्रतिभाशाली। एक गणित शिक्षकके रूप में,उन्होंने छात्रों को प्रोत्साहित करने में अत्यधिक रुचि दिखाई है।

वह शिक्षण पर एक खोजपूर्ण और सहभागी दृष्टिकोण को अपनाते हैं। उन्होंने शिक्षा में प्रौद्योगिकी का शानदार एकीकरण किया है। उन्हें जो भी काम सौंपा जाता हैं वह पूर्ण उत्साह से करते हैं और अपनी सेवाओं में हमेशा सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश करते हैं। उन्होंने बोर्ड और गैर-बोर्ड कक्षाओं में शत-प्रतिशत परिणाम के साथ-साथ गुणात्मक परिणाम भी दिए हैं। वह बहुत ही गतिशील, हंसमुख और पूरी तरह से सहयोगी शिक्षक हैं। उनमें पेशे के साथ-साथ संस्थान से भी जुड़ाव की बहुत मजबूत भावना है। वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने पाठ और गणित की परियोजना को विकसित करने में शिक्षण सहायक सामग्री, नवीनतम शिक्षण विधियों, नवीन प्रथाओं और शैक्षणिक दृष्टिकोणों का पूरा उपयोग करते हैं।

उनके कक्षा निरीक्षण के दौरान मैंने गणित के निर्देशों के लिए उनके द्वारा कौशल-आधारित निर्देश और अवधारणा-आधारित निर्देश के रूप में उपयोग किए जाने वाले दो प्रकार के शैक्षणिक दृष्टिकोणों का अनुभव किया है। कौशल-आधारित निर्देश में वह विशेष रूप से कम्प्यूटेशनल कौशल विकसित करने और तथ्यों के त्वरित स्मरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अवधारणा-आधारित निर्देश में वह छात्रों को एक समस्या को इस तरह से हल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो उनके लिए सार्थक हो और यह समझने में उपयोगी हो कि वे समस्या को कैसे हल करें हैं, जिसके परिणामस्वरूप विषयवस्तु पर विद्यार्थियों की अवधारणा तक वृद्धि होती।

उनके कक्षा निरीक्षण के दौरान मैंने देखा है कि वह अपने छात्रों को चरण दर चरण सिखाते है

कि समस्या को कैसे हल किया जाए और यह भी बताते हैं कि छात्र उस समस्या के उत्तर तक कैसे पहुंचे। वह छात्रों की जिज्ञासा को उत्तेजित करते हैं और उनसे ऐसे प्रश्न पूछकर आगे की जांच करने के लिए प्रोत्साहित करते है जो "क्या होगा यदि...?"। वह रचनावादी शैक्षणिक दृष्टिकोण को लागू कर रहे हैं जिसके द्वारा छात्र एक प्रयोग कर रहे हैं, डेटा एकत्र कर रहे हैं और भविष्यवाणियां कर रहे हैं। छात्र जोड़ियों या छोटे समूहों में काम करते हुए विचारों को साझा कर रहे हैं। एक समूह के छात्र कक्षा के सामने एक समस्या का प्रदर्शन करते हैं और दूसरा समूह समस्या की चर्चा एवं समाधान में भाग लेता है।

एक बार जब वे दसवीं कक्षा में पाइथागोरस प्रमेय पढ़ा रहे थे तब मैं उनकी कक्षा का निरीक्षण कर रहा था और मैंने उनकी शिक्षाशास्त्र के अनुप्रयोग को देखा है जिसके द्वारा पहले उन्होंने छात्रों को प्रमेय और उसके प्रमाण की व्याख्या की और फिर वह छात्रों के साथ कक्षा के बाहर आए और उन्हें एक चित्रकार दिखाया जो कि विद्यालय भवन पर पेंट करने के लिए एक सीढ़ी का उपयोग कर रहे थे। उन्होंने इस जीवंत उदहारण के माध्यम से छात्रों को पाइथागोरस प्रमेय के हमारे दैनिक जीवन में प्रयोग को दर्शाया।

एक बार जब वह छठी कक्षा में इकाई रूपांतरण विषय पढ़ा रहे थे, तभी मैं आकस्मिक कक्षा निरीक्षण के क्रम में उनकी कक्षा में गया जहाँ मैंने उनके द्वारा शिक्षणशास्त्र का व्यावसायिक अनुप्रयोग देखा जिसमें चार छात्र परदादा,दादाजी,पिताजी एवं पुत्र की भूमिका निभाते हैं।, जैसे कि परदादा के रूप में किमी दादाजी अर्थात मी को 1000 देता है , दादाजी के रूप में मी पिताजी अर्थात सेमी को 100 देता है, पिताजी के रूप में सेमी पुत्र अर्थात मिमी को 10 देता इसलिए इसे गुणा के रूप में माना जाएगा और यदि यह पुत्र को मिमी के रूप में उलट देता है 10 को पिता को सेमी के रूप में, पिता को सेमी के रूप में 100 को दादा को एम के रूप में विभाजित करते हैं, दादाजी को मीटर के रूप में 1000 को परदादा को किमी के रूप में विभाजित करते हैं।

वह क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से शिक्षण, सहयोग प्रणालियों एवं आभासी प्रणालियों के माध्यम से शिक्षण, फ़्लिपिंग कक्षाओं के साथ शिक्षण और स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से शिक्षण आदि तकनीकी साधनों क प्रयोग करके अपने कक्षा शिक्षण के रूचिकर नवीन शिक्षण प्रथाओं का उपयोग कर

रहे है। अपने कक्षा निरीक्षण के दौरान मैंने देखा था कि वह विद्यालय में उपलब्ध इंटरैक्टिव बोर्ड के माध्यम से प्रभावी ढंग से कक्षाओं को पढ़ा रहे है और गणित की विभिन्न अवधारणाओं जैसे ग्राफ, वीडियो, इत्यादि को दिखाते है। मैंने उनकी ऑनलाइन कक्षाओं का निरीक्षण किया है, जिसके दौरान उन्होंने क्लाउड कंप्यूटिंग शिक्षाशास्त्र के माध्यम से पढ़ाया है और कक्षा में महत्वपूर्ण-कक्षा संसाधन जैसे पाठ योजना, नोट्स, समाधान, अभ्यास परीक्षण, पाठ्यक्रम, समय-सारणी, असाइनमेंट, किताबें, वीडियो, पीपीटी आदि काका उपयोग करते देखा है। अपने कक्षा निरीक्षण के दौरान उन्होंने कक्षा शिक्षण के पारंपरिक के स्वरुप को बदलते हुए एक तेजी से छात्रोपयोगी प्रभावी शिक्षण पद्धति के द्वारा अध्यापन का कार्य किया। इसमें, छात्रों को सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाया जाता है, इसके लिए शिक्षकों को संसाधनात्मक सुविधा प्रदाताओं की भूमिका निभाने की आवश्यकता होती है और छात्र अवधारणाओं की जानकारी एकत्र करने की जिम्मेदारी लेते हैं।

महामारी के दौरान उन्होंने छात्रों को समर्पित एक ब्लॉग बनाया है जिसके द्वारा छात्र आसानी से अध्यायवार NCERT की किताबें, मुख्य नोट्स, वीडियो व्याख्यान, पुस्तक में दिए गए प्रश्नों के समाधान, Google फॉर्म में परीक्षण, अध्ययन सामग्री, पीपीटी, नमूना पत्र, कार्यपत्रक तक पहुंच सकते हैं। प्रश्न बैंक, एमसीक्यू, ई संसाधन, करियर कॉर्नर / मार्गदर्शन, प्रवेश परीक्षा लिंक, आईआईटी-जेईई / एनईईटी की तैयारी, पीआईएसए तैयारी, गणित लैब, एडुडेल अध्ययन सामग्री, समाधान के साथ ई-पुस्तकें, ऑडियो पुस्तकें आदि एक मंच पर और एक साथ एक माउस क्लिक पर उपलब्ध हैं।

कुल मिलाकर वे हमारी संस्था के रत्न हैं और हमें उनके जैसे व्यक्तित्व के शिक्षक पर गर्व है।

विकास गुप्ता
प्राचार्य,
के.वि. जगदलपुर

24

उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्धता

रेखांकन: महनाज़, टीजीटी (कला), के.वि. तुग़लकाबाद

" रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में आनंद जगाना शिक्षक की सर्वोच्च कला है।"

प्रभावी शिक्षण ही अच्छे शिक्षक की पहचान होती है। इतिहास का प्रभावी शिक्षण अधिकांश इतिहास शिक्षकों -शिक्षाविदों के लिए चिंता का प्रमुख क्षेत्र है। इसका कारण यह है कि इतिहास

के अधिकांश शिक्षक विषय पढ़ाने में उपयुक्त विधियों को नहीं अपनाते फलस्वरुप ज्यादातर विद्यार्थियों को यह विषय उबाऊ और नीरस लगता है।

मेरी इतिहास शिक्षिका अन्य शिक्षकों से अलग हैं क्योंकि वह अपने सभी छात्रों में विभिन्न गुणों को विकसित करती हैं और उनका मानना है कि तथ्यों और आंकड़ों को रटने या याद करने के बजाय छात्रों को यह सिखाना अनिवार्य है कि 'सीखा कैसे जाए?' उनके सीबीएससी के उत्कृष्ट परिणाम के पीछे यही दृष्टिकोण है। वह पिछले 3 वर्षों से चंडीगढ़ संभाग में उच्चतम पी.आई. के साथ शत-प्रतिशत परिणाम दे रही हैं।

उनकी कक्षाओं का अवलोकन करते हुए मैंने देखा है कि वह छात्रों को पढ़ाने के लिए शिक्षण की अलग-अलग विधियों का प्रयोग करती हैं।

1. पहली तकनीक जिसका वह प्रयोग करती हैं, वह है- प्रश्न आधारित शिक्षण --- यह एक प्रकार की पूछताछ है जहां शिक्षार्थी को प्रश्न-निर्माण करने और परिष्कृत करने के लिए निर्देशित किया जाता है। पूछताछ के इस मॉडल में छात्र उत्तर की बजाय प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उनकी कक्षा में एक अवधारणा सीखने के बाद छात्रों को विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को तैयार करने के लिए कहा जाता है,जिसमें विभिन्न प्रकार के प्रश्न शामिल होते हैं, यथा- वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु प्रश्न-उत्तर, दीर्घ प्रश्न-उत्तर आदि।

इसके पीछे यह मान्यता है कि यदि कोई छात्र प्रश्नों का निर्माण करने में सक्षम है तो, इसका अर्थ है कि उसने अवधारणा को अच्छी तरह समझ लिया है। बोध के स्तर को मापने के लिए प्रश्न निर्माण की यह तकनीक बहुत प्रभावी सिद्ध हुई है।

वास्तव में प्रश्न किसी भी आलोचनात्मक सोच वाली कक्षा की जांच के पीछे एक प्रेरक शक्ति है। कक्षा में प्रश्नों का स्रोत, आवृत्ति और गुणवत्ता किसी भी ग्रेड या स्तर के किसी भी शिक्षक के लिए उपलब्ध छात्रों को समझने के बारे में आंकड़ों के सर्वोत्तम स्रोतों में से एक है। शिक्षिका का मानना है कि प्रभावी शिक्षा शास्त्र में कई प्रकार की तकनीकें शामिल है, जिसमें पूरी कक्षा और संरचित

समूह कार्य, निर्देशित शिक्षण और व्यक्तिगत गतिविधि शामिल है।

2. वैयक्तिक अधिगम- इसमें शिक्षक विद्यार्थियों के साथ भलीभांति जुड़ा होता है। प्रत्येक छात्र को उसकी कक्षा में उसके उचित नाम से संबोधित किया जाता है जो शिक्षक और छात्र के बीच के बंधन को मजबूत करता है। गृह कार्य से लेकर नियमित मूल्यांकन तक शिक्षक हमेशा प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत जरूरतों को समायोजित करना सुनिश्चित करता है और बच्चों पर उनकी क्षमता का पता लगाने का दायित्व नहीं छोड़ता है। विद्यार्थी व्यक्तिकरण के साथ तेजी से परिपक्व होते हैं बेहतर सीखने में संलग्न होते हैं और इस प्रतिस्पर्धी दुनिया में आत्मविश्वास का एक बढ़ा हुआ स्तर विकसित करते हैं। वैयक्तिकृत शिक्षा शायद आधुनिक शिक्षा शास्त्र का सबसे अच्छा विकास है।

3.सामग्री को संप्रेषित करने में विभिन्न निर्देशात्मक तरीके और संसाधन -- इसमें शिक्षक व्याख्यान पद्धति न अपनाकर सामग्री को संप्रेषित करने के लिए विभिन्न निर्देशात्मक विधियों और संसाधनों का उपयोग करता है। उचित रूप से चिन्हित पीडीएफ और पीपीटी छात्रों को पाठ के मुख्य बिंदु को अच्छी तरह से समझने में मदद करते हैं। छात्रों पर निरंतर जांच करने के लिए क्विज़ और प्रश्न उत्तर राउंड की व्यवस्था की जाती है जो छात्रों को बातचीत करने और कक्षा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

4.सीखने के कौशल और प्रस्तुति कौशल -- शिक्षण करते समय शिक्षक सीखने और प्रस्तुति कौशल के महत्व को दोहराता है, जो छात्रों को परीक्षा के लिए तैयार करने में मदद करता है और यह सीखने की प्रक्रिया के लिए एक अभिन्न और महत्वपूर्ण मूल्यांकन उपकरण है।

इतिहास शिक्षक सामग्री पर महारत प्रदर्शित करता है ,उत्साह दिखाता है, छात्रों के पूर्व ज्ञान से पाठ को जोड़ता है। वह एक सहायक शिक्षण वातावरण तैयार करता है और वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीकों का उपयोग करता है और छात्रों को खुला मंच प्रदान करता है।

5. इतिहास में आभासी यात्राएं- आभासी यात्राएं छात्रों को यात्रा के माध्यम से सीखने का अवसर

प्रदान करती है। विशेष रूप से उन स्थानों के विषय में, जहां वे वास्तविकता में नहीं जा सकते। आभासी दौरे आकर्षक हैं, शिक्षक ने हड़प्पा संस्कृति और सांची के स्तूप के लिए आभासी दौरे का आयोजन किया। इससे छात्रों को कलाकृतियों और खोजे गए स्थानों के बारे में प्रामाणिक जानकारी मिली। यह गतिविधि उसके विषय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और सीखने की जरूरतों के अनुरूप है और आभासी दौरे में त्रिआयामी प्रभावों को देखना एक रोमांचक अनुभव भी देता है ,जो उनमे सहज ऐतिहासिक समझ विकसित करता है। ऑनलाइन कक्षा एक भ्रमण का अनुभव देती है और छात्रों ने इस में बहुत रुचि दिखाई। शिक्षण में इस प्रकार के नवाचार छात्रों के मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं जो बहुत ही सराहनीय है।

वह एक बहुत ही सफल शिक्षक है उनका दृष्टिकोण छात्र केंद्रित है जहां शिक्षक एक मदद कर्ता के रूप में कार्य करता है ताकि छात्र ज्ञानार्जन के लिए पूर्व ज्ञान व नए अनुभवों का उपयोग कर सके और इसका प्रभाव उसके परीक्षा परिणामों में देखा जा सके।

सुभाष चंदर

प्राचार्य,

के.वि. सं. 31 चंडीगढ़

25

पुस्तकों से बाइट्स तक बड़ी छलांग

रेखांकन: महनाज़, टीजीटी (कला), के.वि. तुग़लकाबाद

"एक कर्तव्य है जो अनुच्छेद 51 ए (एच) के तहत भारत के लिए अद्वितीय है, जो नागरिकों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और ज्ञानार्जन एवं सुधार की भावना विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।"

केन्द्रीय विद्यालय के मुख्याध्यापक अपनी कक्षा में छात्रों की आवाज़ को कैसे बढ़ाते हैं? ड्यूटी के शब्दों में, 'यदि हमें कभी भी वस्तुओं और शब्दों की अपेक्षा केवल बुद्धि से शासित होना है, तो विज्ञान के पास यह कहने के लिए कुछ होना चाहिए कि हम क्या करते हैं, न कि केवल इस बारे में कि हम इसे सबसे आसानी और मितव्ययिता से कैसे कर सकते हैं।' विज्ञान या पर्यावरण अध्ययन में 'हम क्या करते हैं' इससे ड्यूटी का क्या अभिप्राय है?
एक पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने, विवादास्पद मुद्दों से संबंधित स्थिति विकसित करने, वैज्ञानिक साक्ष्य का उपयोग करके उन पदों का बचाव करने का अभ्यास करने और दूसरों के द्वारा धारित वैकल्पिक पदों का सम्मानपूर्वक मूल्यांकन करने के अवसर शामिल हैं।

ईवीएस कक्षा में छात्रों की आवाज को बढ़ाना, साक्ष्य पर निर्भर ईवीएस को पढ़ाने से छात्रों को लोकतांत्रिक नागरिकता की जिम्मेदारियों के लिए तैयार करने में मदद मिलती है, जो उनके विषयगत ज्ञान को मजबूत करते हुए, उन्हें वैज्ञानिक जांच के लाभों और सीमाओं दोनों को देखने में मदद करता है, और उन्हें ठोस तर्क-वितर्क का अभ्यास करने एवं चिंतनशील निर्णय विकसित करने का अवसर देता है।

कक्षा समुदाय जो विचारशील प्रश्नों का समर्थन करते हैं और ईवीएस अवधारणाओं से संबंधित विचारों की आलोचना करने का प्रयास करते हैं। यह बच्चों में अपने साथियों से कठिन प्रश्न पूछने, प्रयोगात्मक परिणामों की विभिन्न व्याख्याओं को चुनौती देने और यह समझने के लिए मस्तिष्क का निर्माण करता है कि प्रश्न पूछने और आलोचना करने से व्यापक रूप से उपजाऊ संभाषण और सीखने को बढ़ावा मिल सकता है। हालांकि, सामाजिक-वैज्ञानिक मुद्दों पर विचार करने के अवसर प्रदान करने से पहले, एक ईवीएस शिक्षक को यह देखने में मदद करेगा कि वह कक्षा में कुछ बुनियादी लोकतांत्रिक प्रथाओं को कैसे विकसित कर सकता है, उदाहरण के लिए, पर्यावरण में उपलब्ध कराए गए सामान्य संसाधनों का उपयोग करना।

इस प्रकार, उसने जिम्मेदारी और सम्मान के साथ स्वतंत्रता का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित किया है। जैसे ही वह कक्षा में प्रवेश करती है तो उन सभी छात्रों के सम्पूर्ण उत्साह को आत्मसात्

कर लेती है जिसे वह सीखने के लिए उत्सुक युवा गतिशील छात्रों को टिमटिमाती आँखों में और उज्ज्वल मुस्कान में देखती है।

सभी हितधारक-माता-पिता, छात्रों के हित को संरेखित करने के लिए, उन्होंने सत्र 2020-21 में ऑनलाइन सिस्को वेबएक्स मीट का आयोजन किया और स्वयंसेवी माता-पिता का एक समूह बनाया जो ऑनलाइन कक्षाओं और संबंधित तकनीकी मुद्दों के तरीके को सीखने के इच्छुक थे। उन्होंने उसके साथ तालमेल बनाया और जूम, सिस्को वेबएक्स, गूगल मीट, स्काइप जैसे पोर्टलों में सीखने और संचालन करने में अन्य सहपाठियों की सफलतापूर्वक मदद की। उसने अपने शाम के समय का उपयोग वेब सम्मेलनों में माता-पिता को पढ़ाने और ऑनलाइन पाठों को चलाने के लिए आवश्यक अन्य समर्थित ऐप्स के लिए किया। साथ में उन्होंने पीडीएफ बनाने, गूगल क्लास रूम, व्हाट्सएप, फ्लिप ग्रिड, स्क्रीन शेयरिंग आदि में महारत हासिल की। 40 छात्रों और उनके माता-पिता की एक कक्षा ने एक मजबूत एकजुट बल बनाया, जो ऑनलाइन कक्षाओं में सभी चुनौतियों को दूर करने के लिए तैयार था।

उन्होंने अपने छात्रों को गूगल कक्षा के माध्यम से एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। कक्षा कोड साझा करके इन्होंने अद्भुत कार्य किया। इन्होंने छात्रों को युवा प्रकाशक बना दिया और उन्हें पूर्ण उत्साहित कर दिया। गूगल कक्षा के साथ प्रत्येक छात्र के लिए अलग-अलग शिक्षण मार्गों/ ढंगों के साथ त्वरित शिक्षा- शिक्षकों को आसानी से प्रदर्शन आकलन को प्रबंधित करने और वितरित करने में मदद करने वाला एक निःशुल्क टूल उनकी स्वयं की लिखावट में अपना स्वयं का असाइनमेंट प्रकाशित करने जैसा था। उसके छात्र सभी काम, प्रत्येक अध्याय की पीडीएफ फाइलों, वीडियो पाठ और मीडिया कवरेज आदि घर बैठे-बैठे निःशुल्क प्राप्त करते थे। बरसात के मौसम में बीमारियां, क्षेत्र में भूकंप, जंगल की आग, पर्यावरणविद् सुंदर लाल बहुगुणा, मेधा पाटेकर, सूर्यग्रहण की पिन होल कैमरा छवि जैसे ज्वलंत मुद्दों पर मीडिया कवरेज आदि छात्रों के लिए एक अतिरिक्त लाभ था।

छात्र उसके साथ चौबीसों घंटे जुड़े रहे। वह अपने छात्रों के लिए बस एक क्लिक की दूरी पर थी।

उनके 40 युवा प्रकाशकों को उनकी आवाज को बढ़ाने के लिए फ्लिप ग्रिड का एक मंच दिया गया था। उसका ग्रिड एक संदेश बोर्ड की तरह है, जहां उसने "विषय" नामक प्रश्न पोस्ट किए और उसके छात्रों ने टाइल वाले ग्रिड डिस्प्ले में दिखाई देने वाले वीडियोपरक प्रतिक्रियाएं पोस्ट कीं। यह बात छात्रों में आग की तरह फैल गई। स्वयं के वीडियो बनाना और साथियों द्वारा टिप्पणियां प्राप्त करना कक्षा में एक 'वाह-वाही' का कारक बन गया था। वह छात्रों, कार्यशालाओं और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए गेमीफाइड क्विज़, पाठ, प्रस्तुतियाँ और फ्लैशकार्ड बनाती है। क्लास, ग्रुप वर्क, प्री-टेस्ट रिव्यू, परीक्षा और सर्वाधिक प्रिय लाइव क्विज सत्र उनके छात्रों के पसंदीदा रहे हैं। यह छात्रों और शिक्षकों को एक ही समय में ऑनलाइन रहने की अनुमति देता है।

उनकी पास कक्षा पांचवीं की ईवीएस के सभी 22 अध्यायों के लिए ऑनलाइन संसाधन हैं जो छात्रों को अपने ख़ाली समय में अभ्यास करने और ऑनलाइन लाइव होने के पर्याप्त अवसर प्रदान करता है।

कक्षा पांचवीं की एनसीईआरटी पाठ्य पुस्तक के अध्याय "अंतरिक्ष में सुनीता" पर बातचीत करते हुए उन्होंने अपने छात्रों को 3D ग्लोब और सौरमंडल के बारे में सिखाने के लिए मिश्रित वास्तविकता ऐप का उपयोग किया। उनकी कक्षा के छात्र अपने हाथों में सबसे शक्तिशाली सूर्य को पकड़ने में सक्षम थे, आकाशीय पिंडों को स्वयं अपने हाथ से छूने का अनुभव करते थे। इस प्रकार, उन्होंने उनकी कक्षा कभी नहीं छोड़ी। परिणामस्वरूप, उनकी इस सीखने की रणनीति को 29 सितंबर 2020 को केवीएस चंडीगढ़ क्षेत्र के महामारी प्रदर्शन पटल में नवाचार और के.वि.स. मुख्यालय नई दिल्ली में "शिक्षा पर्व" 2020-21 वीडियो शो केस में स्थान मिला।

वह समग्र केवि.संगठन में उन पांच शिक्षकों में से एक थीं, जिन्हें 20 जुलाई 2020 को माननीय केवि.संगठन आयुक्त के समक्ष लाइव होने और अपने इस प्रयास को दिखाने का मौका मिला।

महामारी में वह स्टार-वॉक-2 के माध्यम से खगोलीय निवास की यात्रा के लिए अपनी कक्षा को ले गई, वह और उनके युवा खोजकर्ता माउंट एवरेस्ट, गोलकोंडा किले की चोटी पर गूगल धरती के माध्यम से गए। वाह! क्या अभियान था! जिसमे उन्होंने अपनी कक्षा को 112 उद्देश्यपूर्ण

शैक्षणिक अभ्यास- भूकंप के अनुकरणीय कक्षा लेनदेन सिमुलेशन का एक संकलन और कंपन मीटर का उपयोग करके रिक्टर पैमाने पर रीडिंग रिकॉर्ड किया। जैम बोर्ड कक्षा में उसके काम का एक साक्षात् दर्पण है। वह अपनी कक्षा में एक ब्लैक बोर्ड लाइव लाने के लिए सभी सुविधाओं का उपयोग करती हैं। वह कहती हैं कि इसका उपयोग सस्ते डिजिटल पेन टैबलेट, स्क्रिबल, ड्रॉ, एनोटेट आदि के रूप में किया जाता है।

अंत में, मैं यह कहना चाहती हूं कि उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली प्रभावशाली शिक्षा ने उनकी कक्षा को युवा छात्रों के लिए एक कार्यशाला बना दिया है। वह इस प्रभावशाली शिक्षाशास्त्र को समझती है और ये दृष्टिकोण शिक्षा और स्थिरता के महत्वपूर्ण लक्ष्यों के साथ कैसे संरेखित होते हैं यह हमारी शिक्षा प्रणाली में प्रतिध्वनित होता है। पुस्तकों से लेकर बाइट्स तक के सफर को उन्होंने बड़ी ही कुशलता से संभाला है। अंतिम तथ्य जो न्यूनतम मात्र है कि वह 'नेशनल आईसीटी अवार्डी 2010' हैं।

टी. रुक्मणी

सहायक आयुक्त,

के.वि.सं. चंडीगढ़ संभाग

एक विशिष्ट शिक्षक

26

रेखांकन: महनाज़, टीजीटी (कला), के.वि. तुग़लकाबाद

शैक्षणिक विधाओं के बारे में अपने अनुभवों का स्मरण करते समय मुझे केन्द्रीय विद्यालय आईटीबीपी देहरादून की एक अद्भुत एवं अद्वितीय शिक्षिका , जो कि अब सेवानिवृत्त हो गई हैं, का स्मरण हो आता है। यह शिक्षिका विद्यालय में अपने अंतिम कार्यदिवस तक भी विद्यार्थियों के प्रेम एवं सराहना से ओतप्रोत रहीं। उन विद्यार्थियों में से कई आज स्वयं शिक्षक हैं। अपने निरीक्षण के दौरान उन शिक्षिका की कक्षा देखने का अवसर मिला। उनकी कक्षा उन सभी विधाओं से परिपूर्ण थी जो कि भाषा की

कक्षा में अपेक्षित हैं।

अधिकांश शिक्षकों को साठ विद्यार्थियों की कक्षा में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन गतिविधियों का संचालन करना वह भी भाषा की कक्षा में , एक दुष्कर कार्य प्रतीत होता है। परन्तु उनकी कक्षा में यह आसानी से दिख गया। शिक्षिका ने अपनी कक्षा को पंद्रह विद्यार्थियों की चार टीमों(समूहों) में विभाजित किया था। टीम 'ए' और 'बी' को पक्ष और विपक्ष में वाद –विवाद करने के लिए एक विषय दिया गया था (सभी प्रतिभागियों को इस वाद –विवाद गतिविधि में कम से कम एक बिंदु प्रस्तुत करना था।) टीम 'सी' निर्णायक की भूमिका में थीं एवं उन्हें 'ए' एवं 'बी'टीम के सदस्यों का मूल्यांकन निर्धारित शीर्षों पर करना था। टीम 'डी' को शेष अन्य तीन टीमों के सदस्यों के द्वारा प्रयुक्त भाषा एवं इस गतिविधि में विभिन्न नियम पालन के आधार पर उनके आकलन और मूल्यांकन का काम दिया गया था।

सभी साठ विद्यार्थी इस शिक्षण अधिगम गतिविधि में पूर्णरूपेण सम्मलित थे। सभी विद्यार्थियों को 40 मिनट के दो निरंतर कालांश अवधि के दौरान अपनी प्रस्तुति देने का अवसर प्राप्त हुआ। विद्यार्थियों का स्वयं अपना, साथियों के द्वारा, और समूह , तीनों के रूप में मूल्यांकन किया गया। सभी विद्यार्थियों ने न केवल गतिविधि में भाग लेने का आनंद लिया अपितु अध्यापिका के साथ मूल्यांकन के लिए शीर्ष , वाचन संबंधी नियम,समय की प्रतिबद्धता, एवं अंकन आदि विधाओं एवं नियमों को भी सीखा। इतनी बड़ी कक्षा का नियंत्रण अधिकांश शिक्षकों द्वारा एक कठिन कार्य माना जाता है, किन्तु इन शिक्षिका की कक्षा इससे पूर्णतया: अलग थी। मैं इस कक्षा में निरीक्षण करने के आशय से गयी थी , किन्तु इस कक्षा की समाप्ति तक मैंने अपने आप को इस कक्षा में एक सहायक अध्यापिका के रूप में प्रतिभागिता करते पाया। एवं इस कक्षा का अनुभव मेरे लिए एक निरीक्षण अधिकारी का ना होकर खुद सीखने के लिए तत्पर एक सहायक शिक्षिका के रूप में अविस्मरणीय रहा।

मीनाक्षी जैन
उपायुक्त,
के.वि.सं. देहरादून संभाग

रसोई में रसायन शास्त्र

27

रेखांकन: सत प्रकाश, टीजीटी (कला), के.वि. संधोल

गुणवत्तापूर्ण परक उत्तम शिक्षा न केवल शिक्षकसे छात्र तक जानकारी का हस्तांतरण है, बल्कि इसमें प्रभावी शिक्षण के तीन प्रमुख तत्वों उद्देश्यपूर्ण प्रेरित जुड़ाव, साधन संपन्न कौशल पूर्ण मार्गदर्शन और योजनाबद्ध लक्ष्य केंद्रित प्रयत्न को समाहित करना चाहिए। इसे प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय विद्यालय, वायु सेना स्थल मनौरी ,प्रयागराज के स्नातकोत्तर रसायन विज्ञान

शिक्षक द्वारा सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित मिश्रित शिक्षण का उपयोग किया गया,जो गतिशील डिजिटल गतिविधियों और सामग्री को विकसित करके आमने-सामने सीखने और बातचीत का संयोजन कर शिक्षार्थी को किसी भी समय कहीं भी सीखने की सुविधा प्रदान करता है। उन्होंने अपने ज्ञान को ऑनलाइन शिक्षा और अनुभव प्रदान करने से संबंधित रखा जो उन्होंने ई-गणेश को डिजाइन और विकसित करते समय प्राप्त किया है और शिक्षण के लिए आईसीटी आधारित अंतर क्रियात्मक सर्व प्रयोजनीय सुगठित प्रणाली द्वारा महामारी के दौरान दैनिक विद्यालयी गतिविधियों का उत्तम संचालन और प्रबंधन किया गया। चूंकि शत प्रतिशत ऑनलाइन शिक्षण छात्रों के लिए एक पूरी तरह से नई अवधारणा थी। उन्होंने ऑनलाइन पाठ्यक्रम तैयार करने से पहले उन संसाधनों और कौशलों को समझने के लिए विशेष प्रयास किए जो उनके छात्रों के पास होने चाहिए। ऐसा करने से शिक्षक और शिक्षार्थी एक ही धरातल पर आ कर उचित संचार साधनों के चयन में मदद कर शिक्षण प्रक्रिया को स्वस्थ और फलदायी बनाते हैं। महामारी के दौरान उनके द्वारा छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान और प्रायोगिक गतिविधियों को सर्वोत्तम संभव तरीके से संप्रेषित करने के लिए विशेष प्रयास किए गए। उन्होंने छात्रों को सभी प्रयोगों को प्रदर्शित करने के लिए घर पर कोविड -19 लैब नामक एक लघु प्रयोगशाला विकसित की और प्रत्येक छात्र के साथ उनके प्रदर्शन और समझ का आकलन करने के लिए प्रत्येक छात्र के लिए अलग अलग अंतर क्रियात्मक सत्र आयोजित किए। उन्होंने परंपरागत कक्षा शिक्षण के स्थान पर, छात्रों के लिए समूह चर्चा का आयोजन किया, सैद्धांतिक विषयों को सरल बनाने के लिए वास्तविक जीवन के उदाहरणों का उपयोग किया और जटिल अवधारणाओं की कल्पना करने में मदद करने के लिए सामान्य घरेलू वस्तुओं का उपयोग किया ताकि ऑनलाइन और कक्षा शिक्षण के अंतर को कम कर ऑनलाइन शिक्षण को यथासंभव अंतर क्रियात्मक और दिलचस्प बनाया। वह समय-समय पर छात्रों को महामारी और ऑनलाइन शिक्षण के तनाव से बाहर निकालने के लिए परामर्श सत्र भी आयोजित करते थे। उनकी कक्षाओं का अवलोकन करते हुए, मैंने पाया कि वह इंटरेक्टिव बोर्ड और केन्द्रीय विद्यालय संगठन द्वारा प्रदान किए गए। - प्रोजेक्शन सॉफ्टवेयर का उपयोग करके बहुत प्रभावी ढंग से ऑनलाइन माध्यम में संकर शिक्षण कर रहे थे। ऑनलाइन माध्यम से उनके शिक्षण का सबसे अच्छा हिस्सा यह है कि सैद्धांतिक अवधारणाओं को पढ़ाने से पहले वह उस विषय को समझाने के लिए प्रयोगात्मक उपकरण स्थापित करके व्यावहारिक ऑनलाइन प्रदर्शन करके छात्रों को अवलोकन करने के लिए कहते थे। प्रायोगिक संचालन के

बीच विषय पर छात्रों के ज्ञान का परीक्षण करने के लिए वह बेतरतीन ढंग से याद्दच्छिक प्रश्न पूछते थे। वह प्रायोगिक प्रदर्शन करते और अपने उच्च शक्ति वाले कैमरा जिसके द्वारा छात्र परिणामों और गणनाओं को देख सकते थे, छात्रों से परिणामों और गणनाओं को लिख कर मूल्यांकन हेतु उन्हें व्हाट्सएप ग्रुप पर तुरंत अपलोड कर ऑनलाइन जमा करने के लिए कहते। रसायन विज्ञान के अध्याय जैसे ठोस, विलयन, पृष्ठ रसायन आदि को रसोई में मौजूद ज्यादातर चीजों का इस्तेमाल करके पढ़ाते। वह छात्रों को अपनी रसोई में रहने और अपने रसोई के सामान जैसे नमक (सोडियम क्लोराइड), चीनी, सिरका, नींबू, सरसों, आटा, दूध, चाय ,सर्फ, मीठा सोडा (सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट), का उपयोग करके रसायन विज्ञान की विभिन्न अवधारणाओं जैसे क्वथनांक में उन्नयन, हिमांक में अवसान, कार्बोहाइड्रेट के गुण आदि की व्याख्या करते। इसके अलावा, अंतर विषय अवधारणाओं जैसे कोलाइडल विलयन, ठोस आकार, अवतल और उत्तर दर्पण की अवधारणा, ठोस अवस्था में छिद्रों की अवधारणा और कई अन्य चीजों को रसोई में उपयोग की जाने वाली वस्तुओं के माध्यम से समझाते थे। ऊपर चर्चा की गई अवधारणाओं के अलावा वह रसायन विज्ञान को दैनिक जीवन की गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाते। दिन की शुरुआत जैसे दांतों को ब्रश करते हुए बहुलक की अवधारणा स्पष्ट करते ब्रश से नायलॉन और पेस्ट से कोलाइडल विलयन की अवधारणा को उजागर करते। स्नान करते समय साबुन और सर्फ के प्रकारों की अवधारणा ,फिर नाश्ते में ग्रहण किए जाने वाले दूध से कोलाइडल विलयन एवम निस्यंद का उदाहरण प्रस्तुत करते। दोपहर के भोजन के द्वारा वह कार्बोहाइड्रेट की अवधारणा ,स्टार्च के प्रकारों जैसे एमाइलेज़ और एमाइलो पेक्टिन की अवधारणा को सिखाते। अंत में बिस्तर पर जाने से पहले विटामिन सी, बी, जिंक और बायोमोलेक्यूल्स की अवधारणा प्रस्तुत करते। इसके अलावा कोल्ड ड्रिंक पीने के माध्यम से हेनरी के नियम की व्याख्या करते। ऑनलाइन शिक्षण के दौरान वह विषयों को समझाने के लिए स्वयं निर्मित शिक्षण सहायक सामग्री का भी उपयोग करते हैं। निचली कक्षाओं जैसे सातवीं या आठवीं में प्रकाश और विद्युत की अवधारणा को दर्पण, पिन, बैटरी, कंघी, एलईडी आदि का उपयोग करके गतिविधियों को दिखाकर समझाते और फिर वह बच्चों को घर पर भी ऐसा करने के लिए कहते। विशेष रूप से COVID -19 के दौरान उनके द्वारा शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया के प्रति बच्चों में इतनी रुचि पैदा की गई कि अन्य विद्यालयों के छात्रों ने भी अपने प्रधानाचार्यों के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी से संपर्क किया ताकि उन्हें भी केन्द्रीय विद्यालय, वायु सेना स्थल, मनौरी के छात्रों के साथ रसायन विज्ञान की ऑनलाइन कक्षाओं में

भाग लेने की अनुमति मिल सके।

शालिनी दीक्षित

प्राचार्य,

के.वि. एएफएस मनौरी, प्रयागराज

28

मेरी संस्था के रत्न

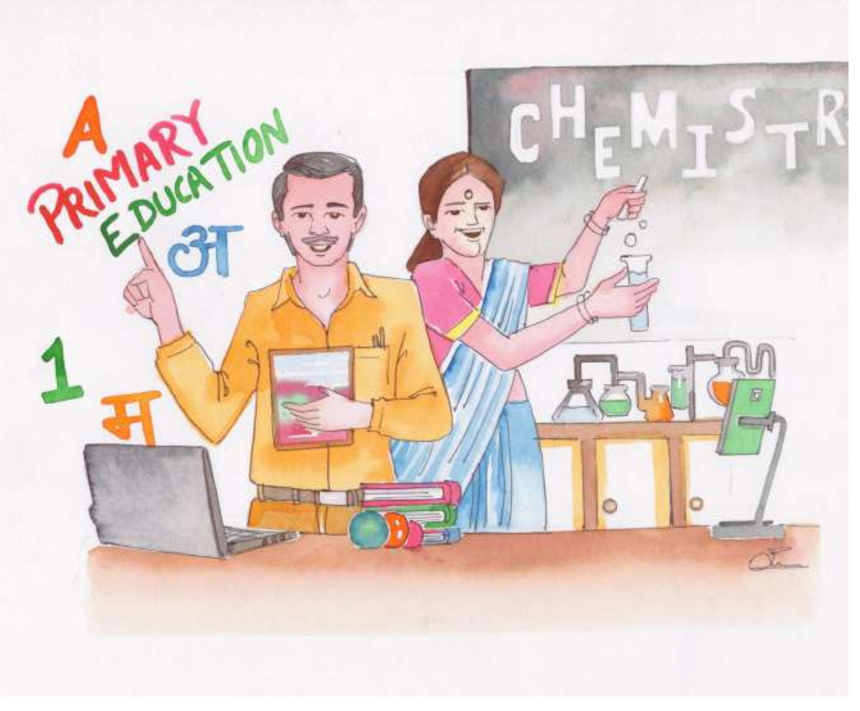

रेखांकन: सत प्रकाश, टीजीटी (कला), के.वि. संधोल

एक शिक्षक वह होता है जो अध्येता में सीखने की ललक एवं श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा देता है। उनका मित्रवत व्यवहार और उनका विद्यार्थियों को विषय के समझाने की कला ऐसी थी जो उन्हें सीखने के लिए नये उत्साह से भर देती थी। उनकी शिक्षण में दक्षता विद्यालय एवं विद्यार्थी समुदाय के लिए एक संपत्ति है। वह कोई और नहीं बल्कि मेरे विद्यालय की रसायनशास्त्र की स्नातकोत्तर शिक्षिका हैं।

वह हमारे अत्यधिक गुणवान शिक्षकों में से एक हैं। वे अपने शांत एवं मित्रवत स्वभाव के कारण अधिकांश विद्यार्थियों की प्रिय शिक्षिका हैं। मुझे कई अभिभावकों से उनके विषय में सदैव अच्छी प्रतिपुष्टि प्राप्त होती है। मैं उनकी विद्यार्थियों एवं उनके माता-पिता के साथ संवाद के कौशल की प्रशंसा करता हूँ।

एक बार मैंने उनकी कक्षा का निरीक्षण किया जहाँ वह 'अवशोषण की अवधारणा'को एक सुनियोजित क्रियाकलाप के माध्यम से चाक, स्याही व जल की सहायता से पढ़ा रही थीं। विद्यार्थी कक्षा का आनंद ले रहे थे तथा उस अवधारणा को अत्यंत सहजता के साथ समझ रहे थे।

एक और वाकया है जिसे मैं याद करता हूँ जिसमें उन्होंने'टिंडल प्रभाव की अवधारणा' को अत्यंत सुंदर ढंग से शैंपू, जल में घुली हुई चाक, साफ पानी और ठीक उसी समय वायु का शिक्षण युक्ति के रूप में उपयोग करते हुये सुनियोजित गतिविधियों से समझाया। उनका प्रज्वलित होती हुई मैग्नीशियम की धारियों वाली गतिविधि, लिटमस पेपर की गतिविधि, हल्दी और साबुन का प्रयोग करते हुये अम्ल,क्षार तथा संकेतक की अवधारणा को समझाने का तरीका बेहद प्रभावी था। वह ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान अपने शिक्षण को प्रभावी एवं रुचिकर बनाने के लिए अत्यधिक प्रयास करती थीं। यद्धपि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान बच्चों को केन्द्रित करना बेहद मुश्किल होता है तथापि मैं उनके अंदर प्रत्येक बच्चे के प्रति स्नेह एवं लगाव देख सका। जब आवश्यक होता, वे बच्चों का उत्साहवर्द्धन करती थीं और जब आवश्यकता होती, वे उनके साथ कड़ाई से पेश आती थीं।

जब से कोविड-19 महामारी का प्रकोप आया और कक्षा में चलने वाली भौतिक कक्षाओं का रूपान्तरण वर्चुअल कक्षा के रूप में हुआ, तब ऑनलाइन शिक्षण में वह ऑनलाइन कक्षाओं की मांग के अनुसार निरंतर प्रयासरत रहती थीं। इसके लिए वे अपने यूट्यूब चैनल पर वीडियो बनाते हुए, नोट्स एवं प्रश्नों का पीडीएफ़, पीपीटी तैयार करते हुए, गूगल मीट, जूम एप, वाट्सएप, गूगल कक्षा और अद्यतन टीचमेंट एप जैसे विभिन्न प्लेटफॉर्मों का उपयोग शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में करते हुए वे उसे अत्यंत प्रभावी बनाती थीं। वह विशेषकर बोर्ड परीक्षाओं में निरंतर अच्छा परिणाम देती रही हैं।

उनके पास अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक हर तरह के सिद्धांत और खूबियाँ मौजूद हैं। श्रेष्ठ शिक्षण गुणों और मूल्यों पर निर्भर करता है। एक शिक्षक वह होता है जो अपने समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करता है और प्रत्येक अध्येता के लिए रोल मॉडल होता है।

स्नातकोत्तर शिक्षिका - रसायनशास्त्र के अतिरिक्त एक और प्राथमिक शिक्षक हैं जिनकी सभी के द्वारा भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है और जो अपने संवाद कौशल और तकनीकी दक्षता के लिए जाने जाते हैं। वह अत्यंत गुणवान शिक्षकों में से एक हैं। वह अत्यंत मृदुभाषी, ऊर्जावान और मिलनसार व्यक्ति हैं। वे अपने शांत, मनोरंजक और विनम्र स्वभाव के कारण अधिकांश विद्यार्थियों के प्रिय शिक्षक हैं। वह प्रत्येक विद्यार्थी पर एक समान ध्यान देते हैं और उनकी समस्त शंकाओं का समाधान करते हैं। आजकल वे चौथी और पाँचवीं कक्षा में हिन्दी पढ़ाते हैं। मैं उनकी विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के साथ संवाद करने के कौशल की प्रशंसा करता हूँ।

वर्चुअल कक्षाओं के आरंभ में मैंने उनकी कक्षा के निरीक्षण का इच्छुक था। उस दौरान वे चौथी कक्षा में हिंदी के अंतर्गत अध्याय 1 'मन के भोले – भाले बादल' पढ़ा रहे थे। वह अपनी कक्षा गूगल मीट पर ले रहे थे। उस समय कुल 42 में से 35 विद्यार्थी ऑनलाइन कक्षा में उपस्थित थे। पूरी कक्षा बेहद अनुशासित थी। कक्षा की शुरुआत स्वास्थ्य, स्वच्छता और बेहतर ढंग से रहने की सावधानियों के विषय में बच्चों को जागरूक करते हुए हुई। वह कविता के आदर्श वाचन का वीडियो बना रहे थे (विडियो लिंक https://youtube/a|n|Fo9ptuE) जो कि स्वरों के उम्दा आरोह – अवरोह , क्रियाकलाप, मूर्तीकरण एवं संपादन से अत्यंत प्रभावी हो गया था। उस वीडियो के बाद विद्यार्थियों को कविता का वाचन करने के लिए कहा गया। बच्चे कैमरे के सामने ऊर्जा और उल्लास से भरकर कविता का वाचन कर रहे थे। उन्होंने गूगल जैमबोर्ड का प्रयोग करते हुए बादलों के विभिन्न आकारों को चित्रित किया, तुकांत वाले शब्दों, नये शब्दों को उनके अर्थ के साथ लिखा। वह वाट्सएप का उपयोग गृहकार्य और प्रतिक्रिया जानने के लिए करते थे। मैं उनके द्वारा एक ही कक्षा में एक ही समय पर कई एपों के संतुलित उपयोग से अत्यधिक प्रभावित हुआ। वह उपलब्ध प्रत्येक प्लेटफॉर्म का उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए करते थे। जब मैंने उनसे विद्यार्थियों के मूल्यांकन के विषय में पूछा, तब उन्होंने बताया कि इसके लिए उन्होंने गूगल फार्म पर वर्कशीट तैयार किया है। मैंने उनकी योजनाओं एवं अच्छे कार्यों की

सराहना की।

मेरे विचार से ऑनलाइन कक्षाओं में प्रस्तुत होने के दौरान वह शिक्षण और उससे संबंधित डिजिटल शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया को सफल बनाने के लिए बहुत ज्यादा प्रयत्न करते हैं।

वह नई अवधारणाओं एवं तकनीकों को जानने के लिए अत्यंत उत्सुक रहते हैं। मैंने पिछले वर्ष उनके नाम को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए अनुशंसित किया।

उन्होंने वहाँ सक्रिय रूप से प्रतिभाग किया और श्रेष्ठ अध्येताओं की श्रेणी में स्थान बनाया। उन्होने अपने समस्त सहकर्मियों के लिए उच्च मानदंड स्थापित किया है।

यह हमारे स्टाफ के मध्य एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण का निर्माण करता है।

प्रेम कुमार
प्राचार्य,
के.वि. बलिया

हेलो! बायोलॉजी सर

29

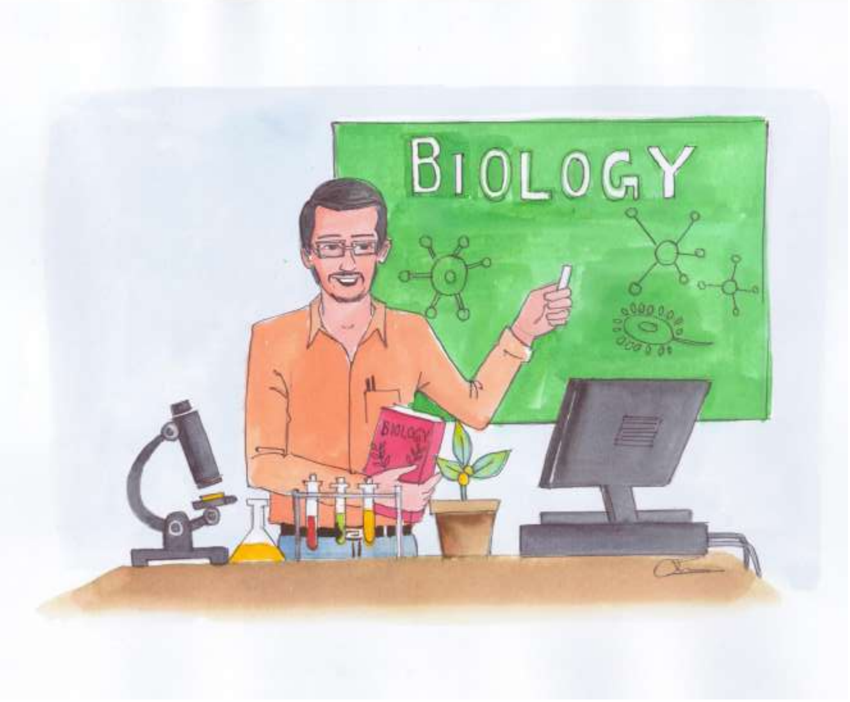

रेखांकन: सत प्रकाश, टीजीटी (कला), के.वि. संधोल

उद्देश्यपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास - एक अनुकरणीय कक्षा का आदर्श संचालन

शिक्षक समाज की रीढ़ होता है। एक अच्छे शिक्षक द्वारा प्रशिक्षित डॉक्टर अपने मरीजों के प्रति सहानुभूति रखता है, एक इंजीनियर अपने शिक्षक से प्रभावित होकर अपने काम के प्रति

वफादार होता है और अपने शिक्षक द्वारा निर्देशित नेता राष्ट्र के लिए प्रतिबद्ध होता है।

अतः एक शिक्षक समाज को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मेरा सौभाग्य है कि मेरे विद्यालय में भी एक ऐसे शिक्षक हैं जो छात्रों के लिए वरदान हैं। मुझे उनके बारे में तब पता चला जब मैं इस विद्यालय में पहली बार आ रहा था। यह 11 जुलाई 2017 था। मैं बहुत खुश था क्योंकि मैं अपने गृह नगर के पास एक केवी में कार्यभार ग्रहण करने जा रहा था। अचानक, मैंने छात्रों के एक समूह को विद्यालय की ओर जाते देखा। मैं भी उनके साथ चलने लगा और अपने बारे में बिना कुछ बताए उनकी पढ़ाई ,उनके पसंदीदा शिक्षक और स्कूल के बारे में बातचीत करने लगा। उनमें से लगभग सभी ने एक स्वर में कहा "जीव विज्ञान सर हमारे पसंदीदा शिक्षक हैं"। इसने मेरी जिज्ञासा को जगाया और मैंने पूछा "आपके जीवविज्ञान सर कौन हैं और उनके बारे में क्या खास है?" उनकी बातें इस प्रकार हैं। "उनके बारे में सब कुछ खास है, सब कुछ अनोखा है। उनका एक सुखद व्यक्तित्व है। वे बहुत समय के पाबंद हैं। हमने उन्हें कभी देर से आते नहीं देखा।वे जिस तरह से पढ़ाते हैं ज्ञान का विकास करते हैं, वह उत्कृष्ट है। हमें जहां भी जरूरत होती है वे हमारी मदद करते हैं। केवल वे कक्षा में पढ़ाने तक ही सीमित नहीं है अपितु जब भी हमें कोई समस्या आती है तो हम उनके पास जाते हैं। वे सहानुभूतिपूर्वक हमारी बात सुनतेहैं और हमें सुझाव देतेहैं।" मैंने बिना कुछ बताए उनकी कक्षा का निरीक्षण करने की योजना बनाई। उस क्लास की यादें आज भी मेरे जेहन में ताजा हैं। वे उस दिन डीएनए की मूल संरचना के बारे में पढ़ा रहे थे। इंटरैक्टिव बोर्ड और अन्य शिक्षण सहायक सामग्री की मदद से पढ़ाने का उनका तरीका काबिले तारीफ था। यहां तक कि मुझे यह सीखने की आवश्यकता महसूस हुई कि इंटरैक्टिव बोर्ड और अन्य दृश्य-श्रव्य साधनों का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जाए।

यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि उन्होंने प्याज के छिलके से डीएनए स्ट्रेंड को हटा दिया था। यह प्रयोग पर आधारित सिद्धांत के निर्माण का एक उपयुक्त उदाहरण था। जीव विज्ञान की ऐसी क्लास मैंने पहले नहीं देखी थी। विद्यार्थी इन गतिविधियों में गहरी दिलचस्पी के साथ भाग ले रहे थे जैसे कि शिक्षकने उन पर जादू कर दिया हो। अब मुझे एहसास हुआ कि वे छात्रों के बीच इतने लोकप्रिय क्यों थे। अगले महीने विद्यालय का वार्षिक निरीक्षण हुआ। निर्धारित तिथि पर

सहायक आयुक्त के नेतृत्व में दस प्राचार्यों का दल विद्यालय आया। निरीक्षण उपरांत बैठक में टीम द्वारा शिक्षक की काफी सराहना की गई। सहायक आयुक्त, जिन्होंने उनकी प्रयोगशाला का अवलोकन किया था, पौधे के नमूनों, 3डी मॉडल, आधुनिक उपकरणों और शिक्षकके दृष्टिकोण से बहुत प्रसन्न थे। जिस प्रधानाचार्य ने उनकी कक्षा का अवलोकन किया था, उन्होंने कहा, "काश मेरे पास आपके जीव विज्ञान शिक्षक जैसा शिक्षक होता!" वे उनकी शिक्षण पद्धति, सहपाठी शिक्षण और शिक्षण सहायक सामग्री के उपयोग से खुश थे। अगले ही दिन वे अपने पाठ योजनाओं पर हस्ताक्षर करवाने के लिए मेरे कक्ष में आए गतिविधियों के आधार पर पाठों की सावधानीपूर्वक योजना बनाई गई थी। उनकी डायरी का अवलोकन करने के बाद मुझे पता चला कि उन्होंने एक संसाधक के रूप में कार्यशालाओं के बारे में और विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बेहतर समझ के लिए छात्रों को सीएसआईआर प्रयोगशाला में ले जाने के बारे में हर विवरण को ध्यान से नोट किया था, जैसे कि एनसीएससी, जेएनएनएमएसईई, ओलंपियाड जैसी विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए छात्रों का मार्गदर्शन करना और विकास करना। उनकी लोकप्रियता हमारे स्कूल में ही नहीं बल्कि अन्य विद्यालयों में भी स्थापित है।

यह मैंने तब देखा जब छावनी बोर्ड स्कूल के छात्र "दूसरे सरकारी स्कूल के साथ साझेदारी" के तहत हमारे विद्यालय में आए थे। मैंने पाया कि छात्रों में उनके प्रति लगाव था। वे उनसे इस तरह बात कर रहे थे जैसे वे उनके स्कूल के हो। एक अच्छे शिक्षक का यह गुण होता है कि वह अपने संचार कौशल और व्यवहार से किसी को भी आकर्षित कर सकता है।

वे बारह वर्षों से अधिक समय से संगठन में अध्यापन कर रहे हैं और उनका कोई भी छात्र कभी अनुत्तीर्ण नहीं हुआ है। उन्होंने हमेशा एक बहुत अच्छा पीआई स्कोर किया है। यह मुझे तब पता चला जब मुझे उनका एपीएआर पहली बार लिखना था और मैं जानना चाहता था कि पहले के प्रधानाचार्यों ने उनके बारे में क्या लिखा था। मैंने पिछले वर्षों के एपीएआर को देखा और पाया कि प्रत्येक प्रधानाध्यापक ने उन्हें एक उत्कृष्ट शिक्षक का दर्जा दिया था।

मेरा विद्यालय टीजीटी विज्ञान के लिए एक सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्थल था और तत्कालीन प्रधानाचार्य ने मुझे बताया कि इस शिक्षक ने एक संसाधक के रूप में उस कार्यक्रम

में भाग लिया था और अपने प्रयोगों और नवाचारों से कई शिक्षकों को प्रेरित किया था। उन्होंने "स्कूल स्तर पर सामाजिक और शैक्षणिक कौशल में सुधार के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता का महत्व" विषय पर एक प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित अपने शोध पत्र को साझा किया। उस शोध पत्र में उन्होंने एक शिक्षक के सामने आने वाली बाधाओं और संभावित समाधानों पर भी चर्चा की। जब भारत में COVID-19 का प्रकोप हुआ और बच्चों की सुरक्षा के लिए स्कूल बंद कर दिया गया, तो हम शिक्षण सीखने की प्रक्रिया के बारे में चिंतित थे, विशेष रूप से विज्ञान विषयों के लिए, जिसमें प्रयोगशालाओं में प्रयोग आधारित शिक्षण संभव नहीं था, लेकिन आश्चर्यजनक रूप से मुझे पता चला कि जीव विज्ञान में प्रयोग आधारित शिक्षण चल रहा था। उन्होंने इस पर प्रैक्टिकल करते हुए अपना खुद का यूट्यूब चैनल बनाया था।

उनके द्वारा विकसित स्कूल की इमारत के सामने जड़ी-बूटियों का बगीचा, जो औषधीय पौधों से भरा हुआ है, अपने विषय और पर्यावरण में भी उनकी रुचि का प्रमाण है। उनके जैसा शिक्षक विद्यालय के लिए एक संपत्ति है, जिसने दूसरों के अनुसरण के लिए एक अद्भुत पदचिह्न बनाया है। विद्यालय में उनका योगदान सराहनीय है। वे वास्तव में छात्रों और शिक्षकों के लिए हर तरह से मददगार रहे हैं। उनकी मदद और समर्थन के लिए उनके छात्रों और उनके साथी शिक्षकों द्वारा उनकी सराहना की जाती है।

बैरिस्टर पाण्डे
प्राचार्य,
के.वि. 39 जीटीसी वाराणसी

अतुलनीय अध्यापक

30

रेखांकन: सत प्रकाश, टीजीटी (कला), के.वि. संधोल

मुझे जिन शिक्षकों के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वे सभी अपने आप मे उत्कृष्ट हैं। उनमें से कुछ अपेक्षा और आकांक्षाओं से अधिक आगे जाकर विद्यार्थियों के लिए विषय को आनंददायक बना देते हैं। लचीलापन सकारात्मक दृष्टिकोण, अनुकूलनशीलता जो किसी शिक्षक को महान बनाने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, इनका प्रत्यक्ष उदाहरण इसके पहले मैंने नहीं देखा।

पहला उदाहरण जो मैने पाया जब मैनें केंद्रीय विद्यालय संगठन में वाणिज्य शिक्षक के रूप में कार्य-भार ग्रहण किया। मैंने अनुभव किया कि मेरे विद्यालय में सामाजिक विज्ञान की एक शिक्षिका बच्चों, अभिभावकों एवं कर्मचारियों में बहुत लोकप्रिय थी। मेरी कक्षा बारहवीं वाणिज्य के भी कुछ छात्र उनके और उनके शिक्षण के मुरीद थे। उन्होने मुझे बताया कि मैडम ने सामाजिक विज्ञान को बहुत ही आनंददायक विषय बना दिया था। उनके पढ़ाए हुए पाठ और विषयवस्तु अभी तक हमारी यादों में हैं।

मैं बहुत आश्चर्यचकित होता था जब बारहवीं के बच्चे अपनी कक्षा छठी एवं सातवीं के अनुभवों के बारे में बात करते थे। यह वास्तव में बहुत ही आश्चर्य चकित करने वाली बात थी कि पाँच-छः साल पहले की कक्षा और मैडम के शिक्षण को विद्यार्थी अब तक याद कर रहे थे। मैं बहुत जिज्ञासु था और मैं उनके कक्षा के आनंद का अनुभव लेना चाहता था। एक दिन मैं पहली मंजिल के अपने कक्ष में बैठा था तब देखा कि वह अपनी कक्षा छठी के विद्यार्थियों को खेल के मैदान में लेकर आई और उन्हें एक विशेष तरीके से खड़े होने को कह रही थी पूरी प्रक्रिया मुझे बहुत ही रुचिकर लगी। कक्षा आठवीं के दो वरिष्ठ छात्र अपने छोटे दोस्तों को हाथ में कागज लेकर एक विशेष आकार बनाने के लिए निर्देश दे रहे थे। अचानक उन सबने भारत के प्रारूपिक मानचित्र का आकार बना लिया अब शिक्षिका ने विद्यार्थियों को उनके अनुक्रमांक के अनुसार बुलाना शुरू किया और उन्हें किसी विशेष शहर की ओर जाने के लिए निर्देशित किया। उन छोटे बच्चों को मानचित्र पर स्थित उस शहर तक दौड़कर जाना था और यदि कोई समस्या आती तो दूसरे छात्रों से सहयोग लेना था। यह एक बिलकुल ही अलग तरीका था। मानचित्र कार्य को पढ़ाने पर सभी छात्र बहुत प्रसन्न थे और इस कार्य को बार-बार करना चाहते थे। केवल एक कालांश में सभी छात्र देश के मानचित्र पर सभी बड़े शहरों की स्थिति को समझ गए।

प्रभावी शिक्षण का मेरा दूसरा अनुभव केंद्रीय विद्यालय, आजमगढ़ में हुआ जब मैंने प्रभारी प्राचार्य के रूप में कार्य-भार फरवरी-2021 को ग्रहण किया। कार्य-भार ग्रहण के दिन जब मैं विद्यालय के नियमित भ्रमण पर था तो मैंने देखा कि भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला दो भाग में विभाजित थी। श्यामपट्ट की तरफ का भाग एक फोटो स्टूडियो के रूप में सुसज्जित था जिसमें प्रकाश फैलानेवाला छाता, डिजिटल कैमरा, लैपटाप इत्यादि रखा हुआ था जबकि दूसरी तरफ कबाड़ जैसी पुरानी साइकिल की रिंग, तिलीया रखी हुई थी। मैंने शिक्षक से इसके बारे में जानकारी ली तो उन्होनें अपने शिक्षण के

बारे में बताया। मुझे काफी रुचिकर लगा। अगले दिन मैं फिर से भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला गया तो मैंने पाया कि शिक्षक कुछ विद्यार्थियों से घिरे हुए थे और अचानक शिक्षक ने सारी लाइट बंद कर दी और केवल एक टेबल लैंप का प्रकाश दीवार पर प्रक्षेपित किया। शिक्षक ने टेबल लैंप, साइकिल की रिंग, शीशा, दो स्टूल और एक साधारण आप्टिकल बेंच की सहायता से सिंपल हारमोनिक मोशन के विषय वस्तु को समझाया। उन्होने आप्टिकल बेंच पर साइकिल रिंग को रखा और तीलियों के बीच में एक ग्लास को फंसाया और लैंप के प्रकाश को दीवार पर प्रक्षेपित किया जिससे कि पूरे सेटअप का प्रतिबिंब दीवार पर बने जब शिक्षकरिंग को घुमाते एक द्विआयामी प्रतिबिंब दीवार पर दिखता और जो शीशा तीलियों के बीच फंसा हुआ बाएँ, दाएँ गति करता हुआ दिखाई देता था। शिक्षक ने अपना कथन किया कि किसी आबजेक्ट की किसी वृत्ताकार पथ पर एक समान चाल से की जा रही गति को सरल आवर्ती गति कहते हैं।

अगले दिन मैंने कुछ वरिष्ठ शिक्षकों से उनके बारे में जानकारी प्राप्त की। सबने यह बयाया कि भौतिक विज्ञान के शिक्षक विद्यालय के कर्मठ और समर्पित शिक्षकों में से एक हैं। उन्होनें अपना यू ट्यूब चैनल फिजिक्स कम्यून बनाया है और लगभग चार सौ वीडियो, जो कक्षा सातवीं से बारहवीं तक के विज्ञान की लाइव और पहले से रिकार्ड की हुई कक्षाओं के हैं, को अपलोड किया है, चैनल का यूआरएल है:- https//youtube.com/c/PhysIcsCommune.

भौतिक विज्ञान जैसे विषय को दैनिक जीवन के वस्तुओं की साथ पढ़ाना बहुत ही अच्छा है और

क्रिया विधि के पश्चात छात्रों के चेहरे पर खुशी और संतुष्टि स्पष्ट दिखाई देती है।

अब शिक्षक का कार्य बहुत ही दिमागी और संवेगात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण हो गया है। शिक्षक अपने प्राथमिक कार्य के साथ-साथ एक अभिभावक, एक दिशा निर्देशक और एक मित्र के कार्य को भी अंजाम दे रहे हैं।

कोरोना महामारी के कारण छात्रों का जीवन एवं अनुभव अस्थायी रूप से काफी प्रभावित हुआ है परंतु शिक्षक एक बहुत ही मजबूत रोलमाडल के रूप में नई-नई पद्धतियों को आत्मसात करते हुए विद्यार्थियों तक अपनी पहुँच बना रहे हैं।

उन्होंने आज से समय की कुछ प्रमुख चुनौतियों, जैसे आनलाइन कक्षा में अनुशासन बनाए रखना, समयानुसार शिक्षण पद्धति में बदलाव और नई तकनीक एवं मशीनों के प्रयोग को समझने का प्रयास इत्यादि शानदार तरीके से किया। जिन छात्रों को भावनात्मक सहयोग की आवश्यकता है उन्हे भी आज के शिक्षकों से भपूर मदद मिल रही है सम्पूर्ण शिक्षक समाज को कोटिशः धन्यवाद एवं नमन ....!

विशाल खरे
प्राचार्य-प्रभारी,
के.वि. आज़मगढ़

31

शिक्षण के उदात्त रंग

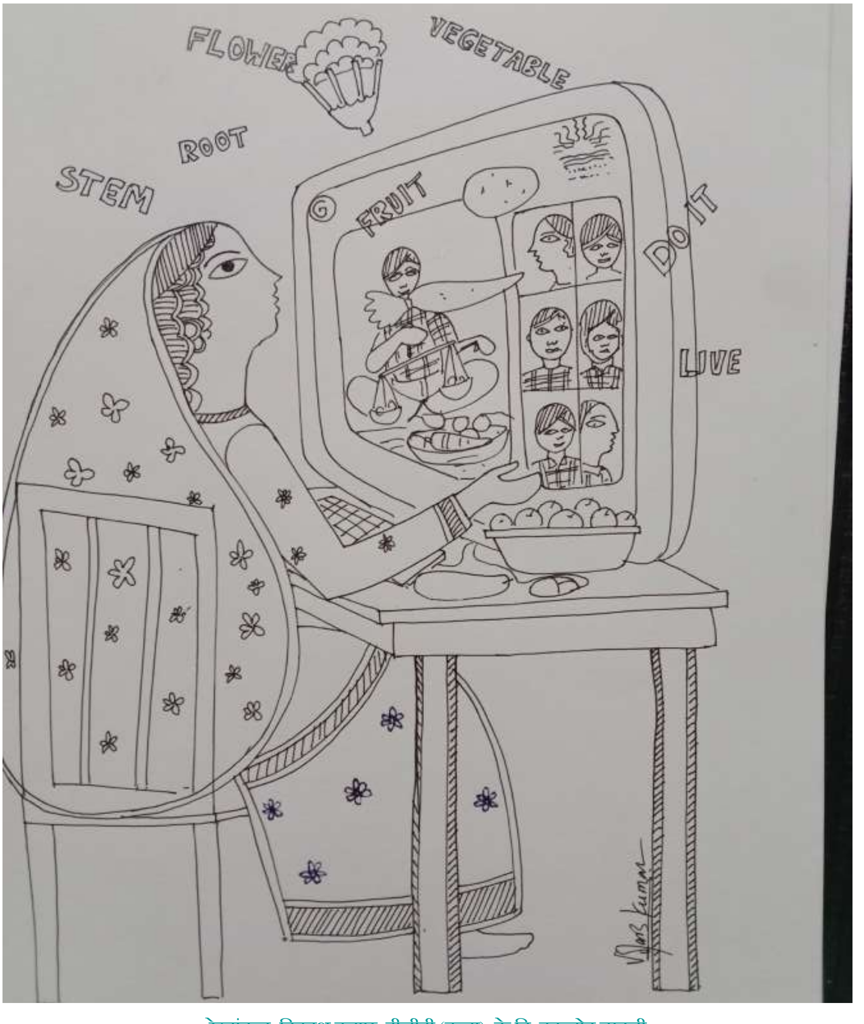

रेखांकन: विकाश कुमार, टीजीटी (कला), के.वि. बकलोह छावनी

एक विदेशी पत्रकार ने डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के बारे में टिप्पणी की "मैं एक प्रोफेसर को जानता हूं जो चौबीस घंटे में अठारह घंटे पढ़ता है।" परोक्ष रूप से इस कथन का आशय यह है कि एक अच्छा शिक्षक सबसे अच्छा विद्यार्थी, स्वाध्याय-प्रेमी, वेदांत के 'श्रवण' 'मनन' और 'निशीध्यासन' का उपासक होता है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में कक्षा के संचालन के दौरान ज्ञान के साथ-साथ ज्ञान के सम्प्रेषण कि विधि की भी आवश्यकता होती है। यद्यपि शिक्षण-अधिगम-प्रक्रिया आनंद से उत्पन्न होनी चाहिए और आनंद में ही समाप्त होनी चाहिए, फिर भी यह एक कठिन कार्य है। मेरे विचार से इसका समन्वय भगवत गीता के ज्ञान योग-कर्मयोग-भक्ति योग के रूप में होना चाहिए। ज्ञान वह सदिश राशि है जो संदेह से सत्य और अनुभववाद से यथार्थ की ओर यात्रा करती है। ईशोपनिषद के अनुसार, "सत्य का मुख एक चमकदार सुनहरे ढक्कन से आवृत है, जिसे ज्ञानी पुरुष अनावृत करते हैं- सत्य के लिए, दृष्टि के लिए"। एक शिक्षक को सूर्य के समान होना चाहिए जो निर्विवाद सत्य को अनावृत कर सके।

हरिण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।
तत्त्वं पूषन्नपावृणु सत्य धर्माय दृष्टये।

यद्यपि,इस विश्वव्यापी कोविड -19 महामारी की स्थिति में, ऑनलाइन शिक्षण हमारे लिए एक नई चुनौती बनकर उभरा है, फिर भी यह गर्व और खुशी की बात है कि देश भर के शिक्षकों ने शिक्षार्थियों की शैक्षणिक उत्कृष्टता सुनिश्चित करने के लिए अपने स्तर पर सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया है। ऑनलाइन शिक्षण करने वाले ये साधक और ज्ञान के हिस्सेदार महामारी काल के छिपे हुए इनडोर योद्धा हैं जिन्होंने छात्रों के बीच मूल्यों की रक्षा करते हुए ज्ञान की रक्षा की है। उन्होंने आध्यात्मिक पोषक तत्वों के रूप में काम किया है जिन्होंने नई पीढ़ी के मानसिक, सांस्कृतिक और शास्त्रीय लोकाचार को बनाया, बढ़ाया और मजबूत किया है।

इन सभी चुनौतियों के बीच, केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल , मनौरी, इलाहाबाद की टीजीटी विज्ञान शिक्षिका पर विचार करना उचित है, जिन्होंने केंद्रीय विद्यालय संगठन में अपनी अनूठी शिक्षण पद्धति और तकनीक से सीखने की प्रक्रिया को जीवंत बनाया। वह शिक्षार्थियों को नई जानकारी और अवधारणाओं को आत्मसात करने में मदद करने के लिए खुद को व्यवस्थित

और नियोजित रखती है। वह विभिन्न श्रव्य और दृश्य साधनों का उपयोग यह विश्वास करते हुए करती है कि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को शिक्षार्थियों के साथ उच्च स्तरीय बातचीत के माध्यम से सफल बनाया जा सकता है। इसलिए, वह एक ही कक्षा में कई शिक्षण विधियों को अपनाती है, जैसे चर्चा विधि, प्रश्न उत्तर विधि, आगमनात्मक और निगमनात्मक विधि। उनकी कक्षाओं में छात्र शिक्षक बनते हैं और शिक्षक बातचीत के माध्यम से छात्र बनते हैं। मुझे याद है कि एक बार छठी कक्षा की विज्ञान कक्षा के अवलोकन के दौरान मैंने इस विज्ञान शिक्षिका को कई प्रकार की सब्जियों और फलों के साथ देखा था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई फल बेचने वाला या सब्जी बेचने वाला ऑनलाइन क्लास में उतर आया हो। उनकी पोशाक भी एक फल विक्रेता की तरह थी। इस प्रकार के सुखद कक्षा वातावरण से बच्चे प्रसन्न होते थे। माहौल इतना हल्का था कि बच्चों की उत्सुकता परवान चढ़ने लगी। बच्चों का मनोरंजन करते हुए और प्रदर्शन पद्धति का उपयोग करके, उन्होंने प्यारे शिक्षार्थियों को सब्जियों और फलों की पहचान करना सिखाया। उन्होंने इन सभी अवधारणाओं को बहुत आसानी से और धाराप्रवाह रूप से संप्रेषित किया।

कक्षा नवम एवं दशम जैसी वरिष्ठ कक्षाओं में यह शिक्षिका ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान 'ओ लैब' के माध्यम से, पौधों और जीव-जंतुओं के साम्राज्य की शारीरिक रचना एवं आतंरिक आकारिकी की यात्रा कराती है। छात्रों की तार्किक क्षमता और समस्या सुलझाने की क्षमता में सुधार करने के लिए, वह ऑनलाइन मोड में प्रश्नोत्तरी और खेलों का आयोजन करती हैं। उन्होंने ऑनलाइन शिक्षण में उतनी ही तकनीकी दक्षता हासिल की है, जितनी एक शिक्षक के तकनीकी रूप से मजबूत होने के लिए आवश्यक है। सबसे अच्छी बात यह है कि छात्र अपनी ऑनलाइन कक्षाओं में सक्रिय रहते हैं, प्रश्न पूछते हैं, संवाद करते हैं, चर्चा करते हैं और अवधारणाओं को स्पष्ट करने के उद्देश्य से बनाए गए व्हाट्सएप शैक्षणिक समूह में जुड़े रहते हैं। शिक्षिका अवधारणाओं के स्पष्ट और विशिष्ट संचरण के लिए पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन बनाता हैं, साझा करता हैं और उन्ही अवधारणाओं के स्पष्टीकरण के लिए ब्लैकबोर्ड का उपयोग करता है।

उद्देश्यपूर्ण शैक्षणिक अभ्यास और 'करके सीखना' उनकी शिक्षण पद्धति का अनिवार्य और अभिन्न अंग है। चुम्बक के साथ खेलना, चुम्बकत्व की अवधारणा तक पहुँचना, तारों और बैटरियों से खेलकर विद्युत परिपथ की अवधारणा तक पहुँच, छोटे-छोटे घरेलू सामानों से छात्रों के लिए एक

मिनी लैब बनाना-उनके शिक्षण की विशिष्ट विशेषताएं हैं। वह वैज्ञानिक अवधारणाओं को जीवन स्थितियों से जोड़कर सिखाती है। उनकी विशेषता है कि बहुत ऊर्जावान छात्रों की तुलना पदार्थ की गैसीय अवस्था के रूप में करती हैं जबकि अनुशासित छात्रों के लिए ठोस अवस्था का उपमान देती हैं। पिता और पुत्र के बदलते हुए संबंधों में भौतिकी के चुम्बकत्व के 'लेन्ज के नियम' को ढूंढ लेना उनकी अनूठी शिक्षण विधि का प्रमाण है। वह हमेशा छात्रों को कम लागत वाली शिक्षण सामग्री का उपयोग करने के लिए प्रेरित करती हैं। उनकी प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षण भी छात्रों को शोध करने, सूचना और डेटा एकत्र करने में मदद करता है।

उनके द्वारा चुने गए ये सभी शिक्षण पहल ऐसी गंभीर और असाधारण स्थिति के दौरान बहुत प्रभावी और उपयोगी साबित हुए हैं। इन सबके अलावा, वह छात्रों को पर्याप्त सहायता प्रदान करती हैं और महामारी के दौरान उनके मनोवैज्ञानिक दबाव को कम करने के लिए भी काम करती हैं।

प्रदीप कुमार मिश्र
उप-प्राचार्य,
के.वि. एएफएस, मनौरी

32

सीखने सिखाने की भाषा में शिक्षण

रेखांकन: विकाश कुमार, टीजीटी (कला), के.वि. बकलोह छावनी

शिक्षक का दायित्व व्यक्तित्व को आकार देने एवं निखारने का होता है जिससे व्यक्ति, समाज एवं देश के विकास में अमूल्य योगदान दे सके। मेरी नजर में केन्द्रीय विद्यालय मुगलसराय की शिक्षिका एक आदर्श शिक्षक के गुणों को अंतर्निहित किये हुए है। उनकी कर्मठता एवं अदितीय प्रतिबद्धता उन्हें भीड़ से जुदा करती है। वह एक उत्कृष्ट शिक्षिका है एवं हंसमुख व्यक्तित्व की धनी है और बच्चों के सर्वांगीण विकास के प्रति प्रतिबद्ध हैं।

वह दिए गए निर्दिष्ट कार्यों को निश्चित समय सीमा में सम्पादित करती है एवं हमेशा विद्यालय के गौरव की वृद्धि की दिशा में उतरोत्तर कदम बढ़ाती हैं। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के अंतर्गत छोटे-छोटे बच्चों के प्रति स्नेहिल एवं करुणामयी दृष्टिकोण रखती है। उसकी कक्षाएं करीने से संचालित होती है एवं बच्चें, क्विज, पजल, पहेलियाँ आदि में भाग लेने हेतु आतुर रहते हैं। COVID-19 प्रसार के दौरान शिक्षण के तरीके में आमूल-चूल परिवर्तन हुआ। परम्परागत कक्षा शिक्षण से ऑन-लाईन कक्षा शिक्षण को आत्मसात करना एक दुरूह कार्य था। यह एक नई चुनौती लेकर आया एवं कक्षा-2 के बच्चों को ऑन-लाईन पढ़ाना और भी पेचीदा था। अचानक ही नए शब्द जैसे Google Meet, Google SuIte, Google Classroom और Google Form वातावरण में सर्वव्याप्त हो गए। उन्होंने आवश्यक तकनीकी को आत्मसात किया एवं बच्चों को दक्षता से पढ़ाते हुए तकनीकी खामियाँ से निपटने का कौशल सीखा।

प्राथमिक कक्षाओं में गणित पढ़ाने की उनकी रणनीति बहुत शानदार है। (वह वैचारिक समझ पर जोर देती है, जिससे छात्र एक अमूर्त अवधारणा को भौतिक रूप से महसूस करता है)। उन्होंने गणित के शुरुआती एवं आधारभूत गणितीय संक्रिया को ग्राह्य बनाने के लिए ठोस वस्तुओं, स्थानिक तर्क एवं सामग्री का इस्तेमाल किया। उनकी कहानी कहने की विधि वास्तविक दुनिया के परिदृश्य से सम्बन्ध बनाती है। समस्याओं को अलग-अलग तरीकों से देखने से मस्तिष्क के तंत्रिका तंत्र के संबर्धन में मदद मिलती है। उनकी कक्षा में परस्पर वार्तालाप की प्रक्रिया, तार्किक निर्णय लेने की क्षमता और क्रिटिकल थिंकिंग को प्रोत्साहित करता है। अपनी बातचीत के दौरान, वह सहानभूति, दूसरों के लिए सम्मान, सार्वजनिक सम्पति का सम्मान और बहुलवाद जैसे मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देती हैं। निष्ठा प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, सफलतापूर्वक योग्यता आधारित शिक्षा (CBE) की ओर कदम बढाया है। उनकी कक्षा में, प्रत्येक छात्र यह महसूस करता है कि वह वांछनीय है और उसका ध्यान रखा जाता है। वह अपने छात्रों को स्वायत्तता देती है जहाँ वे अपनी गति से सीख रहे है और ज्ञान में वृद्धि कर रहे है।

कक्षा-2 के गणित का अवलोकन करते हुए, मैंने शिक्षिका को आकार और पैटर्न जैसे विषय-वस्तु को पढ़ाते पाया। आकार के विचारों को बनाने के लिए शिक्षकने स्केल, किताबें, गेंद, नोटबुक, शार्पनर और इरेजर जैसी सामग्री पर हाथों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया था। उसने भुजाओं और किनारों को समझाने के लिए एक सुन्दर कविता का इतेमाल किया।

मैं त्रिभुज हूँ, मैं त्रिभुज हूँ

I’m trIangle,I’m trIangle

नुकीले छोटे आकार के हैं

Do have poInty lIttle shape

मेरे तीन भुजाएं हैं

I have three sIdes

मैं त्रिभुज हूँ, मैं त्रिभुज हूँ

I’m TrIangleI’m TrIangle

मैं वर्ग हूँ, मैं वर्ग हूँ

I’m Square,I’m Square

आप मुझे हर जगह देख सकते हैं

You can see me everywhere

मेरी चार भुजाएं हैं

I have four sIdes

मैं वर्ग हूँ, मैं वर्ग हूँ

I’m square,I’m Square

मैं वृत्त हूँ, मैं वृत्त हूँ

I am CIrcle,I am cIrcle

मैं गोल-गोल घूमता हूँ...

I go round and round…

बाद में उन्होंने पराठे और विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थों एवं दैनिक जीवन के अनुभव की मदद से, कक्षा शिक्षण किया। इसने कक्षा को बहुत जीवंत बना दिया।

उन्होंने फाउंडेशनल लिट्रेसी और न्यूमरेसी पर ध्यान केन्द्रित करते हुए एन.ई.पी. 2020 के साथ अपने शिक्षण को सफलतापूर्वक संरेखित किया है। वह सुनिश्चित करती है कि सभी छात्रों द्वारा सीखने का

न्यूनतम स्तर प्राप्त हो एवं पूर्व निर्धारित शिक्षण के परिणामों की प्राप्ति हो। उनके परोपकारी सवभाव ने अन्य शिक्षकों को एक बड़ा लाभांश दिया है क्योंकि वह अपने सहयोगियों को विभिन्न इन-हॉउस प्रशिक्षण सत्रों के माध्यम से अनलर्न और रिलर्न करने के लिए प्रेरित करती हैं।

हेड मास्टर की अनुपस्थिति को कभी महसूस नहीं किया गया क्योंकि वह सफलतापूर्वक हेड मिस्ट्रेस की जिम्मेदारी उठाती हैं और अपने प्रबंधन कौशल के माध्यम से, वह नए शिक्षकों के लिए एक आदर्श है। ऑनलाइन सी.सी.ए. कार्यक्रम के आयोजन के लिए बहुत सारे गृह कार्य की आवश्यकता होती हैं और उसी की निगरानी उनके द्वारा सफलतापूर्वक की जा रही है। वह प्राथमिक विंग के लिए परीक्षा प्रभारी की जिम्मेदारी वहन करती हैं और उनका प्रलेखन कार्य प्रशंसनीय हैं।

वह विद्यालय के लिए एक सम्पति है और इस तरह के शिक्षक वास्तव में समाज और राष्ट्र की प्रशंसा के पात्र है।

मनीष कुमार यादव
उप-प्राचार्य,
के.वि. दी.द.उ. नगर

33

बाल मन के संवेदनशील शिल्पकार

रेखांकन: विकाश कुमार, टीजीटी (कला), के.वि. बकलोह छावनी

अधिगम सबंधी सुधार तथा नीतियाँ कक्षा में छात्रों के अनुभव की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायता करते हैं। शिक्षा जगत में अधिगम की सुगमता और विविध अधिगम अनुभव उपलब्ध कराने के प्रति एक नई जागरूकता आई है। विद्यार्थियों के ध्यान को पाठ्यक्रम की ओर अधिक से अधिक आकर्षित करना शिक्षक के लिए सदा से ही एक चुनौती रहा है, जो वर्तमान समय में और अधिक मुखर हो गया है। छात्रों के ध्यान को आकर्षित करने और इन्द्रियों को अधिगम के लक्ष्य पर पूर्णतः केन्द्रित करने के लिए शिक्षक को नवाचार और तकनीक का सहारा लेना आवश्यक है।

इस दिशा में नई सोच के साथ तकनीक के जरिए छात्रों की सहायता किया जाना अपेक्षित है। वर्तमान समय में कोविड महामारी के दौरान जब छात्र अपने घरों में कैद हैं उन में पढाई के प्रति लग्न पैदा करना अत्यंत आवश्यक है।

"वर्क फ्रॉम होम" संस्कृति का चलन पूरे विश्व में जारी है। विद्यार्थी एवं शिक्षक आभासी कक्षा में पठन-पाठन का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। इस क्रम में केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2 कृभको के दो शिक्षकों के प्रयास प्रस्तुत है –

जब विद्यालय बंद था तो लॉकडाउन के दौरान कृभको टाउनशिप में विद्यालय मैदान में अक्सर छात्र-अभिभावक तथा अन्य लोग घूमते नज़र आते थे और जिनके हाथ में हमेशा मोबाइल होता था। ऐसे समय में विद्यालय के ही एक शिक्षक (स्नातकोत्तर शिक्षक संगणक) स्वयं भी सैर के लिए निकलते थे। उन्होंने मोबाइल के जरिए विद्यार्थियों को फिटनेस गतिविधि से जोड़ने की बात सोची। उनके द्वारा कुछ फिटनेस गतिविधियों को सम्मिलित कर एक 'फिटनेस चुनौती' तैयार की और उसका QR CODE बनाया। यह कोड अध्यक्ष ,विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा 12/01/2020 को विधिवत जारी किया गया। इस QR CODE को टाउनशिप में सभी खेल के मैदानों ,स्टेडियम ,क्लब तथा शॉपिंग सेंटर पर लगाया गया। इन स्थानों पर आने जाने वाले सभी लोग QR CODE को स्कैन "FITINDIA MOVEMENT" की किसी भी गतिविधि में भाग ले सकते थे और अपनी विडियो भी अपलोड कर सकते थे। यह QR CODE वाट्सएप के जरिए सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों को भेजा गया।

QR CODE को स्कैन करने पर खेलकूद गतिविधियों की एक सूची आती है, जिसमें से मनपसंद गतिविधि को चुना जा सकता है अपनी आधारभूत जानकारी भर कर,अपनी चनौती को पूरी

करने की विडियो/फोटो अपलोड कर सकता है। इस फिटनेस चुनौती को टाउनशिप में अनेक लोगों ने पूरा किया।इस प्रकार नयी सोच को तकनीक का सहारा ले कर सभी में जोश और आनंद जगाने का यह प्रयास सब को बहुत भाया। इस प्रयास से उन्होंने न केवल छात्रों को प्रेरित किया अपितु स्वयं भी अभ्यास करते हुए अपना वजन कम करने में सफलता हासिल की। वे सभी का भरपूर सहयोग करते हैं,आई टी तथा आई सी टी सम्बंधित छात्रों एवं शिक्षकों की हर समस्या का समाधान करने की कोशिश करते है। कक्षा बारह के लिए उन्होंने विषय सम्बंधित एक ब्लॉग बनाया है जिस का युआरएल है https://learn-code-wIth-fun.blogspot.com/

प्राथमिक विभाग के एक कर्मनिष्ठ,और प्रभावी शिक्षक है जिन के निर्देश का सभी छात्र और अभिभावक अतिशीघ्र पालन करते हैं। छात्रों में वह गणित शिक्षक के रूप में अत्यंत लोकप्रिय हैं। कक्षा पांचवी में Rupee Vs PaIse पाठ के सिद्धांत को समझाने के लिए स्वयं फ़्लैश कार्ड,चार्ट,सिक्के तथा रूपये तैयार किये। बेसिक फार्मूला समझाने के लिए ब्लैक बोर्ड पर चार्ट्स के जरिये कन्वर्शन का अभ्यास हुआ। बाद कक्षा में स्टाल लगाये गए जिन में कुछ छात्र खरीदार बने और कुछ विक्रेता। स्टाल पर सीखे गए सिद्धान्त का प्रयोग कर के छात्रों ने अपने अधिगम को और दृढ़ किया साथ ही एक दूसरे का मूल्यांकन और सुधार भी छात्रों द्वारा हुआ। इस कक्षा के पर्यवेक्षण से निजी तौर पर मुझे बहुत सुखद अनुभव हुआ। इस पाठ के गृह कार्य में अभिभावकों को सम्मिलित किया गया उन्होंने बच्चों को स्वतंत्र रूप से खरीददारी करने की छूट दी जिस से बच्चों ने जोड़ घटाव में कुशलता हासिल की और उनका आत्मविश्वास बढ़ा।

यह मात्र दो मिसाल है जो साबित करती हैं की कोमल बाल ह्रदय और मस्तिष्क पर एक उत्साही,विचारशील और स्नेही शिक्षक कितनी गहरी छाप छोड़ सकता है।मुझे विश्वास है कि ऐसे अनेक शिक्षक अपने देश के कोने कोने मैं चुपचाप अनवरत अपने मिशन में नि:स्वार्थ रूप से संलग्न हैं ,उन सब के प्रति मेरा आभार।

ममता सिंह

प्राचार्य,

के.वि. क्रं. 2, कृभको, सूरत

34

नवाचार द्वारा रूपांतरण

रेखांकन: विकाश कुमार, टीजीटी (कला), के.वि. बकलोह छावनी

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

एक शिक्षक को दुनिया भर में जाना जाता है क्योंकि वह राष्ट्र और बच्चों के चरित्र का निर्माता है। मैं एक सामाजिक विज्ञान शिक्षिका को जानता हूँ जो अपनी शिक्षण के प्रति भक्ति, निष्ठा, प्रतिबद्धता तथा नैतिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। वह बच्चों के प्रति करुणा, प्यार और देखभाल के कारण बहुत ही लोकप्रिय हैं। वह पिछले 23 वर्षों से केंद्रीय विद्यालय संगठन का हिस्सा हैं और वर्तमान समय में केंद्रीय विद्यालय क्रमांक-2 ईटानगर अरुणाचल प्रदेश में अध्यापन कार्य कर रही हैं। वह अपने नवाचार और प्रयोगात्मक शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में लगातार योगदान दे रहीं हैं।

महामारी संक्रमण की स्थिति में ऑनलाइन शिक्षण के दौरान उन्होंने बच्चों की शैक्षणिक गतिविधि और मानसिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर अध्यापन के विभिन्न नए तरीकों को अपनाया।

उनकी ऑनलाइन कक्षाएं सिर्फ सैद्धांतिक व्याख्यान नहीं हैं बल्कि सजीव ,प्रायोगिक और व्यवहारिक हैं जो आनंदायी अधिगम पर बल देती हैं। वे गूगल अर्थ का उपयोग करके विद्यार्थियों को आभासी यात्रायें कराती हैं। विभिन्न भौगोलिक और ऐतिहासिक स्मारकों को प्रदर्शित करने के लिए अन्य एप्स का प्रयोग करती हैं जो विद्यार्थियों को विषयों की अवधारणाओं को अधिक प्रभावी और यथार्थवादी ढंग से समझने में मदद करतें है। भारत सरकार द्वारा सुझाये गये दीक्षा एप्स, उनके शिक्षण में नियमित शामिल हैं। विद्यालय के यूट्यूब चैनेल में उनके द्वारा एन.सी.ई.आर.टी. पाठ्यक्रम पर आधारित मनोरंजक प्रयोगों के साथ 100 से अधिक विडियो अपलोड किये गए हैं। ये विडियो न केवल उनके विद्यालय के लिए लाभदायी रहे अपितु अरुणाचल प्रदेश के अन्य केंद्रीय विद्यालयों में देखे एवं साझा किये गए।

वह विद्यार्थियों को पारंपरिक तरीके से सीखने के बजाये संवादात्मक एवं आभासी तरीके से काम करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। विभिन्न दृश्य श्रव्य प्रश्नोत्तरी, मानचित्र परीक्षण, प्रवाह चार्ट परीक्षण इत्यादि ऑनलाइन शिक्षण के दौरान कक्षा कार्य के लिए अच्छी तरह से उपयुक्त हैं। कक्षा छठवीं से दसवीं तक के विद्यार्थियों के विभिन्न विषयों की की कठिन अवधारणाओं को समझने के लिए पावर पॉइंट प्रस्तुति उपयोग होती है। इस तरह की गतिविधियाँ एवं कार्य न केवल विद्यार्थियों को विषय सामग्री में समृद्ध कर रहें हैं बल्कि उन्हें तनावमुक्त एवं आरामदायक तरीके से आई.सी.टी. को सीखने में मदद भी कर रहें हैं।

उनकी ऑनलाइन कक्षाओं में ऑनलाइन वाद-विवाद, समसामयिक एवं विभिन्न विषयों पर व्याख्यान विद्यार्थियों को उनके विषयों में अद्यतन रखने और उनकी रचनात्मकता के साथ-साथ विश्लेषणात्मक कौशल को भी स्वस्थ परिचर्चा के माध्यम से विकसित करते हैं। उनकी देख-रेख में पर्यावरण के मुद्दे पर एवं राष्ट्रीय एकता पर आभाषी कार्यशालाएं आयोजित की जा रहीं हैं जिसमें छात्र उपस्थित होतें हैं एवं सजीव चर्चा तथा प्रदर्शन करते हैं। ये कार्यशालाएं उन्हें एक नया अनुभव प्रदान करती हैं।

वह विभिन्न मूल्यांकन तकनीकों को विकसित कर चुकी हैं जो कि ऑनलाइन शिक्षण के लिए उपयुक्त हैं। प्रत्येक छात्र की विशिष्टता को ध्यान में रखते हुए उनकी मूल्यांकन तकनीक काफी अलग है। वे उपर्युक्त संवादात्मक वीडियो, प्रदर्शन, प्रश्नोत्तरी इत्यादि का प्रयोग मूल्यांकन उपकरण के रूप में करती हैं। यह विधि विद्यार्थियों को परीक्षा के तनाव से मुक्ति दिलाता है और मूल्यांकन को आनंदायी और फलदायी बनाता है। इन विधियों के लाभ विद्यार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन एवं व्यक्तिगत परिशोधन में परिलक्षित होते हैं।

उनके द्वारा नियमित अध्यापन के अलावा भी विभिन्न परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। उनकी चल रही नवोन्मेषी परियोजनाओं में से एक 'ट्राइब्स ऑफ़ द लैंड ऑफ़ राइजिंग सन'(जनजातियों की उगते सूरज की धरती) में उनके विद्यार्थी अपनी समृद्ध संस्कृति की खोज कर रहें हैं और अरुणाचल प्रदेश की समृद्ध जनजातियों की संस्कृति और विरासत पर विडियो बना रहें हैं। के.वि.सं., सी.बी.एस.ई. और भारत सरकार द्वारा आयोजित अन्य कार्यक्रमों में उनके विद्यार्थी असाधारण रूप से प्रदर्शन कर रहें हैं।

उनके समर्पित प्रयोगात्मक और छात्र हितैषी शिक्षण विद्यार्थियों एवं केन्द्रीय विद्यालय संगठन के कल्याण में लाभदायी रहे। वह न केवल एक आदर्श शिक्षिका हैं बल्कि कोविड महामारी में अपने छात्रों के लिए एक समर्थन प्रणाली और सलाहकार भी हैं।

एस. वी. जोगलेकर
सहायक आयुक्त,
के.वि.सं. तिनसुकिया संभाग

अतुलनीय गुरूजनों के प्रति एक शिष्य के शब्द

35

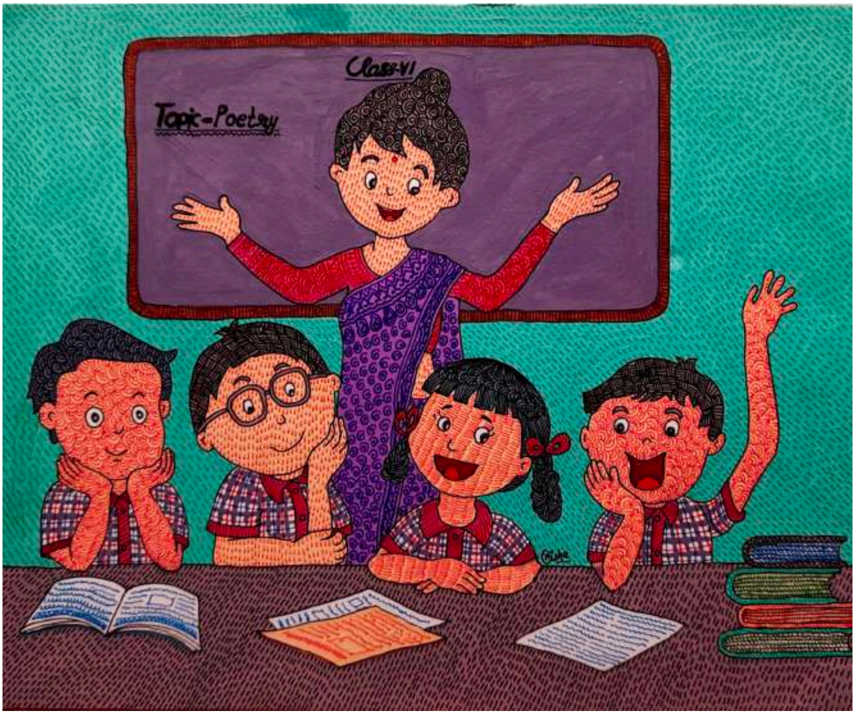

रेखांकन: निशा अग्रवाल, टीजीटी (कला), के.वि. सैनिक विहार

शिक्षण प्रदान करना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। यह एक कला होने के साथ-शिल्प भी है। यह जुनून, विश्वास, दृढ़ता और धीरज का प्रतीक है। चूंकि हर शिक्षक अद्वितीय होता है, अत उन्हें आंकना एक कठिन कार्य है। वह सुकरात जिन्होंने सत्य और निष्ठा को बनाए रखने के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया, कोपरनिकस जिन्होनें खगोलीय पिंडों के बारे में विचारों को बदला, मारिया मोंटेसरी, जिन्होनें अबोध बच्चों की शिक्षा को चिरस्मरणीय किया; स्वामी

विवेकानंद जिन्होनें अध्यात्मवाद के अभ्यास के द्वारा हमारे अन्तर्मन में पूर्णता का एहसास कराकर हमें प्रबुद्ध किया तथा अपनी शिक्षाओं के द्वारा चहुंमुखी विकास करके अग्रसारित किया है... ऐसे अनेकानेक उदाहरणों की भांति एक महान शिक्षक और अमर गुरु भी हो सकते हैं। विश्व में ऐसे अनेक गुमनाम गुरु हैं जिन्होंने बच्चों को ज्ञान और कौशल प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत की है और कर रहे हैं।

यदि मैं गुरुओं की कमियाँ लिखने का प्रयास करूँगा, तो यह मात्र कुछ पृष्ठों में सिमट जाएगा। लेकिन यदि मैं अतुलनीय शिक्षकों की प्रशंसा लिखने का प्रयास करूँगा, तो यह महाकाव्य का रूप ले लेगा। यदि मैं एक शिक्षक की प्रशंसा करता हूं, तो दूसरे शिक्षक इससे आश्चर्यचकित होंगे कि क्या वे इस प्रशंसा के योग्य नहीं हैं। मैंने अपने स्कूल में एक प्राचार्य के रूप में तथा अन्य केवि में पर्यवेक्षण दल के सदस्य अथवा पर्यवेक्षण प्रमुख के रूप में शीर्ष स्तर के शिक्षकों के नेतृत्व में हजारों कक्षाओं को देखा है। लेकिन हमारे बच्चों के लिए उनके सचेत प्रयासों और अद्भुत कार्यों के अनुभवों का वर्णन करने हेतु अनेकानेक वर्ष लगेंगे। निश्चित रूप से कुछ अतुलनीय गुरुओं का वर्णन करना एक अत्यंत कठिन कार्य है। ऐसे कुछ शिक्षकों के बारे में बताना तो आसान है; लेकिन जब लिखने के लिए कहा गया है, तो मुझे नहीं लगता कि मैं एक लेखक के रूप में न्याय कर सकूँगा।

मैं सीखने की चाह रखने वाला एक जिज्ञासु शिष्य हूं, जो सत्य एवं ज्ञान के द्वारा सदैव सीखने को उत्सुक रहता है। भोर के हर विराम के साथ, मैं दुनिया के सर्वोच्च गुरु (प्रभु) से प्रार्थना करता हुआ अपने जीवन के उन गुरुओं को स्मरित करता हूं जिन्होंने जीवन के चरम तक पहुंचने में मेरी मदद की है। मेरे गुरुओं की सूची लंबी है, लेकिन कुछ गुरुओं ने न केवल मुझे प्रभावित और प्रेरित ही किया, अपितु वे मेरे जीवन का एक अविभाज्य प्रतीक भी बन गए। मैं जब भी नए शिक्षकों को याद करके पुराने शिक्षकों को विस्मरित करना चाहता हूँ, तो मैं उसमें पूरी तरह से विफल हो जाता हूं क्योंकि मेरे ऊपर उनकी अमिट छाप हैं। मैं उन सभी के बारे में बताने को लालायित हूँ लेकिन मुझसे उनमें से केवल कुछ एक पर ही लिखने को कहा गया है, जिन्होने सुगठित संस्था के.वि.सं. के बच्चों के जीवन को प्रभावित करते हुए प्रबुद्ध किया है। यदि मैंने उनके बारे में कुछ नहीं लिखा तो यह अनुचित होगा। हालांकि उनकी प्रशंसा अथवा उन्हें किसी भी महान पुरस्कार

से सम्मानित नहीं किया गया है,तथापि उनकी प्रशंसा उनके असंभव को भी संभव करने हेतु प्रेरित करेगी जिसमें उनकी अथाह की थाह नापने, अनैतिक पथ पर नहीं चलने देना, तथा उनके शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया नवीनता हेतु प्रेरित करेंगी।

अपने अनुभवों को लिखना शुरू करने से पहले, मुझे यह मान लेना चाहिए कि अंग्रेजी के महान भारतीय लेखकों की तरह न तो मेरे पास उनकी उपस्थिति का वर्णन करने हेतु व्यापक समृद्ध शब्दावली है और न ही मैं उनकी मनोदशा और व्यवहार का वर्णन करने हेतु एक महान मनोवैज्ञानिक ही हूं। निःसंदेह, मैं एक उत्साही शिष्य हूं जो चीजों को घटित होते हुए देखकर उन्हें तत्परता से सीखता है और जो आनंद के साथ घटनाओं को ध्यान से सुनता और देखता है। मैं यह नहीं समझ पाता कि क्या वातावरण बहुत नीरस और बोरियत वाला है, अथवा मैं यह समझने में असफल हूँ कि कक्षा अनुशासन में है और वहाँ विधार्थियों की अभिव्यक्ति पर अंकुश लगाया जाता है। मैं तब सीखता हूं जब मैं कक्षा के अंदर खुशी और आनंद का अनुभव करता हूं। एक शिक्षक का मुस्कुराता हुआ चेहरा मुझे मंत्रमुग्ध करता है, लेकिन मैं उस कक्षा में ऐसा महसूस नहीं करता, जहां हर विद्यार्थी उदास बैठा है। एक चीनी कहावत के अनुसार: "बिना मुस्कुराते चेहरे वाले व्यक्ति को दुकान नहीं खोलनी चाहिए"। एक शिक्षकको मुस्कुराते हुए, बिना किसी अवरोध या भय के पढ़ाते हुए देखकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता होती है। इस महान संस्था के लिए एक निडर शिक्षक एक संपत्ति है। मैंने अनेक बार देखा है कि कुछ शिक्षक कक्षा में विधार्थियों को देने के लिए बहुत कुछ अपने साथ लेकर आते हैं, जिससे वे सीखने की प्रक्रिया को सरल और सुगम बनाते हैं। मेरा तात्पर्य यह है कि वे अपनी कक्षाओं को जीवंत और खुशनुमा बनाने हेतु सहायक शिक्षण सामग्री लेकर जाते हैं।

एक बार मुझे असम के एक केवि में छठी कक्षा को पढ़ाने का अवसर मिला। मैंने कक्षा में मुस्कुराते हुए प्रवेश किया और मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कक्षा खुश होते हुए मेरे अभिवादन करने के लिए खड़ी हो गई। मैं कक्षा के इस असीम आनंद के रहस्य को समझ नहीं पाया। मैंने बच्चों से बैठने को कहा। शिक्षक ने कहानी सुनाकर पढ़ाना शुरू किया। तभी अचानक, मैंने एक जिज्ञासु बच्चे की तरह शिक्षक को बीच में रोका और उन छोटे बच्चों से कुछ प्रश्न पूछे। मेरे जैसे जिज्ञासु बच्चे के कारण उस दिन कहानी समाप्त नहीं हो सकी थी, क्यूंकि मेरे पास प्रश्नों की भरमार थी।

हालांकि प्रश्न आसान थे, लेकिन उनके उत्तर उतने ही मुश्किल थे। तब उन छोटे बच्चों ने मुझसे कहा कि मेरे जैसे प्रश्न पहले किसी ने नहीं पूछे थे। सीखने की इसी प्रक्रिया में जिज्ञासा बढ़ाने के लिए मैंने बच्चों को कहा कि वे मुझसे कुछ विलक्षण प्रश्न पूछें। तभी एकाएक मेरे ऊपर चारों तरफ से सवालों की बारिश होने लगी और मैं एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका जिससे मुझे बहुत निराशा हुई। मुझे लगता है कि इस बात ने आपको भी हैरान कर दिया होगा क्योंकि वे प्रश्न न केवल असामान्य थे बल्कि भिन्न प्रकार के थे।

उस दिन मुझे एहसास हुआ कि उन छोटे बच्चों ने मुझे बहुत अच्छा सबक सिखाया है। कुछ प्रश्न सुनने के बाद, मैंने उन्हें रुकने के लिए कहा। उनके सवालों ने मेरे दिमाग को हिला दिया था। शिक्षक भी मेरी बेबसी से आनंदित थे। जाहिर है, यदि बच्चों को उनकी बुद्धि के अनुरूप कार्य करने दिया जाएं तो वे ज्ञान और बुद्धिमता के प्रतीक होते है। मैं बच्चों के द्वारा पूछे गए कुछ प्रश्नों को आपसे साझा करना चाहता हूं:

क) अमेजन वर्षावन में कितने पौधे हैं? ख) मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं मरने के बाद स्वर्ग में जाऊंगा या नर्क में ? ग) अगर रात भर में पूरे ग्रह पानी में डूब गए तो हम क्या करेंगे? घ) हम अपने मस्तिष्क से भी तेज कैसे पढ़ सकते हैं? ड) विश्व में कितनी चींटियाँ हैं?

मुझे लगता है कि उन्होंने सात से आठ मिनट के अंदर मुझसे बत्तीस सवाल पूछे थे। वे छठी कक्षा के विधार्थी थे। मैंने उनके कुछ सवालों के जवाब देने की कोशिश की लेकिन ज्यादातर सवाल अनुतरित्त रह गए थे। मैंने शिक्षक से उन विधार्थियों की ऐसी जिज्ञासा के रहस्य के बारे में पूछा। मैं पूरी तरह से अचंभित था जब विधार्थियों ने बताया कि उनसे कहा गया था कि मैं बहुत से विलक्षण प्रश्न पूछूंगा और उन्हें उत्तरों के साथ तैयार रहने की आवश्यकता है। यदि मैं सच कहूँ तो, उस दिन मैं उन विधार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देने में असफल रहा क्योंकि शिक्षक ने उन्हें कक्षा में प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया था।

शिक्षक जिस कहानी को उस दिन सुना रहे थे वह समाप्त नहीं हो सकी थी, लेकिन कहानी के द्वारा यादों को स्मारित करके जीवन में अनुभवों से सीखे एक ओर अध्याय को जोड़ा गया। अपने

विस्मयकारी प्रश्नों को सबके समक्ष प्रस्तुत करने का यह मेरा अनुभव था जिसने मुझे लंबे समय तक के लिए असहज छोड़ दिया था। मुझे हमेशा आश्चर्य होता था कि कुछ शिक्षक कक्षा के दौरान प्रश्न पूछने के लिए विधार्थियों को हतोत्साहित क्यों करते हैं। मैंने उत्साहित होकर कृतज्ञता और अकथनीय संतोष के साथ कक्षा में लगभग एक घंटा बिताया। हालाँकि मैं मुस्कुराते हुए स्कूल से बाहर आया तथापि मुझे एहसास हुआ कि पढ़ाने और संबोधन करने के लिए मुझे और अधिक सीखना है। मैं उस रात इसलिए न सो नहीं सका था कि मैं उनके सवालों के उत्तर नहीं दे सका था बल्कि इसलिए कि उनके सवालों ने उत्तर जानने की जिज्ञासा को भी मैंने शांत कर दिया था।

प्रशिक्षण के दौरान शिक्षकों से अजीब से प्रश्न पूछना, विडियो कॉन्फ्रेंसिंग के समय प्राचार्यों से प्रश्न करना, और निरीक्षण के दौरान विधार्थियों से दोगुने प्रश्न करना मेरी आदत में शामिल हो गए थे क्योंकि उनके अनुत्तरित उत्तर मुझे सोने नहीं देते थे। हालाँकि मैं यह भी जानता था कि 21वीं सदी के निर्विवाद खोज इंजन गुरु, गूगल भी उत्तर देने में विफल रहेगा, लेकिन तब भी मैंने अपनी पूरी निराशा के साथ खोज की। मैं उस शिक्षक को वंदन करता हूँ जिसने विधार्थियों में जिज्ञासा का बीज बोया और मैं उन विधार्थियों के लिए भी हर्षित होता हूँ जिन्होने मुझे उस दिन एक सबक सिखाया था।

इसी प्रकार मेरे अटूट विचार ने एक अलग मोड़ लिया जब मैं कक्षा 12 वीं के विधार्थियों की एक अन्य कक्षा में गया। वे पश्चिम बंगाल राज्य के एक के.वि. के युवा और परिपक्व विधार्थी थे। मैं जानता था कि लगभग सभी शिक्षक और विधार्थी पर्यवेक्षक के साथ शैक्षणिक वार्तालाप के लिए तैयार थे। जब कोई नया चेहरा पर्यवेक्षक के रूप में कक्षा में प्रवेश करता है, तो विधार्थी कक्षा में आँखों ही आँखों में आपस में एक दूसरे से बातचीत कर लेते हैं और एक-दूसरे से बहुत कुछ कह जाते हैं।

मैं विधार्थियों के समक्ष प्रश्नों की झड़ी लगा देना चाहता था ताकि वे अपने शिक्षक की बात सुनने के बजाय मुझे प्रश्नों के उत्तर दें। अंतत: मैं कक्षा में सबसे पीछे बैठ गया। मेरे इस अप्रत्याशित व्यवहार से विधार्थी दंग रह गए। लेकिन कक्षा एवं शिक्षक भी अद्वितीय थे। मेरे प्रश्न सरल होने के साथ पेचीदे थे। विधार्थी उत्तर देने में सफल रहे, क्योंकि वे इस तरह के कौशल से परिचित थे।

विज्ञान की कक्षा 12 वीं में पढ़ाए जाने वाले सभी विषयों में से कुछ प्रश्न विद्यार्थियों से पूछे गए थे। आश्चर्यजनक रूप से विद्यार्थियों ने उन सभी प्रश्नों का उत्तर संतोषजनक दिया जिससे मैं अचंभित रहा था क्योंकि अन्य कई केवि के विद्यार्थी उत्तर देने में असफल रहे थे। लगभग बीस मिनट तक उनके साथ बातचीत करने के बाद, मैंने शिक्षक से कक्षा में पढ़ाने के लिए कहा। शिक्षक भी पूरी तरह से हैरान हो गया तथा उसने तकनीक का प्रयोग करके शिक्षण किया।

यह कविता की कक्षा थी। शिक्षक द्वारा कविता पढ़ाने के आनंद का गहरा अनुभव विद्यार्थियों के साथ बातचीत करके मुझे प्राप्त हुआ। शिक्षक ने प्रौद्योगिकी के लिए एक अद्भुत पीपीटी तैयार करके प्रभावी ढंग से शिक्षण किया तथा विद्यार्थियों को सोचने और प्रतिक्रिया करने हेतु सशक्त बनाने के लिए प्रश्न पूछे गए। विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्न सरल और आसान थे। न कि उस कक्षा के मनमर्जी के प्रश्नों की भांति थे, जिनका उल्लेख मैंने पहले किया है। वास्तव में कक्षा अद्भुत थी क्योंकि भौतिकी के प्रश्न का उत्तर उस विद्यार्थी द्वारा दिया गया था जिसके परीक्षा में सबसे कम अंक थे और रसायन विज्ञान के प्रश्नों का उत्तर उस लड़की ने दिया था जिसकी रुचि का विषय अंग्रेजी था। जीव विज्ञान के प्रश्नों का उत्तर उस विद्यार्थी ने दिया, जिसने विकल्प के रूप में कंप्यूटर विज्ञान को चुना था। आप सोच रहे होंगे कि प्रश्न पाठ्यपुस्तकों एवं पाठ्यक्रम से हटकर के थे। जी हाँ, आप बिलकुल सही हैं !

आपको यह बताना भी बहुत दिलचस्प है कि जब मेरे एक साथी शिक्षक अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख सके और मुझसे मेरे विषय के बारे में पूछने लगे, तब मैंने उन्हें बताया कि मेरा विषय अंग्रेजी है। एक प्राचार्य के रूप में हमें सभी विषयों की मूलभूत अवधारणाओं से अवगत रहना चाहिए। मैं उन्हें केवल यह बताना चाहता था कि कक्षा संचालन के दौरान अंत:विषय दृष्टिकोण को कैसे अपनाया जा सकता है। शिक्षक ने कक्षा के अंत में एक विद्यार्थी से मेरे बारे में कुछ शब्द बोलने को कहा। मैंने कुछ नहीं बोला, चूंकि मैं यह जानता था कि वो मेरी प्रशंसा करेगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ, उसकी बात बिल्कुल अलग थी। उसने मेरे बारे में एक शब्द भी नहीं बोला बल्कि अपने उस शिक्षक के बारे में तीन मिनट का भाषण दिया, जिसकी कक्षा में मैं गया था। वह विद्यार्थी आत्मविश्वासी और स्पष्टवादी था। मैंने बड़े आश्चर्य से उससे पूछा, "क्या आप वास्तव में अपने शिक्षक को पसंद करते हैं, या आप केवल बोलने के लिए बोल रहे हैं।" इस पर पूरी कक्षा उससे

सहमत थी। मैंने शिक्षक को सलाम करते हुए आभार व्यक्त किया। लेकिन सबसे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि कक्षा की एक अन्य छात्रा ने उस शिक्षक के बारे में 300 से अधिक शब्दों में एक पत्र लिखकर प्रस्तुत किया जो उसने कक्षा में बातचीत और चर्चा के दौरान ही लिखा था।

विधार्थी द्वारा पत्र की कुछ पंक्तियाँ शिक्षक के प्रति प्रेम को व्यक्त करते हुए इस प्रकार लिखी गई है"वह मुस्कुराते हुए हिटलर की तरह आते है लेकिन यह सिखाते है कि किताब में क्या लिखा है और क्या नहीं लिखा है, प्रश्नों की बौछार करते है, चुटकुले सुनाते है,चार्ली चैपलिन की तरह कक्षा को रंगमंच के मंच की तरह बनाते है, एक दोस्त की तरह व्यवहार कराते है, एक सच्चे परीक्षक की तरह मूल्यांकन कराते है, तथा विशेष रूप से अपने परिचय में कक्षा को हर रोज आश्चर्यचकित बनाते है। वे एक महान वक्ता की तरह बोलते हैं एवं एक माँ की तरह पालन-पोषण करते हैं। वह पहले दिन पुस्तक की अंतिम कविता को पढ़ाते हैं और ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो हमारे जीवन, रोजमर्रा की सीख से उत्तर खोजने में मदद करते हैं। वह एक सच्चे शिक्षक के प्रतीक हैं जिन्हें एक महान गुरु कहा जा सकता है।"

पत्र पढ़कर मैं अवाक रह गया,तथा ऐसे गुरु और विधार्थियों को प्रणाम करते हुए मैं कक्षा से बाहर निकल गया! मैं अभी भी 0अपने जीवन में ऐसी कक्षाओं और शिक्षकों की तलाश में हूं और यदि पुन: मौका मिला तो फिर साझा करूंगा!

बि.के. बेहेरा
उपायुक्त (शै.)
के.वि.सं. मुख्यालय

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016

www.kvsangathan.nic.in

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ